मैं हूं सोना



मनोरमा जफ़ा

नेहरू बाल पुस्तकालय

मैं हूं सोना

मनोरमा जफ़ा

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

आवरण : *पपीहा*

ISBN 978-81-237-5215-0

पहला संस्करण : 2008 *(शक 1929)*

Main Hun Sona *(Hindi)*

रु. 25.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
ए-5 ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-110 016 द्वारा प्रकाशित

1

''सोना, सोना।''

जैसे ही मैंने आदि की आवाज सुनी, मैं बाहर भागी, टूटी हुई दीवार फलांग कर, दूसरी तरफ उसके बाग में कूद गई। आदि अमरूद के पेड़ पर बैठा अमरूद खा रहा था।

"क्यों बुलाया मुझे?"

"अमरूद खाओगी?"

मैंने अपना फ्रॉक आगे कर दिया और उसने एक अमरूद नीचे फेंक दिया। मैंने अमरूद खाया, बड़ा मीठा था।

छह दिन के बाद आदि का जन्मदिन था। वह आठ साल का होगा। मेरा भी जन्मदिन एक महीने बाद था, मैं भी आठ साल की हो जाऊंगी। उसके यहां जन्मदिन की पार्टी थी। मेरी अम्मू ने आदि के लिये किताब खरीदी और रंगीन कागज में बांध दी। छह दिन फटाफट बीत गये।

तीसरे पहर के चार बजे थे। पांच बजे आदि के घर पार्टी थी। मैंने लाल फ्रॉक पहना, उसमें बाईं तरफ एक सफेद गुलाब का फूल टंका था, अम्मू ने सिली थी। मैंने सफेद मोजे पहने, सफेद जूते पहने और शीशे की मेज के सामने खड़ी हो गई। मैंने अपने चेहरे पर ढेर सारा पाउडर पोत डाला और अम्मू की लिपस्टिक ओंठो पर लगा ली। इतने में अम्मू आ गईं और मेरा चेहरा देखकर बोलीं,

"सोना तुम भी एक ही हो। सब्र नहीं है।"

अम्मू ने रूमाल से मेरा पाउडर पोंछा और रुई से लिपस्टिक। पर जैसे ही अम्मू दो मिनट के लिये कमरे के बाहर फिर से गईं मैंने उनका

परफ्यूम उठाया, अपनी फ्रॉक पर, अपने हाथों पर, और यहां-वहां खूब सारा लगा डाला। खुशबू सूंघकर अम्मू फिर आ गई। इस बार उन्होंने डांटा नहीं, मुस्करा दी।

मैंने आदि का गिफ्ट उठाया और उसके जन्मदिन की पार्टी में चली गई। आदि बाहर खड़ा था। वह बड़े ठाठ से काला कोट, काली धारीदार पतलून पहने था। सफेद कमीज पर लाल टाई बांधे बड़ा स्मार्ट लग रहा था। उसने मेरे हाथ से गिफ्ट ले लिया। 'धन्यवाद' कहकर दूसरे मित्रों से गिफ्ट लेने लगा।

आदि की मम्मी ने ताली बजाई। मेज पर केक रखा। हम सब बच्चे मेज के चारों तरफ खड़े हो गये। आदि ने केक काटा, हम सबने 'हैप्पी बर्थ डे' गाया और खाने के लिये चले गये। मेज पर खाने की चीजों की बहार थी। मिठाई, बिस्कुट, पकौड़े, बर्फी, लड्डू, न जाने क्या-क्या था। हम सबने जी भरकर खाया। पार्टी के बाद आदि की मम्मी हम सबको बाग में ले गईं और उन्होंने तरह-तरह के खेल खिलवाये। बाद में उन्होंने कहा, "अब तुम लोग अपने आप खेल खेलो," कहकर वह अंदर चली गईं।

हम सब लुका-छिपी खेलने लगे। जब हम सब पेड़ों के पीछे खड़े थे, आदि की आवाज सुनाई दी, "दोस्तों, जल्दी आओ, मैं तुम सबको एक मजेदार खेल दिखाता हूं।"

हम सब आदि के चारों तरफ घेरा बनाकर खड़े हो गये। आदि बीच में था। उसने अपने पतलून की जिप खोली, अपनी लिंग बाहर निकाली और पेशाब करते-करते उसने एक चक्कर लगाया।

"देखो मिट्टी में एक घेरा बना है न?"

सचमुच मिट्टी में एक घेरा बना था। आदि बोला, "देखो मैं त्रिकोण भी बना सकता हूं, बस मुझे फिर से पेशाब लगने तक इंतजार करना पड़ेगा," और वह खिलखिला कर हंस दिया।

आदि मेरी तरफ मुड़ा और उसने मुझसे पूछा,

"सोना! क्या तुम भी मेरी तरह घेरा बना सकती हो?"

मैं चुप रही। पर वह बोलता गया, "लड़कियां कुछ भी नहीं बना सकतीं।"

मैं खिसिया गई। तभी उसकी मां की आवाज आई, "अब घर जाने का समय हो गया।"

हम सब ड्राइंगरूम में आ गये। सबके माता-पिता वहां बच्चों को घर ले जाने के लिये खड़े थे। अम्मू भी थीं। आदि की मां ने सब बच्चों को एक-एक रंगीन पेंसिल का डिब्बा दिया, हम घर आ गये।

आदि का पेशाब करके घेरा बनाना मुझे परेशान किये था। मैंने अम्मू को सब कुछ बताकर पूछा, "अम्मू क्या लड़कियां आदि की तरह घेरा नहीं बना सकतीं?"

"सोना बेटी, लड़कियों की नूनू लड़कों की नूनू की तरह नहीं होती। लड़के की नूनू लंबे आकार की होती है और जब उसे पेशाब लगती है तो नूनू में सख्ती आ जाती है और उसी में से लड़कों का मूत्र निकलता है। लड़कियों के मूत्र निकलने के लिये एक अलग नन्हा-सा छेद होता है। मूत्र-छेद के नीचे एक और छेद होता है, उसमें से शिशु का जन्म होता है। लड़कियां जब बड़ी हो जाती हैं, औरत बन जाती हैं; केवल वे ही बच्चों को जन्म दे सकती हैं, लड़के बच्चों को जन्म नहीं दे सकते।"

अम्मू ने मुझे प्यार किया और बोलीं, "बाप-रे-बाप, इतनी देर हो गई। मुझे कल जल्दी उठना है। सोना जल्दी सो जाओ। गुड नाइट।"

मैं कहां मानने वाली, मैंने पूछा—"लेकिन अम्मू, पेट में बच्चा कैसे बनता है?"

"बड़ी देर हो गई है और तुम्हें भी कल स्कूल जाना है," कहकर अम्मू करवट बदलकर सो गईं।

एक दिन मैंने अपनी नौकरानी से भी पूछा कि बच्चा कैसे बनता है?

मेरा प्रश्न सुनते ही वह भड़क उठी, "बिटिया यह बच्चों की बात नहीं है। कभी किसी से भी यह मत पूछना," उसने दोनों हथेलियों के बीच तंबाकू रखी, उसमें चूना मिलाकर मला और मुंह खोलकर झट से फक्की लगा ली। मुझे बड़ा गुस्सा आया और मैं चुपचाप वहां से चली गई।

"बच्चा कैसे बनता है?" यह प्रश्न मुझे सताता रहा। स्कूल में इंटरवल होने पर मैंने अपनी सहेली मीना से पूछा। उसे मुझसे थोड़ा ज्यादा पता था, बोली, "मम्मी-पापा दोनों मिलकर बेबी बनाते हैं।"

"पर कैसे?"

"यह मुझे नहीं पता," वह भी मेरी तरह ही थी।

एक दिन हम सब स्कूल की तरफ़ से ज़ू देखने गये। मीना और मैं बंदर के कटघरे के पास खड़े हो गये।

"देखो सोना, उस कोने में वह दोनों बंदर क्या कर रहे हैं?" बड़ा अजीब था एक बंदर दूसरे बंदर की पीठ पर दो पैर रखकर जाने क्या कर रहा था कि तभी टीचरजी की पुकारने की अवाज आ गई, "लौटने का समय हो गया है, सब लड़कियां फाटक के पास, बरगद के पेड़ के नीचे फौरन जमा हो जाओ। बसें इंतजार कर रही हैं।"

मीना और मैं दौड़कर बस पर चढ़ गये और खिड़की के पास वाली सीट पर बैठ गये। बस ने हमें स्कूल में छोड़ दिया और हम सब अपने-अपने घर चले गये।

मेरी अम्मू डॉक्टर हैं और एक अस्पताल में काम करती हैं। बहुत साल पहले जब मैं छोटी थी, मेरे पापा स्वर्गवासी हो गये थे। शाम को जब मैं अम्मू के साथ टी.वी. देख रही थी, मैंने उनसे पूछा, "अम्मू! क्या आपने और पापा ने मिलकर मुझे बनाया है?"

"हां।"

"लेकिन अम्मू बच्चा कैसे बनता है?"

"जब तुम 13 साल की हो जाओगी, तब मैं तुम्हें बताऊंगी।"

मुझे अम्मू की बात बिल्कुल अच्छी नहीं लगी। मैंने अम्मू के हाथ से टी.वी. का रिमोट झपट लिया और टी.वी. की आवाज खूब तेज कर दी। अम्मू को गुस्सा चढ़ गया। उन्होंने मेरे हाथ से रिमोट ले लिया और टी.वी. बंद कर दिया। मुझसे कहा, "सोना, फौरन सोने जाओ।"

मैं मम्मी के बिस्तर पर उन्हीं के साथ लेट गई और मुझे जाने कब नींद आ गई।

2

मैं अब बारह साल की हो गई थी। मैं लड़कियों के स्कूल में पढ़ती थी पर मेरे स्कूल के पास एक स्कूल लड़कों का था। जब भी लड़कियां स्कूल बस से नीचे उतरतीं, हरदम लड़के हमें ताका करते। मुझे और हमारी दोस्तों को भी उनको ताकने में मजा आता था। जब कभी मैं एक खास लड़के को देखती मुझे बड़ा अच्छा लगता था। अपनी तरफ उसका ध्यान लाने के लिये मैं जानकर खिलखिलाकर जोर से हंसती।

एक दिन स्कूल के बाद जब मैं गेट के बाहर खड़ी थी, वही लड़का मुझे ताकने लगा। मेरी दोस्त गुल ने मुझे चिकोटी काटी। मुझे बड़ा अजीब-सा लगा। "चलो बस आ गई।" मैं दौड़कर बस पर बैठ गई।

अगले दिन, क्लास में गुल मेरे बराबर बैठ गई। गुल बड़ी बातूनी थी और उसको दुनिया जहान की बातें पता थीं। उसके पास हर सवाल का जवाब था। इंटरवल में मैंने उससे पूछा, "गुल, बता बच्चा कैसे बनता है?"

"भगवान ने हम सबको बनाया है।"

"लेकिन भगवानजी तुमको और हमको बच्चा क्यों नहीं देते? गुल, यह बात पता लगानी चाहिये।" मैंने कहा।

"हां जरूर।"

एक दिन गुल ने धीरे से मेरे कान में कहा, "सोना, मुझे सब पता लग गया, इंटरवल में तुम्हें बताऊंगी।"

जाने कैसे चार क्लास खत्म हुए। मैं बड़ी उत्सुकता से इंटरवल का इंतजार कर रही थी। इंटरवल होते ही अपना-अपना खाने का डिब्बा

लेकर गुल और मैं खेल के मैदान में भाग गये और एक बैंच पर बैठ गये।

"गुल! तुम्हें क्या पता लगा?"

"मेरे डैडी ने मुझे मम्मी को दिया। तुम्हें मालूम है बच्चा होने के लिए लड़की को शादी करनी जरूरी होती है।"

"बुद्धू कहीं की। तुमने यह तो बताया नहीं कि औरत के पेट में बच्चा कैसे आता है?" मैंने उससे सीधा सवाल पूछा।

"यह बात तो ठीक है। इस बात का भी पता लगाऊंगी।"

कई दिन बीत गये।

एक दिन गुल और मैं अपने क्लास के सामने वाले बरामदे में बातें कर रहे थे। पास ही खंभे के पीछे हमारे स्कूल की दो टीचरें, मिस बेला और मिस स्मार्ट खड़ी-खड़ी बातें कर रही थीं, उन दोनों ने हमें नहीं देखा। मिस स्मार्ट गुस्से में बोलीं, "बेला, जरा देखो तो इन लड़कियों की बातें। क्लास छोड़-छोड़कर लड़कों के साथ सिनेमा देँखने जाती हैं। तुम्हें मालूम है, मीनू एक लड़के के साथ टॉयलेट में पाई गई? कौन जाने कुछ लड़कियां सेक्स (यौन क्रिया) में भी पड़ गई हों। हम लोगों को कुछ करना पड़ेगा।"

"क्या?" मिस बेला ने हम दोनों को देख लिया, "देखो यहां लड़कियां हैं। हम लोग यह बातें किसी दूसरे वक्त करेंगे," और वे दोनों टीचरें आगे चल दीं।

गुल और मैं लाइब्रेरी में गये और वहां से एक अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश ले आये। 'सेक्स' शब्द मेरे दिमाग में घूम रहा था। पन्ने पलटे, 'सेक्स' शब्द ढूंढ़ निकाला। 'सेक्स' के अर्थ यों लिखे थे।

सेक्स—लिंग, स्त्री पुरुष भेद्।

"रद्दी शब्दकोश।" मैंने शब्दकोश पटककर बंद कर दिया।

गुल ने मेरे हाथ से शब्दकोश लेकर जहां वह पहले रखा था, वहीं रख दिया।

शाम को जब अम्मू अस्पताल से लौटी, तो मैंने उनको पकड़ा, "अम्मू 'सेक्स' क्या होता है?"

अम्मू ने घुमा-फिराकर कुछ वैसा ही बताया जैसा कि शब्दकोश में लिखा था। मेरी समझ में कुछ भी नहीं आया। अगले दिन मैंने गुल से फिर से बात की। पास ही में हमारे क्लास की मॉनीटर गीता खड़ी थी। हम दोनों ने उससे भी पूछा। हम लोगों की तरह उसे भी कुछ नहीं मालूम था। हमें बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोली, "मिस बेला से पूछूंगी। वह बहुत अच्छी हैं।"

उसी दिन दोपहर में मिस बेला जब अकेली बैठी कॉपियां जांच रही थी, गीता दबे पांव उनके पास गई। गीता को खड़ा देखकर मिस बेला ने पूछा, "गीता! कुछ कहना चाहती हो?"

गीता ने उनसे पूछ लिया। मिस बेला ने अपनी कॉपियां समेटकर एक तरफ रख दीं और गीता से कहा, "जाओ अपने लिये कुर्सी ले आओ।"

"मैडम, सोना और गुल को भी बुला लूं?"

"जरूर।"

गीता, हम लोगों को भी बुलाकर ले गई। हम भी मिस बेला के पास कुर्सी डालकर बैठ गये। मिस बेला ने पूछा "यह बताओ तुम सबको मासिक धर्म (महीने से) होने लगा है?"

गुल ने कहा, "हां।"

उन्होंने गीता की तरफ देखकर पूछा और गीता ने भी कहा, "हां मैडम।"

मिस बेला ने मेरी तरफ देखा। मैंने भी बिना बोले 'हां' के लिये सिर हिला दिया।

मिस बेला मुस्कराकर बोली, "तो आप सबकी भविष्य में औरत बनने की तैयारी हो गई है न?"

मुझे मन-ही-मन बड़ी शर्म आई।

मिस बेला ने तोते की तरह कहना शुरू कर दिया, "पुरुष और स्त्री में लिंग भेद होता है। पुरुष का लिंग-आकार स्त्री के लिंग-आकार से अलग होता है। यह लिंग भेद ही प्रजनन, बच्चा पैदा होने का कारण है। यह तो तुमको मालूम ही है कि केवल औरत ही बच्चा पैदा कर सकती है, पुरुष नहीं कर सकता। स्त्री के पेट के अंदर एक भाग होता है, इसे बच्चेदानी कहते हैं। इसी बच्चेदानी में नन्हे-नन्हे (जीवाणु) कोशाणु बनते हैं और वही बढ़कर शिशु बन जाते हैं। स्त्री की बच्चेदानी में इन नन्हे कोशाणु को पूरी तरह से शिशु बनने में करीब नौ महीने लग जाते है और फिर शिशु का जन्म होता है। संसार में हम सबका जन्म इसी तरह से हुआ है।"

"पर मैडम, पेट में बच्चा बनने की शुरुआत कैसे होती है?" गुल ने पूछा।

"यह भी बताती हूं। तुम सबने अभी-अभी कहा कि तुम सबको मासिक धर्म होने लगा है। जब लड़की की आयु 11 या 12 वर्ष के लगभग होती है उसकी योनि से हर महीने तीन, चार या पांच दिन कुछ रक्त बाहर निकलने लगता है इसी को 'मासिक धर्म' कहते हैं या 'महीने से हुई' भी कहते हैं।

"अगर तुम अपने आप अपनी जनन संबंधी योनि को देखना चाहती हो तो चारपाई पर सीधे लेट जाओ। एक मुंह देखने वाला शीशा लो और अपने दोनों पैर अलग करके शीशे में अपने अंगों का अक्स देखो। सबसे ऊपर तुम्हें छोटे-छोटे बाल दिखाई देंगे। जरा शीशा नीचे लाओ तो तुम देखोगी कि नीचे मांस के दो पल्ले हैं और उन दोनों के बीच पतली-सी जगह है इनको बाहरी ओंठ भी कहते हैं। इन दोनों पल्लों को उंगली से जरा अलग करके देखो, इनके बीच में दो और मांस के नाजुक पल्ले होते हैं। इन दो पल्लों के नीचे शरीर के बहुत कोमल अंग होते हैं और ये दो पल्ले उनकी रक्षा के लिये होते हैं। अब अंदर के दोनों पल्लों को खोलो तो तुम देखोगी कि अंदर तीन अत्यंत महत्वपूर्ण

छोटे-छोटे अंग हैं। सबसे ऊपर एक बटन की तरह उठा हुआ अंग है, इसको अंग्रेजी में 'क्लायटोरस' कहते हैं। इसमें कोई छेद नहीं होता। क्लायटोरस के नीचे एक छोटा छेद है। इसी छेद में से मूत्र निकलता है और इस मूत्र निकलने वाले छेद के नीचे एक और जरा बड़ा छेद 'योनि' है, इसी योनि से ही बच्चा संसार में आता है। वयस्क आयु में पहुंचने पर लड़कियों के मासिक धर्म का रक्त इसी छेद या योनि से बाहर निकलता है। योनि, स्त्री की बच्चेदानी से जुड़ी होती है। शिशु इस बच्चेदानी में बनता व बड़ा होता है और जन्म के समय इस नली (जिसे अंग्रेजी में वैजाइनल पैसेज कहते हैं) का रास्ता पार करके योनि के छेद से बाहर संसार में आता है।"

मिस बेला एक क्षण रुककर बोली, "स्त्रियों के मूत्र निकलने का छेद अलग होता है। परंतु पुरुष के लिंग से मूत्र भी निकलता है और उसके लिंग का एक और भी प्रकार्य या अंग्रेजी में फंक्शन होता है।"

"मैडम, यह प्रकार्य या अंग्रेजी का फंकशन क्या होता है?" मैंने पूछा।

मिस बेला गंभीर हो गईं। उन्होंने एक वाक्य में कह दिया।

"पुरुष-लिंग का दूसरा प्रकार्य स्त्री को गर्भवती बनाना है।"

"वह कैसे?" मुझसे रहा नहीं गया।

"जरा सबर रखो सोना!" फिर उन्होंने थोड़ा रुककर कहा, शादी के बाद, एक बड़ी लड़की और बड़ा लड़का साथ-साथ रहते हैं। दोनों की शारीरिक नजदीकी भी बढ़ जाती है। इनके शरीर की सबसे अधिक नजदीकी क्रिया, 'काम' अथवा 'सेक्स' से जुड़ी होती है। इस क्रिया को हिंदी में 'मैथुन' कहते है और अंग्रेजी में मैथुन को 'सेक्सुअल इंटरकोर्स' कहते हैं। कामुकता में आये पुरुष का लिंग सख्त हो जाता है और मैथुन के समय वह अपना लिंग स्त्री की योनि में डालता है। इसी क्रिया से उसका वीर्य, एक तरल शुक्र स्त्री की योनि में गिर जाता है। मैथुन के बाद ही पुरुष-कोशाणु स्त्री के शरीर के कोशाणु के संपर्क में आते हैं

और दोनों के कोशाणु मिलकर एक स्त्री के गर्भाशय में नया जीव बनाते हैं, जो आगे चलकर शिशु का रूप ले लेता है।"

मिस बेला ने यह सब हमको कागज पर ड्राइंग बनाकर बताया।

हम सबने मिस बेला की बात बड़े ध्यान से सुनी थी। सब कहने के बाद मिस बेला मुस्कुराईं और बोलीं, "लड़कियों, देखो तो जरा, किस खूबसूरती से प्रकृति ने निरंतर जीवन बनाये रखने का काम किया है। कोई और प्रश्न?"

मैंने चुपके से गुल को चिकोटी काटी।

"यह सब क्या शादी के बाद ही संभव है?" गुल ने पूछा।

"हूं हूं," मिस बेला खांसकर बोलीं, "स्त्री-पुरुष के शरीर की नजदीकी में जो मैथुन या संभोग क्रिया होती है, उसके बाद ही स्त्री को गर्भ रह जाता है। शादी का बंधन कुटुंब बनाने में सहायक होता है इसीलिये समाज ने नियंत्रण रखने के लिये शादी का बंधन बनाया है। यह शादी-बंधन ही मनुष्य को जानवरों से अलग रखता है।"

मिस बेला ने सब कुछ कितने सरल तरीके से समझा दिया। यही रहस्य जानने के लिये ही तो हम इससे-उससे पूछते फिर रहे थे। हम अब संतुष्ट व प्रसन्न थे। गीता ने मिस बेला को धन्यवाद दिया। हमने भी मिस बेला को धन्यवाद दिया और हम सब स्कूल के खेल के मैदान की तरफ चले गये।

एक दिन स्कूल खत्म होने के बाद गुल और मैं गेट के बाहर बस पकड़ने के लिये खड़े थे। गुल की नजर एक गर्भवती स्त्री के बड़े से पेट पर पड़ गई। गुल ने मुझे चिकोटी काटी। मैंने भी उसे देखा। उसका बड़ा-सा पेट था और वह लुढ़कती-पुढ़कती-सी चली। हमें बड़ी हंसी आई। कुछ दिन पहले ही तो मिस बेला ने गर्भ के बारे में बताया था, वह मुझे याद आ गया। ठीक उसी समय हमें बस का हॉर्न सुनाई दिया। गुल और मैं अपनी-अपनी बस पकड़ने के लिए भागे। लड़कियां बस में बैठ गईं और बस चल दी।

एक ही स्कूल में, एक ही क्लास में, इतने दिन साथ पढ़ने से गुल और मेरी पक्की दोस्ती हो गई। हंम दोनों दुनिया भर की हर तरह की बातें भी खुलकर करते थे। अब हम नवीं कक्षा में थे। मैं अभी-अभी चौदह साल की हुई थी।

गर्मी की छुट्टी के बाद जब जुलाई में स्कूल खुला, स्कूल में बड़ी गहमागहमी थी। स्कूल की 'हेडगर्ल' चुनी जाने वाली थी। मिस बेला चुनाव कमेटी की प्रेसिडेंट थी। नवीं और दसवीं क्लास की लड़कियों में से ही हेडगर्ल चुनी जा रही थी। दसवीं क्लास की कोई लड़की चुनाव के लिये नहीं खड़ी हुई, क्योंकि उनको बोर्ड की परीक्षा देनी थी। लेकिन मेरी नवीं कक्षा से चार लड़कियां चुनाव के लिये खड़ी हुईं। इन चारों के नाम टीचर्स ने दिये थे। मिस स्मार्ट ने मेरा नाम रेकमंड किया था।

चुनाव का दिन आ गया। लड़कियों को चुनाव-कमेटी के सामने अपने-अपने विचार प्रस्तुत करने थे। मुझसे पहले तीन लड़कियां

चुनाव-कमेटी के सामने अपने-अपने विचार प्रकट कर चुकी थीं। जब मेरा नाम पुकारा गया, मन में बड़ी घबड़ाहट हुई। मैंने गिलास भरकर पानी पिया और टीचर्स-रूम में चली गई। सबसे पहले मैंने सबको झुककर नमस्ते की। एक टीचर ने पूछा—

"स्कूल की हेडगर्ल का क्या कर्त्तव्य है?"

मैंने पहले से ही तैयारी कर ली थी और आत्मविश्वास से धीरे-धीरे कह डाला। उसके बाद मुझसे और भी प्रश्न पूछे गये। मैंने हर प्रश्न का सोच-समझकर धीरे-धीरे बड़ी नम्रता से उत्तर दे डाला और नमस्ते करके बाहर आ गई। हम चारों लड़कियां कमरे के बाहर रिजल्ट का इंतजार करने के लिये चुपचाप खड़े रहे। मेरे हृदय की धड़कन बढ़ गई, "हाय भगवान कौन चुना जायेगा?" यही विचार हम सबको सताये था।

काफी देर के बाद, हम चारों को कमरे के अंदर फिर बुलाया गया। हम सब नीची निगाह किये एक तरफ लाइन में खड़े हो गये। इतने में हमारे स्कूल की हेडमिस्ट्रेस भी आ गईं। हम सबने नमस्ते करके उनका स्वागत किया। हेडमिस्ट्रेस ने हम चारों की एक-एक करके तारीफ की। फिर मेरी तरफ मुंह करके बोली, "सोना, इस वर्ष हम सबने तुमको अपने स्कूल की हेडगर्ल चुना है। तुमको बहुत-बहुत बधाई।"

सुनकर, मेरा मन कुलाचें भरने लगा, पर मैंने अपने को संभाल लिया, मैं झुकी और मैंने धीरे से कहा, "धन्यवाद।"

हेडमिस्ट्रेस ने पिछले वर्ष की हेडगर्ल मधु को बुलाया और वह आकर मेरे पास खड़ी हो गई। उसने मेरा हाथ पकड़ा, मुस्कराई और बोली, "सोना, तुमको बधाई।"

मैं धीरे से 'धन्यवाद' कहकर खड़ी हो गई।

हेडमिस्ट्रेस ने मेरी तरफ मुड़कर कहा, "सोना पिछले साल की हेडगर्ल मधु तुमको एक प्रपत्र देगी और तुम्हें पढ़कर वचन देना होगा।"

मधु ने मुझे शपथ प्रपत्र दिया और कहा, “पहले तुम इसको पढ़ डालो, फिर तुम्हें इसे जोर से पढ़ना होगा।”

मैंने वह प्रपत्र मन-ही-मन जल्दी-जल्दी तीन बार पढ़ डाला, फिर और सब टीचर्स के सामने सिर झुकाकर पढ़ने लगी,

“आदरणीय प्रधानाध्यापिकाजी, सभी अध्यापिकागण,

मैं आप सबकी आभारी हूं कि आपने इस हेडगर्ल पद के लिये मुझे चुना और मुझे स्कूल की सेवा व सब विद्यार्थियों की सहायता करने का मौका दिया। आज मैं शपथ लेती हूं कि मैं स्कूल हेडगर्ल का कर्त्तव्य पूरी तरह से निभाने का यत्न करूंगी। धन्यवाद।”

पिछले वर्ष की हेडगर्ल मधु ने अपने कोट से बैज खोला। उसे मेरे स्कूल के नीले कोट पर बाईं तरफ सेफ्टीपिन से लगा दिया और बोली, “नई चुनी गई हेडगर्ल सोना! जब तक तुम स्कूल में रहोगी, तुम्हें हेडगर्ल के बैज को हर समय पहनना होगा। यह बैज तुमको स्कूल व अपने स्कूल के विद्यार्थियों के प्रति तुम्हारे कर्त्तव्यपरायणता की याद दिलवाता रहेगा। मेरी ओर से शुभकामना स्वीकार करो।”

जाने वाली हेडगर्ल की बात सुनकर मुझे लगा, जैसे मेरे कंधों पर कर्त्तव्यपरायणता का पूरा बोझ पड़ गया हो और मैं उस बोझ से दब गई। पर तत्क्षण मुझे ऐसा भी लगा कि मैं रानी बन गई। मै दो पग आगे बढ़ी और एक-एक टीचर को बड़ी नम्रता से झुककर नमस्ते करके धन्यवाद दिया। सबने मुस्कराकर मेरे सिर पर हाथ रखकर मुझे आशीर्वाद दिया।

मैंने मन-ही-मन ईश्वर से प्रार्थना की, “हे ईश्वर मुझे बल दीजिये, मैंने जो भी शपथ ली है, मैं उसे पूरा करूं।” उस समय जितने भगवानों के नाम याद आये, सबके सब मैंने मन में याद कर लिये। हां, आखिर में मैंने ‘श्री गणेशाय नमः’ कहा, क्योंकि गणेशजी मेरे सबसे प्यारे हैं और वह विघ्न विनाशक भी हैं और दुख निवारक भी हैं।

मैं रेस में जीत गई। जो तीनों लड़कियां मेरे साथ थीं, उन सबसे

मैंने हाथ मिलाया और नम्रता से कहा, "तुम सब मेरी मित्र हो। आशा करती हूं कि तुम सब हमेशा मेरा साथ दोगी और सदा मदद करोगी।"

जैसे ही मैं कमरे से बरामदे में आई, किसी ने पीछे से मेरे गले में हाथ डाल दिया। मुझे पता था कि वह मेरी परम मित्र गुल ही होगी। गुल जोर से चिल्लाकर लड़कियों से बोली, "देखिये हमारे स्कूल की यह नई हेडगर्ल सोना आपके सामने खड़ी है।" गुल नारे लगाने लगी, "सोना जिंदाबाद, सोना अमर रहे। तालियों से इनका स्वागत करिये।" गुल ने ताली बजानी शुरू कर दी। चारों तरफ खड़ी लड़कियां भी जोर से ताली बजाने लगीं।

मैंने उन सबको धन्यवाद दिया। उसके बाद स्कूल का आखिरी घंटा बजा। मैं स्कूल के बाहर चली गई, वहां देखा, बस खड़ी है। जल्दी से बस में चढ़ गई। ऐसा लगा जैसे बस में बैठी सभी लड़कियां मेरा ही इंतजार कर रही हों। सबने मुस्कराकर मेरा स्वागत किया। जब बस मेरे घर के सामने रुकी, अम्मू गेट पर खड़ी थीं। उनको देखकर मैं बस पर से दो सीढ़ियां छलांग गई और मैंने चिल्लाकर कहा, "अम्मू मैं जीत गई।" उन्होंने आगे बढ़कर मुझे गले लगा लिया, "मैं जानती थी कि तुम ही जीतोगी," और उन्होंने मेरा माथा चूम लिया।

घर में घुसते ही टेलीफोन की घंटी बजने लगी। एक के बाद एक दोस्त का बधाई-टेलीफोन आता रहा। मैं सचमुच सुख सपने की रानी थी।

पूरा हफ्ता हेडगर्ल बनने की खुशी मनाने में बीत गया। मैं अपना पढ़ना-लिखना, किताबें और सब कुछ भूल गई। बस सारे समय यही सोचते बीतता था कि कैसे मैं सर्वोत्तम हेडगर्ल बनकर दिखाऊं। मेरे पास एक नीले रंग की डायरी थी। मैं रोज रात में उस डायरी में दिनभर की अच्छी-बुरी बातें नोट करती थी। साथ-साथ किताबों में से अच्छे-अच्छे वाक्य भी नोट करती थी।

मैंने डायरी का पहला पन्ना खोला, उसमें लिखा था—

सदा याद रखो

दयावान रहो
मित्रता का व्यवहार और दूसरे को समझो
सहायता करो
सच्चाई बरतो
ईमानदारी रखो
दिमाग और शरीर से स्वस्थ रहो
बुद्धिमान, विवेकी व समझदार बनो
अच्छी सुननेवाली बनो
दानी बनो

सदा ध्यान रखो

बड़ों का आदर
नम्रता
दूसरों को समझना
सदा मीठी बोली बोलना
आपस में बांटना
प्रातःकाल उठना
रोज प्राणायाम और योगासन करना
जो कहना वह करना
दूसरे के भी दृष्टिकोण को समझना
शांत रहना
ईश्वर का धन्यवाद

यह भी याद रखो

कभी दूसरे को दुख न दो
पैसे उधार न लो

कभी घमंड न करो
कभी निराश न हो

सदा मन में रखो

तुम हर काम कर सकती हो और तुम करोगी
सफलता सदा तुम्हारे साथ रहेगी।

मैं हमेशा इसी खोज में रहती थी कि मुझे कहीं कुछ ऐसे विचार मिल जायें, जो मुझे उत्तम हेडगर्ल बनने में सहायता करें। सुबह-सुबह मैं अपनी डायरी के पन्ने खोलकर ईश्वर का नाम लेकर इन सब बातों को जोर से पढ़कर दोहराती थी।

एक दिन हेडमिस्ट्रैस ने मुझे अपने कमरे में बुलाकर कहा, "सोना, अगले शनिवार को तुम्हारे क्लास की लड़कियों के खून की जांच के लिये ब्लड-टेस्ट का इंतजाम किया गया है। तुम मिस बेला से बात कर लेना।"

मैं टीचरों के कमरे में गई। मिस बेला एक टीचर से बात कर रहीं थी। जैसे ही उन्होंने मुझे देखा, बोलीं, "सोना, तुम्हें पता है, अगले शनिवार को तुम्हारे क्लास की लड़कियों के खून की जांच होगी? सब लड़कियों से पूछकर उनके नाम नोट कर लो।"

मैंने गुल को बताया। गुल भी तो एक है। कक्षा की सबसे मोटी लड़की की तरफ इशारा करके मुझसे बोली, "सबसे पहले इसके खून की जांच होनी चाहिये।"

मैं कुछ कहने ही वाली थी कि गुल दौड़कर उसके पास पहुंच गई और बड़ी मीठी आवाज में बोली, "यार, तुम्हें मालूम है इस शनिवार को स्कूल ने तुम्हारे खून की जांच की व्यवस्था की है?"

वह लड़की बिगड़ गई।

"क्यों भई, मेरे ही खून की क्यों जांच होगी? तुम्हारे खून की जांच क्यों नहीं होगी, बोलो तो?"

गुल के मन में शैतानी भरी थी। वह कंधा उचकाकर मुस्कराई। मैंने गुल का हाथ पकड़कर उसे खींच लिया। हम दोनों पास में खड़े एक लड़कियों के झुंड के पास गये और मैंने कहा, “अगले शनिवार को हमारी कक्षा की लड़कियों की खून की जांच होगी। सबसे पहले मैं करवाऊंगी। तुम सब लोग भी जांच के लिये जरूर आना।”

“भई, मैं तो सबसे आखिर में जांच करवाऊंगी,” गुल ने जोर से ऐलान किया।

हमारे क्लास की सिर्फ पंद्रह लड़कियां खून जांच के लिये तैयार थीं। चार ने कहा कि वे अपने माता-पिता से पूछकर अगले दिन बतलायेंगी। तीन लड़कियों ने साफ मना कर दिया कि वे खून की जांच नहीं करवायेंगी। जो लड़कियां राजी थीं, मैंने उनके नाम की लिस्ट मिस बेला को दे दी। इतनी जल्दी काम करने से मिस बेला बड़ी खुश हुई और उन्होंने मेरी पीठ थपथपाई।

शनिवार को मैं जल्दी से तैयार हो गई और गेट पर बेसब्री से बस का इंतजार कर रही थी। जैसे ही बस आई, मैं लपककर उस पर चढ़ गई। बस में बैठी लड़कियों ने ‘सोनाजी नमस्ते’ कहकर मेरा स्वागत किया।

बस स्कूल के गेट के पास रुक गई। मैं बस से उतरकर सीधे अपने क्लास में गई। थोड़ी देर के बाद ही एक डॉक्टर दो नर्सों के साथ आ गई। उनके साथ मिस बेला भी थीं। मिस बेला ने कमरे में चारों तरफ देखा और मुस्कराई। दीवार के पास दो मेजें बराबर से लगी थीं। एक डॉक्टर के लिये और दूसरी मेज नर्सों के लिये थी। दोनों मेजों पर सफेद चादर बिछी थीं। सामने दीवार के सहारे खून जांच के लिये एक कुर्सी पड़ी थी। उसके पास एक छोटी मेज डॉक्टर का सामान रखने के लिये थी।

“कौन पहले आयेगा?” नर्स ने पूछा।

मैंने कहा, “मैं” और मैंने अपना हाथ ऊपर कर दिया।

मिस बेला ने कहा, "यह हमारी हेडगर्ल है।"

मैंने अपना कोट उतारकर दूसरी कुर्सी पर रख दिया और खून-जांच के लिये तैयार हो गई। यों तो मुझे इंजेक्शन लेने में मन में सदा बड़ी घबड़ाहट होती है। मुझे याद है जब मैं सात साल की थी, मेरी अम्मू मुझे एक इंजेक्शन के लिये अपने साथ ले गई। मैंने जैसे ही नर्स के हाथ में इंजेक्शन की सिरिंज देखी, कूदकर रोती हुई 'नहीं-नहीं' कहकर भागी। मैं तेजी से दौड़कर एक खेत में घुस गई। मैं आगे और अम्मू मेरे पीछे। अम्मू ज्यादा तेज दौड़ीं और उन्होंने लपककर मुझे पकड़ लिया। फिर मुझे खींचती हुई क्लीनिक में लौटा लाईं। अम्मू ने मुझे दबोच लिया और मैं चिल्लाई, 'हे भगवान' और इतने में ही नर्स ने मेरी बांह में इंजेक्शन लगा दिया।

आज स्थिति ही दूसरी थी। मैं स्कूल की हेडगर्ल थी और मुझे तो उदाहरण बनना था। मैंने चारों तरफ देखा। मिस बेला की निगाह मुझी पर टिकी थी। जैसे ही सुई बांह के पास आई, मैंने आंख मींच लीं। मैंने मुंह भींच लिया। न बोलने की लाख कोशिश करने पर भी मुंह से 'उई' निकल गई, मैंने आंख खोलीं, देखा, सिरिंज में खून भरा था। नर्स ने धीरे से सुई निकाल ली। रुई का फाहा रख कर दबा दिया और बोली, "इसे थोड़ी देर ऐसे ही दबाये रखना।"

मैंने दूसरे हाथ की उंगली से बांह की रूई दबा ली। मिस बेला ने अगला नाम पुकारा। मैं उठ गई और बराबर में खड़ी हो गई। वह लड़की आकर कुर्सी पर बैठ गई। नर्स ने जैसे मेरा खून लिया था, ठीक वैसे ही उसका भी ले लिया।

नर्स मेरी तरफ मुड़ी, "अब तुम जा सकती हो।" मैं कमरे के बाहर आ गई। गुल बरामदे में मेरा इंतजार कर रही थी।

"सोना! कैसा लगा?"

"मजा आ गया। यह तो बिल्कुल हल्का-फुल्का था।" मैंने पूरी आवाज में कहा। मैंने झुककर जूते के फीते बांधे और लड़कियों के

साथ खड़ी हो गई। मैं वहीं बनी रही जब तक कि सारी लड़कियों का खून, जांच के लिये नहीं ले लिया गया। लड़कियां खेल के मैदान में भाग गईं। मैं मिस बेला की सहायता करती रही। स्कूल खत्म हो गया। घर जाने की बसें तैयार खड़ी थीं।

4

स्कूल की सुबह की हलचल के बाद अब मैं आराम से घर में थी। अम्मू भी किसी काम से शहर के बाहर गई हुई थीं और अगले दिन आने वाली थीं। मैंने दोपहर में अपनी दोस्तों से टेलीफोन पर बातें की, फिर टी.वी. देखती रही। थकी तो थी ही, रात में जल्दी से खाना खाकर बिस्तर पर लेटकर एक किताब पढ़ती-पढ़ती सो गई। आधी रात जब नींद खुली तो देखा कि मैंने बत्ती भी नहीं बुझाई। बड़ा आलस चढ़ा था। मैंने आंखे बंद कीं, करवट बदली और फिर से सो गई। सुबह जब बाहर दरवाजे पर खटखट हुई तभी मैं जगी। 'जरूर अम्मू होंगी। इतवार की सुबह लौटने वाली थीं।' मैं सोच ही रही थी कि हमारी नौकरानी चम्पा ने दरवाजा खोला। अम्मू ही थी, वह सीधे मेरे कमरे में आ गई, "अरे अभी तक आप जनाब बिस्तर में ही हैं?"

अम्मू की आवाज सुनकर मैं चारपाई पर से कूदी और घड़ी देखी, नौ बजने वाले थे।

"अम्मू, आपका स्वागत है।"

"कैसी हो?"

"बिल्कुल ठीक।"

अम्मू ने मुझे गले लगा लिया। मैंने कसकर मुंह बंद कर लिया। कहीं मेरे बिना धुले मुंह की बदबू उन तक न पहुंच जाये।

उसी समय टेलीफोन की घंटी बजी। मैंने लपककर टेलीफोन उठा लिया। "हेलो।"

पर उधर से कोई आवाज नहीं आई तो मैंने कहा, 'नमस्ते' फिर कोई नहीं बोला। "आप कौन?" मैंने पूछा?

"अपनी मां को बुलाओ, उनसे बात करूंगी।"

"अम्मू! आपके लिये फोन है।"

अम्मू ने फोन पकड़ा और मैं फिर से बिस्तर पर लेट गई, चादर खींची और आंखे बंद करके पड़ गई। अम्मू बहुत देर तक टेलीफोन पर बात करती रहीं। टेलीफोन रखने के बाद अम्मू मेरी चारपाई पर बैठ गई। मैंने उन्हें देखा, बड़ी उदास थी। मैं उठकर बैठ गई, "अम्मू क्या हुआ? किसका टेलीफोन था।"

अम्मू की आंखों में आंसू आ गये। उन्होंने लंबी सांस ली। मुझे आभास हो गया कि कोई बड़ी गंभीर बात है।

"अम्मू आपकी दोस्त ने क्या कहा?"

अम्मू चुप रहीं, फिर बोलीं—

"सोना! उठो। तैयार हो जाओ जल्दी से नाश्ता कर लेते हैं।"

मैं जल्दी से नहाई और सफेद ब्लाउज के साथ नीले पोलका डॉट्स का स्कर्ट पहना। यह स्कर्ट अम्मू को बड़ा अच्छा लगता था। मैंने अपने बाल संभाले और दूसरे कमरे में खाने की मेज पर अम्मू का इंतजार करने लगी।

"अम्मू, जल्दी आइये बड़ी भूख लगी है।"

चम्पा अंडे और दो गिलास दूध ले आई। वह मेरी पसंद का आलू का परांठा बना रही थी। अम्मू जब आई, उनके चेहरे पर बड़ी उदासी थी। मैं कुर्सी पर से उठी और उनकी गरदन में हाथ डालकर उनको प्यारी दी और पूछा, "अम्मू, आप इतनी उदास क्यों है? मुझे बताइये न।"

"तुमसे बाद में बात करूंगी।"

"अम्मू आपसे आपकी सहेली ने टेलीफोन पर क्या कहा?"

"वह तुम्हारे स्कूल की एक टीचर थी।"

"क्या? मैंने दूध का गिलास मेज पर रख दिया।"

"हां टीचर ही थी।"

"क्या मेरी शिकायत कर रही थी?"

"नहीं सोना," अम्मू क्षण भर के लिये चुप हो गईं। फिर उन्होंने पूछा, "क्या तुमने अपने स्कूल में खून जांच कराई थी?"

"हां, सबसे पहले तो मैंने ही करवाई थी। हेडगर्ल हूं न।"

"क्या जरूरत थी? मैं तुम्हारी मां हूं। मुझसे पूछकर खून-जांच क्यों नहीं करवाई?"

"पर क्यों? मैं अब बड़ी हो गई हूं। क्या अभी भी अपने बारे में निर्णय नहीं ले सकती?"

अम्मू ने कुछ भी नहीं कहा। उनकी आंखें नम हो गईं।

मुझे बड़ा अजीब लगा। ऐसा तो पहले कभी नहीं हुआ। बस मैंने उनसे बिना पूछे खून की जांच करा ली तो अम्मू इतना बुरा मान गईं। फिर मैंने अम्मू से कहा, "अम्मू, मुझे माफ कर दीजिये।"

"ठीक है सोना। जल्दी से नाश्ता खत्म कर लेते हैं।"

चम्पा आम के आचार के साथ दो और परांठे ले आई। खाने में बड़ा मजा आया। मैंने एक और परांठा खा लिया।

मैं मन-ही-मन सोच रही थी कि हो-न-हो कोई बात है जो खून-जांच से जुड़ी है। मैंने हाथ धोये, ड्राइंगरूम में जाकर अखबार लेकर बैठ गई। अम्मू ने चम्पा से कुछ बात की और ड्राइंगरूम में आकर मेरे सामने वाले सोफा पर बैठ गईं।

मैंने पूछा, "अम्मू, टीचर ने आपसे फोन पर क्या कहा?"

"तुम्हारे खून में एच.आई.वी. इंफेक्शन है?"

"क्या? आप क्या कह रही हैं?"

अम्मू ने दोहराया। उनका हर शब्द हथौड़े से पीटे जाने जैसा लगा। "यह कैसे हो सकता है? यह कभी नहीं हो सकता?" मैं सोचने लगी, "मेरी अम्मू एच.आई.वी. की छूत वाली बेटी को कैसे जन्म दे सकती हैं?"

"सोना! अभी अस्पताल चलो मेरे साथ। मैं फिर से तुम्हारे खून की जांच करवाऊंगी।"

मैं उठ गई। अम्मू और मैं कार में बैठकर अस्पताल पहुंचे। अम्मू सीधे लैबोर्टरी में गई। मैं अम्मू के पीछे-पीछे थी। अम्मू ने अपना डॉक्टर वाला सफेद कोट पहन लिया, और उन्होंने लैब के टेकनीशियन से कहा, "एक नई सिरिंज दो।" मुझे तो काटो तो खून नहीं। फिर एक बार सुई लगेगी, पर कुछ बोलने की हिम्मत नहीं हुई। चुपचाप कुर्सी पर बैठ गई और आंखें मींच लीं। अम्मू ने अपने आप खून का नमूना लिया और खुद ही उसकी जांच करने लगी। मैं उनका चेहरा देखने लगी। टेस्ट का नतीजा देखकर उन्होंने अपने ओंठ दांत से दबा लिये। मैंने उनके पास जाकर पूछा, "अम्मू, क्या सचमुच मेरे खून में एच.आई.वी. का वाइरस है?"

"हां," अम्मू ने बड़े उदासी भरे स्वर में कहा।

"पर अम्मू। मैंने तो कभी ड्रग लेने वालों की सुई का इंजेक्शन नहीं लिया था, मुझे याद नहीं कि कभी मुझे किसी का खून दिया गया हो। यह कैसे हो सकता है?"

अम्मू चुप रहीं। मुझे भी झटका लगा था। दिमाग काम ही नहीं कर रहा था और ऐसा लगा कि जैसे एक हारे हुए सिपाही की तरह मैं शक्तिविहीन हो गई। अम्मू भी विचारों में खोई हुई थीं। घर लौटते समय हम दोनों चुप रहे। गैरेज में कार पार्क करने के बाद अम्मू ड्राइंगरूम में जाकर एक सोफे पर बैठ गई। मैं भी उनके पीछे थी। मैंने खुद को संभाला, हिम्मत जुटाई और पूछा, "अम्मू, इस छूत का क्या कारण हो सकता है?"

अम्मू ने लंबी सांस ली, "बहुत साल पहले मैंने एक औरत को घर का काम करने के लिये रखा था। उसका पति ट्रक ड्राइवर था। उनकी एक बड़ी प्यारी बच्ची थी। दोनों मियां-बीबी इतने भले थे कि उन्होंने मेरा हृदय जीत लिया। वही दोनों मेरे पूरे घर की देखभाल करने लगे। वे दोनों नौकरों के क्वार्टर में रहते थे, जब भी किसी समय मुझे जरूरत होती तो उन्हें आवाज दे देती थी।"

"लेकिन हमारा उनसे क्या मतलब?" मैं कारण जानने के लिये अधीर हो उठी।

"एक रात उस नौकरानी का पति एकाएक बड़ा बीमार हो गया और नौकरानी ने मुझे आधी रात को जगाया। मैं फौरन उसके क्वार्टर में गई। उसका पति बेहोश पड़ा था और उसे बड़ा तेज बुखार था। मैं उसे कार में अस्पताल ले गई। उसे तपेदिक थी और साथ में जाने कितनी बीमारियां थी।" अम्मू बताते-बताते जाने कौन-सी दुनिया में पहुंच गई। फिर बोलीं, "ड्राइवर को एड्स की बीमारी थी। चार दिन के बाद अस्पताल में ही उसने प्राण छोड़ दिये।"

"उसकी बीवी का क्या हुआ अम्मू?"

मैंने उसकी बीवी का भी टेस्ट कराया। वह भी एड्स से पीड़ित थी। एक साल के बाद वह भी खत्म हो गई।

"उसकी बच्ची कहां गई?"

अम्मू ने मेरी तरफ देखा और कहा, "तुम ही वह बच्ची हो।"

"क्या?"

"यह सच है सोना।"

सुनकर ऐसा लगा मानो, मेरे पैरों के नीचे से धरती खिसक गई हो और मैं मलबे के नीचे दब गई।

स्याह विचार मेरे मन में उमड़-घुमड़ कर आने लगे। अम्मू समझ गई। मेरे पास आकर बैठ गई और मुझसे बड़े प्यार से बोलीं–"सोना! मेरी बच्ची! सचमुच यह अजूबा-सा है, पर सच है। मेरे पति मेरी शादी के कुछ दिनों के बाद ही एक मोटर एक्सिडेंट में गुजर गये थे। मैंने दूसरी शादी का विचार मन से निकाल दिया था। भगवान ने जैसे तुम्हें मुझे भेंट में दे दिया था। तुम तो मेरे लिये ईश्वर की देन थी और मैंने उसी समय तुम्हें गोद ले लिया था।"

सोफे से उठकर मैं अपनी चारपाई पर लेटकर बुरी तरह से रोने लगी। मैं अनाथ हूं। डॉ. लता मेरी मां नहीं हैं। मेरे खून में एच.आई.वी.

का इंफेक्शन है। यह विचार मुझे जैसे खाये जा रहा था। अम्मू मेरी चारपाई पर मेरे पास बैठ गईं। एकाएक, वह गुस्से से ऊंची आवाज में मुझसे पूछने लगीं, "क्यों मुझसे बिना पूछे तुमने अपने खून की जांच करवाई?"

अम्मू फूट-फूटकर रोने लगीं। उनकी सुबकियां सुनकर मैं उठकर बैठ गई। मैंने उनकी गरदन में दोनों बांहें डालकर उन्हें कसकर चिपटा लिया। मैं कुछ भी नहीं बोली पर अम्मू बोलने लगीं, "मैं नहीं चाहती थी कि तुम्हें पता चले कि तुमको मैंने पाला है। मैं यह भी नहीं चाहती थी कि तुम्हें जरा भी एहसास हो कि तुम्हें एच.आई.वी. होने की संभावना है। जिस दिन से मैंने तुम्हें पाला है मैं नियम से तुम्हें बराबर दवा भी दे रही हूं।" यह कहकर अम्मू और बिलख कर रोने लगीं।

अब मेरी समझ में आया कि अम्मू मुझे क्यों रोज सुबह-सुबह दवायें खाने के लिये सबसे ज्यादा जोर देती थीं। इसीलिये वह जब तब मेरे खून की जांच भी करवाती थीं। नकारात्मक विचारों ने मेरी सोच बदल डाली। मन चाहा कि मैं घर से भाग जाऊं और नदी में कूद मरूं। जाने कैसे अम्मू मेरे मन की बात समझ गईं।

"मेरी गुड़िया सोना! हम दोनों यह लड़ाई भी लड़ेंगे। जो लड़ेगा, वही तो सिर्फ जीतेगा। जो लड़ेगा ही नहीं वह क्या जीतेगा। उठो फौरन उठो।" उन्होंने मेरा हाथ पकड़कर खड़ा कर दिया और बोलीं, "मै आज ही यहां से अपनी बदली की अर्जी देती हूं और ऐसी जगह जाऊंगी, जहां मुझे कोई भी जानने वाला न हो। मैं नहीं चाहती कि तुम्हारे मन को किसी भी तरह का कभी दुख पहुंचे।"

"पर अम्मू। मैं तो स्कूल की हेडगर्ल हूं," मैं हड़बड़ाकर बोली।

"तो क्या हुआ। सोना, हम लोग कहीं दूर चलकर रहेंगे जहां शांति हो।" मैं जमकर बैठ गई। "मैं इस शहर से हरगिज नहीं जाऊंगी। मैं अपना स्कूल नहीं छोडूंगी। न मैं जाऊंगी और न ही आप। आपने मुझे

पाला है। मैं तो आपको ही अपनी मां समझती हूं। आपकी समस्या मेरी भी तो समस्या है। हम दोनों मिलकर स्थिति का मुकाबला करेंगे।"

अम्मू के चेहरे का रंग ही बदल गया। उन्होंने निश्चय किया कि हम दोनों पूरी बहादुरी से यह लड़ाई लड़ेगें। मैंने भी मन में निश्चय कर लिया था कि आगे से मैं हर बात अम्मू से पूछकर ही करूंगी।

अगले दिन मैं बड़े तड़के उठी। मैंने अपना हेडगर्ल का बैज वाला नीला कोट पहना, कंधे पर स्कूल बैग लटकाया और स्कूल जाने को तैयार हो गई।

"सोना, रुको आज मैं तुम्हें स्कूल छोड़कर आऊंगी।"

अम्मू तैयार होने चली गई। मैं ड्राइंगरूम में सोफे पर पैर फैलाकर बैठ गई। मन में बुरे विचार फिर घुमड़ने लगे। कल तक मैं राजकुमारी-सी थी और आज जैसे भिखारिन बन गई। अब मुझे हर बात के लिये और हर समय, जिसने मुझे गोद लिया है उस पर निर्भर होना पड़ेगा। यह सोचते ही मेरा गला रुंध गया। ऐसा लगा जैसे कोई मेरा गला दबा रहा है। इतने में अम्मू तैयार होकर आ गई। "सोना, जल्दी चलो, मैं नहीं चाहती कि तुम देर से स्कूल पहुंचो।"

अम्मू ने गैरेज से कार बाहर निकाली। मैंने पीछे का दरवाजा खोलकर अपना बैग अंदर फेंका और आगे का दरवाजा खोलकर अम्मू के बगल वाली सीट पर बैठ गई। अम्मू ने कार स्टार्ट की और कहने लगीं—"सोना, पूरी कहानी सुनकर तुम्हें धक्का तो लगा, सच सोना! अपने पति के मरने के बाद मैं बेहद अकेली हो गई थी। जब तुम मेरे जीवन में आईं तो ऐसा लगा जैसे मेरी सारी ताकत वापस आ गई। तुमने मेरे जीवन में खुशियां भर दीं। मैं सचमुच बड़ी ही भाग्यशाली हूं कि मुझे तुम्हारे जैसी लड़की मिली। मैं कभी भी नहीं चाहती थी कि तुम्हें पता चले कि तुम मेरी गोद ली हुई लड़की हो, सिर्फ इसीलिये मैंने इस शहर के इस अस्पताल में नौकरी कर ली। उस नौकरी और उस शहर को छोड़ दिया था, जहां तुम पैदा हुई थी।"

अम्मू की बात ने मेरा मन छू लिया। मेरे अंदर जो तूफान उठ रहा था और जिसने मेरी आंखों के सामने अंधेरा कर दिया था, धीरे-धीरे दूर होने लगा। मुझे साफ दिखाई देने लगा। फिर से मुझमें ताकत लौट आई। मैं अम्मू के पास खिसककर बैठ गई।

"अम्मू! मैं भी तो कितनी भाग्यशाली हूं कि आपकी जैसी मां मुझे मिली और वह भी एक डॉक्टर है, जो हर समय उठते-जागते मेरी देखभाल करती है।" मैं आगे कुछ न बोल सकी। अम्मू का विश्वास लौट आया था, "सोना! तुम्हारी खुशी ही मेरी खुशी है। यह खुशी ही हमको जीवन देगी।"

अम्मू ने कार स्कूल के सामने रोक दी। मैंने दरवाजा खोला, अपना बस्ता उठाया और स्कूल की ओर ऐसे भागी जैसे कुछ हुआ ही न हो। स्कूल में लड़कियां अपने-अपने क्लास की तरफ भागी जा रहीं थीं। उनकी हंसी और चटर-पटर बातें मेरे मन का रंग बदल गईं। मैंने हाथ हिलाया और लड़कियों ने भी हाथ हिलाकर मेरा स्वागत किया। क्लास में अपना बैग रखकर मैंने जल्दी से पूरे स्कूल का एक चक्कर लगाया और अपने क्लास में आ गई। स्कूल के बाद जब मैं घर लौटी तो मैंने मन में तय कर लिया था कि कुछ भी हो मैं घर में खोई खुशियां लौटाकर जरूर लाऊंगी। अम्मू आधे घंटे के बाद ही तो घर आने वाली है। मैं बाहर बाग में गई, खुशबूदार सफेद बेले के फूल तोड़े और सुई-धागा लाकर अपने और अपनी अम्मू के बालों के लिये दो वेणियां बनाईं। मैंने सुंदर-सुंदर पांच गुलाब के फूल भी तोड़ लिये और ड्राइंगरूम के एक गुलदस्ते में लगा दिये। जैसे ही मैंने दोनों वेणी बनाकर खत्म की, अम्मू की कार रुकने की आवाज आई। मेरे उठने से पहले ही अम्मू ने दरवाजा खटखटाया और जोर से आवाज दी, "सोना, जल्दी से उठो, हम लोग अभी सिनेमा देखने जा रहे हैं।"

अम्मू ने हरी और पीली बंधेज की साड़ी पहनी, मैंने लाल ब्लाउज और लहंगा। यह अम्मू ने मुझे पिछले साल मेरे जन्मदिन पर दिया था।

मैंने ओठों पर लिपस्टिक भी लगा ली और परफ्यूम भी। अम्मू ने भी लिपस्टिक लगाकर परफ्यूम लगाई। मैंने उनके जूड़े पर खुशबूदार बेले की वेणी बांध दी। अम्मू बोली, "अब मैं भी तुम्हारे बालों में वेणी लगाऊंगी।"

सफेद बेले के फूलों की खुशबू ने हमें नई शक्ति दे दी। बड़े शीशे के सामने हम दोनों खड़े थे। हम दोनों की शक्लें मिल रही थीं और हम बिल्कुल मां-बेटी लग रहे थे। अम्मू भी मुस्कराईं और उनके साथ मैं भी।

कार में बैठते ही सब पहले की तरह हो गया। पिक्चर यों ही थी। बस उछलकूद, गाने, नाच से भरी थी। पिक्चर देखकर हम लोग घर लौट आये। सारे रास्ते हम चुप ही रहे। जब अम्मू ने कार का स्विच बंद किया, वह हल्की आवाज में बोलीं, "ईश्वर महान है, ईश्वर दयालू है। उसने तुमको मुझे दिया, इतनी प्यारी मेरी सोना," अम्मू के कंधे पर मैंने अपना सिर रख दिया और अम्मू देर तक मेरे बालों में हाथ डालकर मेरा सिर सहलाती रहीं। मैंने ही कहा, "अम्मू! हम लोग क्या सारी रात कार में ही गुजारेंगे? चलिये घर, बड़ी भूख लगी है।"

रात में खाने के बाद मैं अपने बिस्तर पर लेटी कि फिर से अजीब-सा लगने लगा। अम्मू को आभास हो गया। वह आकर मेरे पास बैठ गई और बोलीं, "खोलो तो अपना मुंह।"

मैंने मुंह खोल दिया। उन्होंने मेरे मुंह में खट्टे-मीठे चूरन की बड़ी-सी गोली रख दी। चूरन की गोली खाकर मुझे हंसी आ गई। अम्मू ने एक चूरन की गोली अपने भी मुंह में रख ली और मेरे पास लेट गईं।

5

सुबह अलार्म सुनकर मेरी नींद खुल गई। आंख खुलते ही मुझे कोयल की मधुर कूक सुनाई दी और मैं भी कोयल की तरह कूकने लगी। एक बार वह कोयल कूके, फिर मैं। थोड़ी देर में एकदम से कोयल खिसियाकर कूकी और उड़ गई। मैंने खिड़की से झांककर देखा, पूर्व दिशा में सूरज निकलने से पहले की लालिमा आकाश में छाई हुई थी। मैं ताजी ठंडी मंद हवा में सांस लेती रही और सूर्य उगने का इंतजार करती रही। एकदम से सुस्ती चढ़ी तो मैं फिर लेट गई। अम्मू की आवाज सुनाई दी, "सोना, जल्दी उठो, तुम्हें स्कूल जाना है, बस आती ही होगी।"

"लेकिन अम्मू..." मेरें वाक्य खत्म करने से पहले अम्मू ने मुस्कराकर मेरा हाथ पकड़कर मुझे बिस्तर से उठा दिया। मैंने दांत मांजे और मुंह धोया, फिर अपना मुंह शीशे में देखा और मुस्कराई। शीशे का चेहरा भी मुस्करा दिया। जैसे ही मैं नहाने जा रही थी, फिर मन में अजीब से विचार आने लगे। विषकन्या की कथा मेरे दिमाग में कौंध गई। मुझे लगा कि मैं ही विषकन्या हूं और कभी भी दूसरी लड़कियों की तरह जीवन नहीं बिता पाऊंगी। मैं सबसे अलग हूं, अजीबोगरीब। इसी बुरे विचार में डूबी मैं जाने कितने समय तक गुसलखाने में बैठी रही। अम्मू ने दरवाजा खटखटाया, "सोना, दरवाजा खोलो।"

दो मग पानी डालकर जैसे-तैसे तौलिये से बदन पोंछकर गाउन पहनकर मैंने दरवाजा खोल दिया। अम्मू से बिना नजर मिलाये मैंने अपनी अलमारी में से अपने स्कूल की ड्रेस निकाली और नीला कोट

निकाला। कोट पर चमकता हुआ हेडगर्ल का बैज देखकर मन में आया कि उसे नोचकर फेंक दूं। अम्मू मेरे पास खड़ी थीं। मैंने जल्दी से अपना नाश्ता किया और स्कूल की बस पकड़ने बाहर भाग गई।

वहां पहुंची ही थी कि बस आ गई। मैं खिड़की के पास वाली सीट पर बैठ गई। दिनभर स्कूल में चुपचाप रही। रोज की तरह मेरी सहेली गुल सदा की तरह गप्पें सुनाती रही। उसने अपने नये ब्वॉयफ्रेंड के बारे में बताया। वह मुझे खुश करना चाहती थी। बार-बार पूछे जा रही थी कि मैं इतनी उदास क्यों हूं लेकिन मैंने कुछ भी नहीं कहा। मैंने मन में सोच लिया था कि मैं अपने एच.आई.वी. इंफेक्शन के बारे में कभी भी किसी को कुछ भी नहीं बताऊंगी। स्कूल खत्म होने पर गुल फिर मेरे पीछे पड़ गई, लेकिन मैं चुप रही। हम दोनों ने अपने-अपने बस्ते संभाले और अपनी-अपनी बस पकड़ने भागे।

इतना ही नहीं, मुझे हर समय डर लगता था कि मेरी छूत की बीमारी किसी और को न लग जाये। पर मन में शांति थी कि दिन भर मैंने किसी को नहीं छुआ।

अब दो विचार मुझे खाये जा रहे थे, एक यह कि मैं एच.आई.वी. छूत से पीड़ित हूं और उससे अधिक दूसरा यह कि मैं गोद ली हुई लड़की हूं। इसके साथ मेरी सोचने की शक्ति ही जैसे जाती रही। मैं सबसे अलग रहना चाहती थी, अम्मू से भी। मन में ऐसा डर-सा बैठ गया था कि कहीं मुझसे अम्मू को भी मेरी बीमारी की छूत न लग जाये। घर पहुंचकर मैं सीधे अपने कमरे में गई और अपने पढ़ने की मेज के साथ लगी कुर्सी पर बैठ गई। मैंने अपनी डायरी निकाली और उसमें कुछ पक्तियां लिख डालीं,

दुख का दूसरा नाम ही मेरा जीवन है
कर लेने दो बंद मुझे आंखें सदा के लिये।

मैंने डायरी बंद कर दी फिर उसका पहला पन्ना खोला और जो मैंने पहले कभी लिखा था पढ़ा—

स्वप्न सरोवर में
भरा है शीतल जल सुगंधित
तैर रही हूं उसमें मैं
काश कि सदा मैं रहती इसमें।

फिर मन निराशा से भर गया। मैं मेज पर सिर रखकर उदास बैठ गई। उसी समय पास में खड़ी अम्मू की मीठी आवाज सुनाई दी–

"मुंह तो खोलो सोना।"

मैंने सिर ऊपर किया। अम्मू बड़ा-सा प्याला लिये खड़ी थीं और उसमें रसगुल्ले थे। मैंने फौरन अपना मुंह खोल दिया। अम्मू ने रसभरा रसगुल्ला मेरे मुंह में रख दिया। रसगुल्ले के खुशबूदार मीठे रस ने मेरे मन के निराशा भरे विचारों को धो डाला और मैंने अम्मू से पूछा, "अम्मू, मैं क्या करूं कि मुझसे किसी को इस बीमारी की छूत न लगे?"

अम्मू गंभीर हो गई। "सोना, यह बीमारी सिर्फ किसी के शरीर के तरल संचरण अंग्रेजी में लिक्विड ट्रांसमिशन से ही दूसरे व्यक्ति को हो सकती है। बस, तुम्हें यह याद रखना है कि तुम्हारे शरीर से किसी दूसरे के शरीर में यह संचरण न हो," कहकर अम्मू ने बात बदल दी। बोलीं, "सोना, जब मैं तुम्हारी तरह छोटी थी और जब कभी मन में उदासी और निराशा होती थी, मैं रस्सी लाकर रस्सी कूदना शुरू कर देती थी। चलो हम दोनों रस्सी कूदते हैं।"

अम्मू अपने कमरे में से दो रस्सियां लेकर फिर आ गईं। उन्होंने एक रस्सी मुझे थमाई और एक अपने लिये रख ली, "चलो हम दोनों रस्सी कूदने की होड़ लगाते हैं। देखते हैं कौन जीतता है? अगर तुम जीतीं तो मैं तुम्हें आइसक्रीम खिलाऊंगी और अगर मैं जीती तो तुम खिलाओगी। हारने वाला, जीतने वाले को आइसक्रीम खिलायेगा, याद रखना।"

अम्मू ने मेरे हाथ पर हाथ मारकर पूछा, "स्वीकार है?"

मैंने सिर हिलाकर हां कर दी।

घड़ी में एलार्म लगाकर हम दोनों रस्सी कूदने लगे। अम्मू तो दो बार कूदने से हांफने लगी, लेकिन मैं बराबर कूदती रही। अम्मू ने हार मान ली। वह मुझे आइसक्रीम खिलाने ले गईं। हम दोनों ने ऑरेंज बार खाई। यह हम दोनों ही को बेहद पसंद थी।

विषकन्या की कहानी

(प्राचीन भारत में एक राजा थे, उनका नाम चन्द्रगुप्त मौर्य था। राजा के प्रधानमंत्री चाणक्य थे। चाणक्य बड़े चतुर व बुद्धिमान थे। हर समय यही सोचते रहते थे कि अपने राजा व उनके राज्य की रक्षा कैसे की जाये। चाणक्य ने पड़ोसी देशों में अपने जासूसों का जाल बिछा दिया। यह जासूस, चाणक्य को दूसरे देशों की सारी खबरें देते रहते थे। अगर चाणक्य को खबर मिलती कि उनके राजा के विरुद्ध कोई षड्यंत्र कर रहा है, चाणक्य उसको नष्ट करके ही चैन की सांस लेते थे। दूसरे देशों में जासूसी के लिये उन्होंने सुंदर-सुंदर विषकन्यायें तैयार कीं। विषकन्या बनाने के लिये उन्होंने बहुत सुंदर व नन्ही बच्चियों को पाला था और वह नित्य इनको थोड़ा-थोड़ा सर्पविष देते थे। कुछ समय बाद ये कन्यायें विषकन्यायें बन जाती थी। इनके रग-रग में सर्पविष भरा रहता था। इन सुंदरी विषकन्याओं को नाचने व गाने की शिक्षा दी जाती थी और जब वह कलाओं में पारंगत हो जाती थीं, तब उन्हें जासूसी की शिक्षा दी जाती थी। चुनी हुई जासूस विषकन्या राजा के दुश्मन राज्य के उस व्यक्ति के पास भेजी जाती थी जो सबसे विशेष होता था। यह विषकन्या अपने आकर्षण से दुश्मन पर जादू-सा कर देती थी। विषकन्या अपना विष उस व्यक्ति के शरीर में पहुंचा देती थी। अपना काम करके विषकन्या अपने राज्य में लौट आती थी। कुछ समय बाद वह अभागा मृत्यु की गोद में समा जाता था।)

6

मिस बेला को मेरे एच.आई.वी. इंफेक्शन का पता था। मैं उनकी आंखों में आंखें डालकर नहीं देख पाती थी। एक दिन हेडमिस्ट्रेस ने मुझे अपने ऑफिस में बुलवाया और कहा, “सोना! तुमने तो कमाल कर दिया, सारा स्कूल तुम्हारी तारीफों के पुल बांध रहा है। हम सब लोग तुमसे बहुत ही खुश हैं। लड़कियां और टीचरें सबकी तुम चहेती हो। जितनी तुम बाहर से सुंदर हो, उतनी ही अंदर से भी।” उन्होंने मेरी पीठ थपथपाई और बोलीं, “तुम मिस बेला के पास जाकर स्कूल के वार्षिकोत्सव के बारे में बात कर लो।”

उसी समय मिस बेला भी हेडमिस्ट्रेस के कमरे में आ गईं और मुझे देखकर मुस्कराईं। हेडमिस्ट्रेस मिस बेला की तरफ देखकर बोलीं, “मिस बेला, सोना से वार्षिकोत्सव के बारे में बात कर लीजिये।”

“ठीक है, सोना अभी चलो मेरे साथ,” मिस बेला ने कहा।

मैं चुपचाप उनके साथ कैंटीन में गई और एक कोने की मेज पर हम आमने-सामने की कुर्सियों पर बैठ गये। मिस बेला ने सैंडविच और चाय लाने का ऑर्डर कर दिया। ऑर्डर करके उन्होंने सीधे ही मुझसे पूछा, “सोना! मैं देख रही हूं। कुछ दिन से तुम बड़ी उदास दिखती हो। तुमको क्या हुआ है?”

उनकी बात सुनकर मेरा गला रुंध गया। किसी तरह अपने को संभालकर मैंने कहा, “पता नहीं मैडम, क्या हो गया।”

“कोई-न-कोई बात तुमको परेशान किये हैं। सोना! तुम मुझको बताओ, मैं तुम्हारी मदद करूंगी।”

एक क्षण मुझे लगा कि मैं मन खोलकर उनसे सब कुछ बता दूं पर

जाने क्यों मैं एक शब्द भी नहीं बोल सकी। मिस बेला ने फिर आग्रह से कहा, "सोना! अगर तुमको कोई बात मन-ही-मन कचोट रही हो तो अच्छा है कि उसे किसी-न-किसी भरोसेमंद व्यक्ति को बता दो। बताने से मन हलका हो जाता है।"

मैंने हिम्मत जुटाकर पूछा, "मैडम आप कैसे मदद करेंगी?"

"बस मैं यही कह सकती हूं कि जो कुछ भी तुम मुझसे कहोगी, वह बात मुझी तक रहेगी। तुम मुझे विश्वास के साथ बता सकती हो।"

उनकी बात से मुझे हिम्मत आ गई। मैं सामने वाली दीवार पर लगे बल्ब को देखने लगी। मैंने कहा, "मैडम, डॉ. लता मुझे जन्म देने वाली मां नहीं हैं। मां के मरने के बाद ही उन्होंने मुझे पाला है।"

"तो क्या हुआ? मैंने भी पांच साल पहले एक बच्चा पाला था। अब वह नर्सरी में स्कूल जाता है। सोना, सचमुच वह पूरा बंदर है। वह मेरी जान है। यह बात तो मन में भी नहीं लानी चाहिए। तुम तो बड़ी समझदार हो। तुममें बुद्धि है। इतनी सुंदर होने पर तुममें घमंड भी नहीं है। सदा सबकी मदद करने को तैयार रहती हो। ईश्वर दयावान है और उसकी तुम पर कृपा है। डॉ. लता ने तुमको अपनी ही बेटी की तरह पाला है। वह तो तुम्हें बहुत प्यार करती हैं। कोई और बात है जो तुमको हैरान किये हुए है?"

मिस बेला ने जैसे मेरे अन्तर्मन को छू लिया था। किसी तरह अपने आप को संभालकर मैंने कहा, "मैडम! मेरे बारे में आपको कुछ और पता है?"

"तुम क्या कहना चाहती हो?"

"कि मेरे शरीर में एच.आई.वी. का इंफेक्शन," कहकर मैं आगे नहीं बोल पाई।

"हां, मुझे मालूम है।"

"आपको किसने बताया?"

"तुम तो जानती ही हो, मैंने स्कूल में लड़कियों की खून-जांच

करवाई थी। उस खून-जांच के पीछे यही बात थी कि अगर किसी लड़की को एच.आई.वी. का इंफेक्शन है तो पता लग जाये।"

मैंने उनकी तरफ देखकर कहा, "लेकिन मैडम क्यों?"

मिस बेला ने लंबी सांस खींची और कहने लगी, "सोना! स्कूल में कई लड़कियों की लड़कों से दोस्ती है। कभी-कभी ये लोग सीमा पार करके नजदीकी शारीरिक रिश्ते बना लेते हैं। ऐसी स्थिति में एच.आई.वी. इंफेक्शन लगने का डर होता है। इसीलिये हमने खासतौर से यह खून-जांच करवाई। इस खून-जांच से ही यह पता लग सकता था कि हमारी किसी भी लड़की को यह इंफेक्शन तो नहीं है। कई लड़कियां इसकी शिकार हैं। उनके रक्त की जांच के बाद ही पता चला कि उनके रक्त में एच.आई.वी. का इंफेक्शन है।"

मेरी हेडगर्ल की भावना जाग उठी, "मैडम, हमें कुछ अवश्य करना चाहिये। हम लोग अब क्या कर सकते हैं?"

"इसी पर हम लोग सोच-विचार कर रहे हैं। हमने सोचा है कि स्कूल में क्यों न हम एच.आई.वी. जागरूकता प्रोग्राम करवायें। तुम हेडगर्ल हो, तुम्हें कुछ जिम्मेदारी लेनी होगी। जो लड़कियां इस इंफेक्शन से पीड़ित हैं हम लोग उनके माता-पिता से बात करेंगे और उनको सलाह देंगे कि वे बराबर डॉक्टर की सलाह लें।" कुछ रुककर मिस बेला बोली, "गुल को भी एच.आई.वी. का इंफेक्शन है।"

"सचमुच, गुल को भी?" मैंने घबड़ाकर पूछा।

"हां सोना!" मिस बेला को मालूम था कि गुल मेरी पक्की सहेली है। गुल की बात सुनकर मुझको बड़ा धक्का लगा। मैं गुल के बारे में सोच रही थी कि घंटी बज गई और मिस बेला खड़ी हो गई। मैंने उनसे पूछा, "मैम! यह प्रोग्राम कब होगा?"

मिस बेला कुछ और सोच रही थीं। मेरी बात नहीं सुनी। उन्होंने मुझे अपने साथ टीचर्स के कमरे में आने का इशारा किया। मैं उनके साथ चली गई। उन्होंने अलमारी खोलकर एक कागज निकालकर मुझे

पकड़ा दिया। इस कागज में मेरे क्लास की उन लड़कियों के नाम थे, जिन्हें एच.आई.वी. का इंफेक्शन था। सबसे ऊपर गुल का नाम था और सबसे नीचे नाम लिखा था 'सोना'। मिस बेला बोलीं, "असल में हम लोग इस समस्या को लेकर बहुत दिनों से परेशान थे और हमें लगा कि इस स्थिति में सिर्फ टीचर और डॉक्टर ही सबसे अधिक योगदान कर सकती हैं और लड़कियों को सही दिशा दिखा सकती हैं। तुम्हारी मां डॉक्टर हैं। मैं उनसे भी इस बारे में बात करूंगी।"

"क्या गुल की मां और पिताजी को गुल की बीमारी के बारे में पता है?"

"हां।"

"लेकिन मैम मेरी मां को किसने फोन किया था?"

"मैंने मिस स्मार्ट से तुम्हारी मां से बताने को कहा था। सोना, अभी मुझे दूसरी क्लास लेनी है।" मिस बेला उठ खड़ी हुईं। मैं टीचर्स के कमरे से बाहर निकली, देखा बरामदे में गुल खड़ी थी। बड़े हंसकर बोली, "क्यों सोनाजी, मिस बेला के साथ प्यार-मुहब्बत की बातें हो रही थी?"

"तुम भी एक चीज हो। बस तुम्हारे दिमाग में एक ही बात रहती है प्यार मुहब्बत?"

गुल मुझे खींचकर एक तरफ ले गई और कान में बोली, "सोना आज मेरा ब्वॉयफ्रेंड अपनी नई मोटर साइकिल पर आ रहा है। वही मुझे घर पहुंचायेगा, तुम भी उससे मिलो न।"

"मुझे बहुत सारा काम करना है लेकिन मैं उससे जरूर मिलूंगी।"

"मैं तुम्हारा गेट पर इंतजार करूंगी," कहकर गुल जल्दी से क्लास में घुस गई। क्लास खत्म होने के बाद मैंने अपना बैग उठाया और गेट के बाहर चली गई। वहां गुल मेरा पहले से ही इन्तजार कर रही थी। तभी फट्फट्फट् करती एक मोटर साइकिल की आवाज आई। आवाज से कान फटे जा रहे थे। सब लोग उधर ही देखने लगे।

"वह देखो मेरा ब्वॉयफ्रेंड आ रहा है।" गुल बोली।

एक छोटी-सी दाढ़ी रखे हुए, काला चश्मा लगाये, काली कमीज और काली पतलून पहने एक आदमी मोटर साइकिल पर आया और उसने अपनी मोटर साइकिल बिल्कुल हमारे पास खड़ी कर दी। उसने चश्मा उतारा और हंसकर हमारी तरफ देखा। बड़ी उम्र का आदमी था।

"सोना! गोंटू से मिलो। यह मेरा दोस्त है और गोंटू यह है हमारी पक्की सहेली सोना।"

गोंटू ने मुझसे हाथ मिलाया और हाथ पकड़े ही खड़ा रहा और बोला, "मैंने गुल से तुम्हारे बारे में सुना था। तुम तो उससे भी ज्यादा सुंदर हो, जितना कि मैंने सोचा था," कहकर वह खिलखिलाकर हंसा। उसकी हंसी में अजीब-सी शरारत भरी थी।

मैंने झटके से अपना हाथ छुड़ा लिया। उसने गंदी नजर से मुझे देखा और गुल की तरफ मुड़कर बोला, "चलो देर हो रही है, हम लोग सिनेमा देखने चलते हैं।" उसके इतना कहते ही गुल उसकी मोटर साइकिल पर बैठने लगी। मैंने लपककर उसका हाथ पकड़कर कहा, "लेकिन गुल, आज तो एक जरूरी मीटिंग है, तुम कैसे जा सकती हो?" गुल सोच में पड़ गई। गोंटू ने गुल से कहा, "ठीक है गुल, हम लोग किसी और दिन चलेंगे।" गुल मोटर साइकिल से नीचे उतर आई। गोंटू ने अपनी मोटर साइकिल स्टार्ट की और फिरंट हो गया।

गुल को गुस्सा चढ़ा था। वह चिढ़कर बोली, "सोना, तुमने तो पहले इस मीटिंग के बारे में नहीं बताया था।" फिर खिसियाकर बोली, "मेरे मामले में तुम नहीं पड़ो तो अच्छा है।"

"गुल, तुम मेरी दोस्त हो। एक सचमुच बड़ी जरूरी बात है। उसी के बारे में मैं तुमसे बात करना चाहती थी।"

"ऐसी भला कौन-सी जरूरी बात थी कि तुम कल तक नहीं रुक सकती थी?"

मैं गुल का हाथ पकड़कर ले गई और उसके साथ एक पेड़ के नीचे

बैठ गई। मैंने कहा, "गुल तुम्हें मालूम है कि मेरे और तुम्हारे शरीर में एच.आई.वी. का इंफेक्शन है?"

"पागल हो गई हो। क्या कह रही हो?" गुल उठ खड़ी हुई। मैंने उसका हाथ पकड़ लिया, "गुल! जो मैं कह रही हूं ठीक है। हम दोनों के खून में सचमुच एच.आई.वी. का इंफेक्शन है।" कहकर मुझे जोर से रुलाई आ गई।

"सोना! ज्यादा अकलमंद न बनिये। आपके खून में एच.आई.वी. का इंफेक्शन भले ही हो, मुझमें नहीं हो सकता।"

"मैं तुमको क्यों डराऊंगी? मैं सच कह रही हूं। मैं और तुम दोनों ही इस भयानक बीमारी के मरीज हैं।"

"चुप रहो सोना! मजाक मत करो।" गुल को विश्वास नहीं हुआ।

"यह सच है गुल।"

"तुमको कैसे पता?"

"उस दिन की खून-जांच से।"

गुल के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं। उसने घबड़ाकर पूछा, "किसी और को भी हम लोगों के बारे में मालूम है?"

"हां मिस बेला को, नर्स को, मेरी मां को, तुम्हारी मां को और अब मुझे और तुम्हें।"

"ऐसा नहीं हो सकता।"

"तुम्हें पता है कि मेरी तरह तुम भी गोद ली गई हो?"

"सोना! मैं तुम्हें मार डालूंगी। आज तुम सोचकर ही आई हो कि गुल को धक्के पर धक्का दोगी? बोलो! तुम्हें मुझसे क्या चाहिये?"

"मुझे तुमसे कुछ नहीं चाहिये गुल! मैं तुम्हारी सहेली हूं। तुमको कभी भी दुख नहीं पहुंचाऊंगी। जब कोई बात सच बनकर सामने आ जाती है, तब जीवन का बहाव ही बदल जाता है। दुनिया क्रूर और निर्दयी दिखने लगती है। जो भी सच बात कहता है, वह दुश्मन लगने लगता है।"

"तुम बहुत बुरी हो सोना! मैं तुमसे घृणा करती हूं," कहकर गुल खड़ी हो गई। मेरी तरफ देखे बिना वह तीर की तरह अपनी बस पकड़ने के लिये भागी।

क्या गुल को मुझे नहीं बताना चाहिये था। क्या एच.आई.वी का इंफेक्शन छिपा लेना था? मैं समझ नहीं पा रही थी कि जो मैंने किया वह ठीक भी था। मैंने अपना बैग उठाया और अपनी बस पकड़ने चल दी।

7

मैं रात भर सो नही पाई। बार-बार गुल के कहे शब्द याद आ रहे थे, "सोना! क्या तुमने मुझे शॉक-पर-शॉक देने की ठानी है? मैं तुमसे घृणा करती हूं।" शायद गुल का मुझ पर से भरोसा उठ गया।

अगले दिन जब मैं अपने क्लास में घुसी, गुल खिड़की के बाहर देख रही थी। मुझे उसकी पीठ दिखाई दी। मैंने उसे नहीं छेड़ा, क्लास के बाहर चली गई, उसी समय घंटा बज गया। इंटरवल में गुल मेरे पास आई। वह बड़ी उदास थी, धीरे-से बोली, "सोना, मैं तुमसे बात करना चाहती हूं।" मैं उसके साथ हो ली और हम दोनों उसी पेड़ के नीचे बैठ गये। गुल ने मेरा हाथ पकड़ लिया, "सोना तुमने ठीक ही कहा, मैं सचमुच गोद ली गई हूं और साथ ही मुझे एच.आई.वी. का इंफेक्शन भी है। अब मुझे सब कुछ मालूम है, सब कुछ," और गुल बिलख कर रोने लगी। मेरा दिल भी भर आया। मैंने उसका हाथ पकड़ लिया। गुल ने कुछ देर अपने को संभाला और अपनी कहानी सुनाने लगी, "शादी के बाद मेरे मम्मी-पापा को सात साल तक कोई भी संतान नहीं हुई। उनके मित्र ने उन्हें अनाथालय से बच्चा गोद लेने की सलाह दी। मुझे गोद लेने के बाद उन दोनों के जीवन में बहार आ गई और वे लोग बड़े खुश थे। और जब मैं छह बरस की थी तो मम्मी ने एक लड़के को जन्म दिया। अब सबका जीवन और भी खुशियों से भर गया। मैं उनकी खुशियों के साथ अच्छी किस्मत भी लाई थी। सोना! मेरा भैया भी गजब का था। पता है, उसने पहला शब्द कौन-सा बोला था, 'दीदी'," कहकर गुल का चेहरा खिल उठा, "एक बार हमारे घर नानीजी आईं। वह हम लोगों के लिये एक तोता लाई थीं। तोता, पिंजड़े

में रहता था। मैंने तोते का नाम टुनटुन रख दिया। तोता हरी मिर्च खाने का बेहद शौकीन था। मैं और मेरा छोटा भैया, सुबह-सुबह टुनटुन तोते को हरी मिर्च खिलाते थे। टुनटुन तोता भी भैया की तरह मुझे दीदी कहने लगा। बस उसने मुझे देखा नहीं कि 'दीदी, दीदी, दीदी' की रट लगा देता।" गुल बोलते-बोलते पिछली बातों में खो गई। उसने मेरी तरफ देखा और फिर बोलना शुरू कर दिया, "दो-चार दिन पहले जब मम्मी को मेरे एच.आई.वी. इंफेक्शन के बारे में पता चला, वह मन-ही-मन बहुत दुखी हुई। उन्होंने फौरन पापा को बताया और दोनों बेहद परेशान हो गये। उसी दिन से मम्मी अपने बेटे को हर समय बचाने का सोचने लगी। जब कभी मैं भैया के पास खड़ी होती वह मेरे पास आ जातीं। वह उसका हाथ पकड़कर मुझसे कहतीं, 'गुल उसको अकेला खेलने दो।' मुझे बड़ा अजीब लगा। एक दिन मैंने पापा से मम्मी की शिकायत भी की, पर वह भी चुप रहे और टाल गये। मेरी कुछ भी समझ में नही आया कि एकाएक क्या हो गया? सोना, हम सब लोग रात में एक बड़े कमरे में सोते थे। लेकिन एक दिन मेरी चारपाई सबसे दूर एक कोने में डाल दी गई।" गुल चुप हो गई। थोड़ी देर बाद बोली, "सोना, जिस दिन तुमने मुझसे मेरे एच.आई.वी. के बारे में बताया, घर पहुंचकर मैं अपनी मम्मी के पास गई और पूछा, "मम्मी! क्या तुमको पता है कि मुझे एच.आई.वी. का इंफेक्शन है?" वह चुप रहीं। मैंने फिर पूछा, "पापा को मालूम है?" वह फिर चुप रहीं। सोना, मम्मी-पापा दोनों बहुत अच्छे हैं, पर उन्हें अपने बेटे को भी तो बचाना है। गुल फफककर रोने लगी।

"फिर क्या हुआ?" मैंने पूछा। मैंने उसकी तरफ गौर से देखा। "शायद मम्मी का मन था कि मुझसे चिपटकर मन भर रोयें। पर वह मुझसे दूर रहीं। मुझे बड़ा अजीब लगा। इतने में पापा भी आ गये। वह भी मुझसे अलग खड़े हो गये फिर दोनों दूसरे कमरे में चले गये, मैं असहाय थी, मुझे लगा कि मैं वहां से भाग जाऊं, क्या करूं? सोना वह

दिन मेरे जीवन का सबसे खराब दिन था। तभी मुझे टुनटुन तोते की आवाज सुनाई दी, 'दीदी, दीदी, दीदी।' मैं दौड़कर उसके पिंजड़े के पास गई और पिंजड़े का दरवाजा खोल दिया। टुनटुन पिंजड़े के बाहर आया और फुर्र से उड़ गया। मैंने सिर उठाया, वह दूर आकाश में उड़ा जा रहा था। काश, कि मैं भी टुनटुन की तरह स्वतंत्र चिड़िया होती। अभी तो मैं अपने ही घर में अछूत हूं। क्या करूं, कहां जाऊं?" गुल फिर फूट-फूटकर रोने लगी। मैंने गुल को अपनी बांहों में ले लिया, "चलो गुल, मिस बेला से बात करते हैं।"

"सोना, आज नहीं, मैं बहुत परेशान हूं।"

लेकिन मैं गुल को खींचकर मिस बेला के पास ले गई। मिस बेला टीचर्स रूम में बैठी किताब पढ़ रहीं थीं। उन्होंने सिर उठाकर पूछा, "सोना और गुल, क्या बात है?"

"मैडम, गुल को अपने घर में समस्या हो रही है। हम दोनों आपसे बात करना चाहते हैं।"

मिस बेला समझ गईं, बोलीं, "ऐसा है सोना! तुम ही गुल की सहायता कर सकती हो। गुल को अपनी मां डॉ. लता से मिलवा दो।"

"ठीक है," हम लोग पेड़ के नीचे चले गये। मैंने गुल का हाथ पकड़कर कहा, "गुल दिल मत खोओ, मुझे अम्मू से बात कर लेने दो। शाम को मैं तुम्हें फोन करूंगी।"

स्कूल खत्म होने के बाद जब मैं घर पहुंची तो देखा कि अम्मू दो भुने हुए भुट्टे लिये खड़ी हैं। भुट्टा देखते ही मैंने अपना बस्ता एक तरफ फेंका और लपककर उनसे एक भुट्टा झपट लिया। नींबू लगा हुआ भुना भुट्टा और काले नमक की खुशबू से मेरे मुंह में पानी आ गया। मैंने भुट्टे में दांत मारकर भुट्टा खाना शुरु कर दिया। मजा आ गया।

भुट्टा खाकर जब अम्मू और मैं ड्राइंगरुम में पहुंचे तो अम्मू ने मुझसे पूछा, "ऑल इंडिया रेडियो! आज की ताजा खबर क्या है?"

"गुल, अम्मू।"

"क्या हुआ गुल को?" और मैंने गुल की सारी कहानी सुना दी।

उसी समय किसी ने दरवाजे पर खटखटाया, "कौन है?" मैंने पूछा।

"गुल," मैंने लपककर दरवाजा खोला। गुल खड़ी थी, उसकी आंखें लाल थीं, मुझे देखकर वह हूक मारकर रोकर बोली, "मैं अब उस घर में नहीं रहूंगी।"

इतने में अम्मू भी आ गईं। उन्होंने उसका हाथ पकड़ लिया और पूछा, "लेकिन क्यों? क्या हो गया?" गुल कुछ भी नहीं बोली। मैं गुल को अंदर ले गई और उसे सोफे पर बैठाकर उसके पास बैठ गई। अम्मू सामने के सोफे पर बैठ गईं और उन्होंने पूछा, "गुल! क्या तुम अपनी मम्मी-पापा से पूछकर यहां आई हो?" गुल ने सिर हिलाकर 'ना' कर दी।

"वे दोनों तुम्हारे लिये चिंतित होंगे कि तुम बिना कहे चली आई। अभी मैं उनको फोन करके कहे देती हूं कि तुम हमारे पास हो," कहकर अम्मू चटपट फोन करने चल दीं। मैंने गुल से पूछा, "क्या हुआ गुल?"

"जब मैं घर पहुंची, मैंने देखा कि मेरी चारपाई और सारा सामान दूसरे कमरे में पहुंचा दिया गया। वहीं मेरी चारपाई पर एक चिट्ठी रखी थी।" गुल ने चिट्ठी मुझे थमा दी। मैंने चिट्ठी खोली उसमें लिखा था,

'प्यारी गुल,

प्यार।

यह पत्र हम तुम्हें बड़े दुख से लिख रहे हैं। दो हफ्ते पहले हमें पता चला कि तुम्हे एच.आई.वी. का इंफेक्शन है। यह जानकर हम लोगों को बड़ा धक्का लगा। हम लोग तुम्हें बहुत प्यार करते हैं। पर हमें तुम्हारे छोटे भाई की और अपनी भी तो रक्षा करनी है। अब तुम दूसरे कमरे में रहो। हम तुम्हारी बराबर देखभाल करेंगे और तुम्हें डॉक्टर के पास भी ले चलेंगे।

तुम्हारी मम्मी और पापा।'

मैंने अम्मू की तरफ देखा। अम्मू अभी भी टेलीफोन लिये खड़ी थीं। शायद दूसरी तरफ कोई फोन नही उठा रहा था। उन्होंने फोन रख दिया। मैंने गुल का पत्र अम्मू को दिखाया और उन्होंने उसे पढ़ा, "बड़ा अजीब है। उन लोगों को इस बीमारी के बारे में कुछ भी जानकारी नहीं है, तभी तो इस तरह से कर रहे हैं। मैं अभी-अभी उन लोगों से मिलने जा रही हूं। अब गुल हमारे साथ रहेगी और आज रात भी यहीं सोयेगी।"

अम्मू ने फिर से फोन पर नंबर मिलाया। इस बार गुल के पापा ने फोन उठाया। अम्मू ने उनको बताया कि गुल हमारे यहां आई है। फोन के बाद अम्मू ने कार की चाबी उठाई और हमसे कहकर वह गुल के घर चली गईं। अम्मू के जाने के बाद गुल बोलने लगी, "सोना! कुछ दिन पहले वह घर मेरा था। सब लोग मेरे अपने थे, और आज मैं अलग कर दी गई। आज वह लोग मुझे अपने नजदीक नहीं देखना चाहते।" गुल ने सब कुछ रो-रोकर मुझे बताया। उसका मन हलका हो गया। मैंने उसे गाजर का रस दिया। उसने उसे एक ही घूंट में गले के नीचे उतार दिया। वह बहुत भूखी थी। मैंने टमाटर की सैंडविच बनाई, वह भी उसने खा लीं। खाने के बाद उसमें कुछ दम आया। मैंने टी.वी. चला लिया। काफी देर टी.वी. देखने के बाद मैंने गुल से कहा, "गुल, अम्मू ने तुम्हारी मम्मी-पापा को समझा लिया होगा। मुझे पूरा भरोसा है कि वे लोग तुम्हें अपने साथ रखने को राजी हो गये होंगे और उन्होंने तुम्हारी चारपाई भी अपने कमरे में डाल ली होगी। गुल मेरी तरफ देखने लगी। उसके चेहरे पर मुस्कराहट लौट आई, वह बोली, सोना तुम्हारे मुंह में गुलाब।"

"मेरे मन में एक बात आई है गुल। तुम उनसे खुद ही क्यों नहीं कह देती कि तुम अलग कमरे में रहना चाहती हो। अब हम लोगों को शांति से पढ़ाई भी तो करनी है। अगर तुम ही कह दो तो सारी समस्या का समाधान हो जायेगा," मैंने उससे धीरे से कहा।

"बात तो तुम ठीक कह रही हो। हां, अकेले अपने कमरे में सुविधा तो होगी।"

अम्मू गुल के घर से करीब एक घंटे के बाद लौटीं। मैंने जैसे ही कार की आवाज सुनी, मैं बाहर गई। गुल भी मेरे पीछे आ गई। अम्मू की कार के पीछे एक दूसरी कार थी। अम्मू की कार में गुल की मम्मी बैठी थीं। कार रुकते ही गुल की मम्मी कार से उतरीं। उन्होंने गुल को चिपटा लिया और प्यार किया, जैसे कि कुछ हुआ ही न हो और बोलीं, "हम लोग तुमको वापस घर ले जाने के लिये आये हैं। गुल, मेरी बिटिया।" उसके पापा भी बोले, "डॉ. लता तो गजब की हैं।"

गुल की मम्मी अम्मू से बोली, "डॉक्टर लता, हम सब आपके बड़े एहसानमंद है। आपको कैसे धन्यवाद दूं! काश कि हम लोग आपसे पहले ही मिल गये होते। गुल, चलो हमें जल्दी से घर पहुंचना है।"

गुल तो जैसे इसी पल का इंतजार कर रही थी। उसने दौड़कर अपनी कार का दरवाजा खोला, पीछे की सीट पर विराजमान हो गई और मेरी तरफ देखकर मुस्कराई। अम्मू और मैंने उसे विदा किया।

उन सबके जाने के बाद हम दोनों ड्राइंगरूम में आ गये और मैंने अम्मू से कहा, "अम्मू, आपने उनसे क्या कहा?"

"सोना, गुल के मां-बाप दिल के अच्छे हैं लेकिन बेचारों को एच.आई.वी. इंफेक्शन के बारे में कुछ भी नहीं पता है। मैंने उन्हें समझाया कि यह छूत की बीमारी नहीं है। उनसे यह भी कहा, "आप लोगों ने गुल को पाला है, उसकी देखभाल आगे भी आप ही को करनी पड़ेगी।" वे दोनों समझ गये। ईश्वर को लाख-लाख धन्यवाद। मैंने उनसे यह भी कहा कि वे जब भी चाहें मुझसे बात कर सकते हैं। सोना, लेकिन तब भी मुझे विश्वास नहीं था कि वे मेरी बात मानेंगे। आखिर में मैंने यह भी कह दिया कि अगर गुल को रखने में उन्हें कोई भी आपत्ति है तो गुल हमेशा के लिये मेरे पास रहेगी। मैंने जैसे ही यह कहा, उसके पापा मेरी तरफ देखकर बोले, "गुल हमारी बच्ची है, हमने

उसे पाला है, बड़ा किया है, हम लोग उसकी देखभाल करेंगे। हम कभी-कभी आपको तंग जरूर करेंगे।"

"हां हां, किसी समय भी," मैंने उनसे हाथ मिलाया, गुल की मम्मी से भी हाथ मिलाया और मैं चलने को हुई। तभी उसके पापा ने गुल की मम्मी से कहा, "अब ज्यादा देर न करो, हम अपनी बिटिया को अभी लौटा लायेंगे।" गुल की यह कहानी है।

अम्मू के लिये मैं गर्व से भर गई, मैंने कहा, "अम्मू अब तक तो गुल अपने घर पहुंच गई होगी न?"

"हां हां।"

मैंने गुल के घर में टेलीफोन मिलाया। गुल ने फोन उठाया।

"हलो! अरे सोना, गुल बोल रही हूं। सचमुच तुमको मैं दिल से धन्यवाद दे रही हूं। अपनी अम्मू से प्लीज मेरा धन्यवाद कहना।" इतना कहकर उसने टेलीफोन रख दिया। मैंने अम्मू से कहा, "गुल बड़ी कोमल हृदया है। वह आसानी से यह भुला नहीं पायेगी।"

"कल जब तुम उसे मिलो, उससे फिर से दोहरा देना कि वह जब भी चाहे या जब कभी उसे ऐसा लगे कि वह वहां अनचाही है, वह मेरे घर में रह सकती है। इसमें क्या बात है, फिर तो मेरी दो बिटियां हो जायेंगी।" अम्मू का चेहरा चमक गया, "सोना मुझे बड़े जोर की नींद आ रही है," इतना कहकर अम्मू सोने चली गईं। मैं अपने कमरे में आ गई। मैंने खिड़की खोल दी। चांदनी छिटककर मेरे बिस्तर पर पड़ रही थी। रातरानी के फूलों की महक मेरे कमरे में फैल गई। मन खुशबू से भर गया।

बिस्तर पर लेटते ही मुझे गुल का चेहरा याद आ गया। काश कि उसे इस तरह की परेशानी न झेलनी पड़ती। वैसे ही वह इतनी दुबली-पतली है। असल में उसको और उसके घरवालों को बाजारू, अटर-सटर और हर समय तली-भुनी चीजें खाने में अच्छा लगता है। गुल भी खूब चटोरी है। फल और हरी सब्जियां उसे जरा नहीं भाती हैं।

और हमारी अम्मू बिल्कुल उलटी हैं। हम लोगों के सुबह के नाश्ते में दलिया और फल जरूर होते हैं। साथ-ही-साथ एक गिलास दूध पीने का नियम है। अम्मू के साथ सुबह मैं भी पौ फटने से पहले उठ जाती हूं और कसरत करती हूं। अम्मू ने मुझे प्राणायाम और योगासन सिखाये हैं, हम दोनों साथ-साथ करते हैं। इतना ही नहीं, सुबह के नाश्ते के साथ मुझे कुछ दवाइयां भी खानी पड़ती हैं।

गुल से मेरी दोस्ती अब और भी पक्की हो गई। वह अक्सर मुझे अपनी निजी परेशानियां बताती रहती थी। एक दिन, वह कुछ ज्यादा परेशान लगी। मैंने पूछा, तो उसने मुझे चुपके से बताया, "सोना! मुझे अभी भी लगता है कि मम्मी के मन में डर बैठा है कि कहीं मेरे एच.आई.वी. की बीमारी उनके लड़के को न लग जाये। क्या करूं कुछ समझ में नहीं आता?"

"इसमें क्या बात है? तुम अपने आप उनसे कहो, कि तुम्हें अलग कमरा चाहिये, जिससे तुम शांति से पढ़ सको। तुम्हारी और उनकी समस्या हल हो जायेगी।"

गुल मेरी तरफ अविश्वास से देखने लगी। फिर वह संभलकर बोली, यह समस्या का समाधान तो है सोना! अगर कोई तुमको बाहर निकाल दे तो मन में बहुत बुरा लगता है। लेकिन अगर तुम अपने आप चली जाओ, तब लगता है कि जैसे तुम जीत गई हो। तुमने तो यह पहले भी सुझाया था और गुल मुस्कराकर बोली, "उस रात जब मैं तुम्हारे घर से लौटी थी मेरी चारपाई, भैया की चारपाई के पास फिर से डाल दी गई। जब हम सब अपनी-अपनी चारपाई के पास लेटे थे तो भैया ने हाथ बढ़ाकर मुझे चिकोटी काट ली। मैंने भी उसे एक चिकोटी काट ली। पता नहीं क्यों बड़ा अच्छा लगा, जैसे मैं अपनों के बीच पहुंच गई।" गुल चुप हो गई, उसने लंबी सांस ली।

अगले दिन सुबह-सुबह जब अम्मू और मैं नाश्ता करने ही बैठे थे तो गुल का फोन आया, मैंने फोन उठा लिया। वह बोले जा रही थी,

"सोना! आज सुबह भैया ने कहा, 'चलो आज चिड़ियाघर चलें।' बस मम्मी तैयार हो गईं और बोलीं, 'हम सब लोग चिड़ियाघर जायेंगे। बाहर ही खाना भी खायेंगे।' मैंने ऐलान कर दिया, 'मैं नहीं जाऊंगी।' उसी समय मैंने यह भी कह दिया, अब मैं अलग कमरे में रहूंगी जहां मेरी शांति से पढ़ाई हो। मेरी चारपाई भी उसी कमरे में रहेगी क्योंकि रात में मैं देर तक पढ़ती रहती हूं।"

मेरे पापा बोले, "भई तुम पढ़ो-लिखो दूसरे कमरे में, लेकिन रात में तुम हम लोगों के साथ हमारे कमरे में, जैसे हमेशा से सोती आई हो सोओगी।" पापा के बोलने के साथ ही साथ मम्मी ने कहा, "अगर गुल दूसरे कमरे में सोना चाहती है तो हर्ज ही क्या है? अब वह बड़ी हो गई है और उसे एकांत भी तो चाहिये न।"

"उसकी इच्छा," पापा ने कंधा उचकाकर इतना ही कहा और चलते बने। सोना! मेरे इतना कहने पर सच पूछो तो दोनों ने जैसे चैन की सांस ली और मेरी चारपाई मेरे पढ़ने वाले कमरे में पहुंचा दी गई।

"अब दूसरे कमरे में तुमको कैसा लग रहा है?"

"हां अच्छा लग रहा है। अपना कमरा अपने ही लिये। सोना तुम सचमुच सोने की हो।"

मैंने हंसकर कहा, "प्लैटिनम की नहीं?"

"नहीं प्लैटिनम तो स्टेनलैस स्टील की तरह लगता है। सोना तो हमेशा चमकता है।" मैं तो आसमान में पहुंच गई।

एक दिन स्कूल के बाद, गुल मेरे घर दिन बिताने मेरे साथ आ गई। अम्मू ने देखते ही उससे पूछा, "गुल तुम सारी दवाइयां खा रही हो, जो मैंने तुम्हे बताई थीं?"

"लेकिन आंटी वह दवाइयां किस लिये हैं?"

"वे एंटी रेट्रोविरल दवाइयां हैं। यह एच.आई.वी. इंफेक्शन व एड्स की बीमारी को उन्मुक्त कराने में सफल मानी गई। इसे खाने से शरीर की प्रतिरक्षीकरण करने की क्षमता बढ़ जाती है। इन दवाइयों में

एच.आई.वी. इंफेक्शन से जूझने की भी क्षमता है, पर गुल इनके साथ ताकत बढ़ाने वाला खाना भी खाना होगा। तुम्हारा स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। सोना तो इन्हें नियम से रोज खाती है। तुम भी बेटी, इन्हें रोज खाना।"

अम्मू के हाथ में अखबार से काटी हुई एक पर्ची थी। "यह मैंने क्लिनिकल इंफेक्शन डिजीज नाम की पत्रिका में से काटी है।" इसमें लिखा है। "सन् 1997 से 2003 के बीच भारत में एड्स से मरने वालों की संख्या काफी गिर गई थी। इसका कारण था कि एड्स के रोगियों को दी जाने वाली इन दवाओं के दाम कम हो गये थे, बल्कि सस्ते दामों की यह दवायें लोग आसानी से खरीद लेते थे।" हमारी तरफ देखकर अम्मू ने कहा, "इन दवाओं के साथ आप दोनों स्वास्थ्यवर्धक खाना ही खाइये। बाजार का अटर-सटर खाने से परहेज करिये। हां दवा खाना जरूर याद रखें।"

"लेकिन अम्मू! गुल और मेरे खून में तो एच.आई.वी. का वाइरस पहले से ही है। यह एड्स क्या बला है?"

"एच.आई.वी. का इंफेक्शन होनें से शरीर की प्रतिरक्षीकरण क्षमता बहुत कम हो जाती है। समय बीतने के साथ प्रतिरक्षीकरण क्षमता बराबर कम होती रहती है। यही बीमारी बढ़कर जानलेवा एड्स का रूप ले लेती है। एड्स बड़ी भयानक बीमारी है। इससे रोगी को छुटकारा नहीं मिल पाता, यह लाइलाज है। एड्स का रोगी शरीर से तो कमजोर होता ही जाता है, उसका स्वास्थ्य भी दिन-ब-दिन गिरता जाता है। अंत में उसकी मृत्यु हो जाती है।"

"बार-रे-बाप।" मैं हिल गई थी। गुल का मुंह सफेद हो गया। वह अम्मू की तरफ एकटक देख रही थी।

स्कूल में मुझे पता चला कि मिस बेला ने अगले बृहस्पतिवार से स्कूल में एड्स जागरूकता प्रोग्राम का प्रबंध कर लिया है। हर हफ्ते कोई-न-कोई विशेषज्ञ निमंत्रित किया जायेगा जो नवीं और दसवीं कक्षा की लड़कियों को एड्स के बारे में बतायेगा।

अगले बृहस्पतिवार को नवीं और दसवीं की लड़कियां स्कूल के हॉल में जमा हो गईं। सब खूब जोश में भरी थीं और सभी को एड्स के बारे में जानने की बड़ी उत्सुकता थी। वे सब यह भी सोच रही थीं कि उन्हे बहुत-सी नई बातें भी पता लगेंगी जो वे बहुत दिनों से जानना चाहती थीं। उनके बारे में लड़कियों ने अपने बड़ों से प्रश्न किये थे, लेकिन सभी बड़े लोगों ने उनको गोल-मोल जबाब दिया था।

बृहस्पतिवार को सब लड़कियां हॉल में इकट्ठी हो गईं। लड़कियां बिलकुल चुप बैठी थीं। मैंने सारी फाइलें मिस बेला की मेज पर रख दीं। आखिरी घंटा बजते ही मिस बेला हॉल में आ गईं। लड़कियां खड़ी हो गईं और नमस्ते करके बैठ गईं।

मिस बेला ने बोलना शुरू किया, “लड़कियों तुमने एच.आई.वी./ एड्स बीमारी के बारे में अवश्य सुना होगा। एच.आई.वी. अंग्रेजी के ह्यूमन इम्यून डेफीशियंसी सिंड्रोम का छोटा आकार या फॉर्म है और एड्स-एक्वायर्ड इम्यून डेफीशियंसी सिंड्रोम का छोटा आकार या फॉर्म है। तुम सब रोज ही इश्तहारों में, टी.वी. पर, और रेडियो पर इनके बारे में अवश्य सुनती होगी। तुम लोग सोचती होगी आखिर यह क्या बला है, इसके बारे में इतनी चर्चा क्यों हो रही है? वह इसीलिये है कि अगर किसी को एच.आई.वी. बीमारी लग गई हो तो उसका इलाज ठीक

समय पर किया जाये। अगर ठीक समय पर इलाज नहीं किया गया तो यह बीमारी एड्स में परिवर्तित हो जायेगी और एड्स जानलेवा बीमारी है। जो मनुष्य एड्स का शिकार हो गया तो समझो उसकी मृत्यु निश्चित है। हमारे देश में एड्स बीमारी बुरी तरह से फैल रही है। इसीलिये आज हम लोग यहां हॉल में जमा हुए हैं और मैं यह बताने के लिये आई हूं कि इस बीमारी से कैसे बचा जा सकता है।

अगर इस बीमारी से पीड़ित रोगी के शरीर का तरल पदार्थ किसी भी तरह स्वस्थ आदमी के शरीर में पहुंच जाता है, तो वह स्वस्थ आदमी भी इस जानलेवा बीमारी का शिकार हो जाता है। उदाहरण के लिये, अगर आप बहुत सख्त बीमार हैं और आपको खून की जरूरत है और आपको एच.आई.वी. या एड्स के मरीज का खून चढ़ा दिया जाये तो आपको भी यह रोग अवश्य लग जायेगा।

इस बीमारी की छूत और भी तरह से लग सकती है। उदाहरण के लिये इंजेक्शन की सुई से अगर एक रोगी को इंजेक्शन दिया गया और उसी सुई से किसी दूसरे स्वस्थ मनुष्य को भी इंजेक्शन दे दिया गया, तो स्वस्थ मनुष्य भी इस बीमारी का शिकार हो जायेगा।

आप सब लोग बड़ी हो रही हैं। आप सब देख रही होंगी कि जैसे-जैसे आप बड़ी होती जाती हैं आपके शरीर में परिवर्तन भी होते जाते हैं। लड़कियों का लड़कों की तरफ आकर्षण और लड़कों का लड़कियों की तरफ आकर्षण बढ़ जाता है। यह प्रकृति का नियम है। लड़कियां युवा होती हैं, शादी होती है, फिर एक मां बनती है। जब तुम लोग युवा अवस्था में पहुंचोगी, शादी होगी और पति के साथ रहोगी। पति के साथ शरीर का नजदीकी संबंध होगा। स्त्री-पुरुष के शरीर के नजदीकी रिश्ते को मैथुन या संभोग कहते हैं। मैथुन क्रिया से भी पुरुष के शरीर का तरल पदार्थ, वीर्य, स्त्री की योनि में पहुंचता है। यदि पुरुष इस बीमारी से पीड़ित है तो मैथुन करने वाली स्त्री को भी एच.आई.वी. की बीमारी अवश्य लग जायेगी।"

उसके बाद ही उन्होंने ब्लैक बोर्ड पर बड़ा-बड़ा लिखा, **एच.आई.वी./एड्स का वायरस एक व्यक्ति के शरीर से दूसरे व्यक्ति के शरीर में केवल तरल पदार्थ के आदान-प्रदान से होता है। शरीर के तरल पदार्थ का आदान-प्रदान केवल तीन तरीकों से ही हो सकता है।**

पहला–अगर किसी को जब खून की जरूरत हो तब खराब खून, रुधिर आधान या ब्लड ट्रांफ्यूजन के जरिये किसी दूसरे व्यक्ति को चढ़ाया जाये।

दूसरा–किसी व्यक्ति, जिसको यह बीमारी हो उसके शरीर पर इस्तेमाल की हुई सुई बिना उबाले हुए, वही सुई किसी स्वस्थ मनुष्य के शरीर में लगाई जाये।

तीसरा–रोग से पीड़ित मनुष्य अगर स्वस्थ प्राणी के साथ मैथुन करे और उसका वीर्य दूसरे के शरीर में पहुंचे।

चौथा–रोग से पीड़ित मां अगर बच्चे को स्तन से दूध पिलाये तो उसका स्वस्थ बच्चा भी रोग पकड़ लेता है।

मिस बेला ने जो कुछ लिखा था, उन्होंने उसे जोर-जोर से पढ़ा और यह भी कहा, "एच.आई.वी./एड्स से पीड़ित मां अपने दूध पीते बच्चे को भी यह जानलेवा रोग दे सकती है।"

उसके बाद ही एक लड़की खड़ी हो गई और उसने पूछा, "मैडम, यह कैसे पता चल सकता है कि एक लड़की जिस लड़के से शादी करने जा रही है, उस लड़के को एच.आई.वी./एड्स नहीं है?"

मिस बेला ने क्षण भर सोचकर कहा, "इस प्रश्न का उत्तर देना कठिन है। मैं किसी डॉक्टर को बुलाऊंगी। लड़कियों! तुम्हारे मन में कोई भी प्रश्न आये, तुम लोग डॉक्टर से बेहिचक पूछ सकती हो। देर हो रही है, बसें आपका इंतजार कर रही हैं। आज यहीं पर हम बंद कर रहे हैं।"

मैंने मिस बेला के पेपर्स उठाये और उनके साथ चली गई। जब मैं स्टाफरूम से बाहर निकली देखा कि गुल मेरा इंतजार कर रही है। मुझे

देखते ही शरारत से बोली, "हम लोगों को तो यह मैथुन वाली बात पहले से ही पता थी। मिस बेला ने असली बात तो बताई नहीं।"

"गुल तुम भी एक हो।" मुझे गुल पर थोड़ा गुस्सा आ गया। यह समय घर जाने का था। हम दोनों स्कूल के फाटक से बाहर बस के लिये भागे।

जब मैं घर पहुंची, अम्मू अस्पताल से लौट आई थीं। शाम को ठंड थी। मैंने अम्मू की शॉल लपेट ली। फिर मैंने अम्मू के लिए चाय बनाई और अपने लिये नींबू का शरबत बनाकर अम्मू के पास कुर्सी खिसकाकर बैठ गई। जैसे ही बैठी थी कि टेलीफोन की घंटी बजी। मिस बेला अम्मू से बात करना चाहती थीं। मैंने अम्मू को फोन पकड़ा दिया। जरा देर के बाद अम्मू ने बताया, "मिस बेला ने मुझे स्कूल में बुलाया है और अभी-अभी वह हमारे यहां आ रही हैं। क्या तुम्हारे स्कूल में एड्स जागरूकता पर कोई प्रोग्राम होने जा रहा है?"

"हां अम्मू। आज मिस बेला ने हम सब लड़कियों को बताया कि वह एक डॉक्टर को अगले बृहस्पतिवार को निमंत्रित करेंगी और हम सब उनसे सवाल पूछ सकते हैं।"

हमने जल्दी-जल्दी रात का खाना खा लिया और बाहर लॉन में टहलने निकले ही थे, तभी एक कार हमारे फाटक के पास रुकी। मिस बेला उस कार में से उतरीं। मैं दौड़कर गई और उनका स्वागत किया।

"मैडम, नमस्ते।"

"नमस्ते सोना," फिर वह अम्मू की तरफ मुड़ीं और कहा, "डॉक्टर लता! नमस्ते। मैं बेला हूं।"

मिस बेला ने अम्मू से हाथ मिलाया।

"अंदर आइये! हम आराम से बैठते हैं।"

अम्मू, मिस बेला को ड्राइंगरूम में ले गई। मिस बेला बैठ गईं और अम्मू उनके सामने के सोफे पर बैठ गई। मैं जल्दी से चौके में गई और ट्रे में पानी का गिलास ले आई। मिस बेला ने गिलास ले लिया। मैं

अम्मू के बराबर बैठ गई। थोड़ी देर तक वह दोनों स्कूल की और कुछ इधर-उधर की बातें करती रहीं। फिर मिस बेला ने कहा, “डॉक्टर लता, हमें आपका सहयोग चाहिये। हमने आपको फोन पर बताया था कि हम लोग एच.आई.वी./एड्स की जागरूकता के लिये स्कूल में एक प्रोग्राम करना चाहते हैं। यह खासतौर से नवीं और दसवीं क्लास की लड़कियों के लिये चाहते हैं। आज से यह प्रोग्राम शुरू हो गया है। पहले सत्र में मैंने ही उसके बारे में थोड़ा-सा बतलाया था कि एच.आई.वी. छूत कितनी खतरनाक और जानलेवा है। एक व्यक्ति को किस-किस प्रकार से हो सकती है और उससे बचने के लिये क्या उपाय किये जा सकते हैं। मुझे लगता है कि अब केवल डॉक्टर ही बच्चों को उसके बारे में अच्छी तरह से पूरी जानकारी दे सकती हैं।”

अम्मू का चेहरा खिल गया, बोलीं, “यह जानकर बड़ा अच्छा लगा कि आपने अपने स्कूल में ऐसा प्रोग्राम शुरू किया है। सचमुच, इस समय बहुत ही जरूरत है कि हम युवा और बच्चों को इसके बारे में पूरी जानकारी दें। खासतौर से हमारी लड़कियों को तो इसकी जानकारी जरूर होनी चाहिये कि यह बीमारी कितनी खतरनाक है और इससे अपने को कैसे बचाया जा सकता है। डॉ. लता, अगर आप थोड़ा-सा समय दे दें और स्कूल में एक दो सत्र ले लें तो हम आपके बड़े आभारी होंगे।”

“आभारी होने की क्या बात है? अपनी लड़कियों को जानकारी देने में मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी। मैं अवश्य आऊंगी। आप बताइये मैं आपके स्कूल में कब आऊं?”

“अगले बृहस्पतिवार को तीन बजे।”

“मैं जरूर आऊंगी।”

मिस बेला ने अम्मू को धन्यवाद देकर यह भी बताया कि उन्होंने पहले सत्र में लड़कियों को क्या-क्या जानकारी दी और एक लड़की ने प्रश्न भी किया था।

"वह प्रश्न क्या था मिस बेला?" अम्मू ने पूछा।

"जिस आदमी से एक लड़की की शादी हो रही है, यह कैसे पता चलेगा कि उस आदमी के खून में एच.आई.वी. का इंफेक्शन नहीं है?"

अम्मू ने फौरन कहा, "इसमें क्या? यह तो बड़ा आसान है। शादी के पहले हरेक लड़की और हरेक लड़के के खून की जांच होनी चाहिये। इसमें कोई भी बुराई नहीं है। अच्छा है कि पहले से ही पता लग जाये, बजाये इसके कि बाद में पछतावा हो।" मुझे अम्मू के शब्द बड़े ही विश्वसनीय लगे।

"डॉ. लता, यह बात तो आपको ही लड़कियों को बतानी पड़ेगी। इसके अलावा मैं सोचती हूं कि लड़कियों को यह भी बताना बहुत जरूरी है कि जिस पुरुष से एक लड़की की शादी हुई है वह केवल उसी के साथ संभोग या सेक्स करें। शादीशुदा होने के बाद अगर लड़के, लड़कियां अन्य लोगों के साथ नजदीकी रिश्ते बनायेंगे तो उन्हें एच.आई.वी. की छूत लग सकती है।"

उसी समय मैंने मिस बेला से प्रश्न किया, "लेकिन मैडम? इस तरह से सोचना तो बड़ा पुराणपंथी है। आज हम उस दकियानूसी तरह से क्यों सोचें?"

अम्मू और मिस बेला मेरा मुंह देखने लगीं। शायद वह मुझसे इस तरह के प्रश्न की आशा नहीं कर रही थीं। अम्मू ने ही जवाब दिया, "देखो सोना! यह दो अलग-अलग बातें हैं। एक तो मैं सचमुच सोचती हूं कि शादी के पहले हरेक लड़की और लड़के की खून की जांच जरूर होनी चाहिये। इससे दोनों आश्वस्त हो जायेंगे कि शादी के बाद वे लोग स्वस्थ वैवाहिक जीवन बितायेंगे।"

तब ही मिस बेला ने बात बदल दी और उन्होंने अम्मू से कहा, "सोना बड़ी ही समझदार लड़की है और उससे भी अच्छा यह है कि वह स्कूल की हेडगर्ल है," और मिस बेला जाने के लिये खड़ी हो गई। अम्मू और मैं उनको उनकी कार तक पहुंचाने गये।

मिस बेला के जाने के बाद हम घर के अंदर लौट आये। मैंने दरवाजा बंद किया और हम दोनों अपने-अपने बिस्तर पर सो गये।

अगले बृहस्पतिवार को अम्मू निश्चित समय पर स्कूल आ गईं। हमारी हेडमिस्ट्रेस और मिस बेला ने उनका स्वागत किया। लड़कियां पहले से ही हॉल में जमा थीं और मैं भी उनके साथ अम्मू के आने का इंतजार कर रही थी। जैसे ही वह लोग हॉल में आईं, मैंने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया। मुख्य अतिथि, अपनी अम्मू को मैंने फूलों का गुलदस्ता भेंट में दिया। मुझे बड़ा मजा आया जब हेडमिस्ट्रेस ने मुख्य अतिथि अम्मू से मेरा परिचय कराया,

"डॉक्टर, हमारी हेडगर्ल सोना से मिलिये।"

अम्मू ने मुस्कराकर मुझसे हाथ मिलाया और मैंने धीरे से उनके हाथ में चिकोटी काट ली। वह बोलीं, "सोनाजी! आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई," और हम दोनों एक-दूसरे को देखकर मुस्करा दिये।

हेडमिस्ट्रेस चली गईं। हॉल में बिल्कुल शांति थी। सब लड़कियों ने खड़े होकर अम्मू का स्वागत किया। मिस बेला ने अम्मू का परिचय देकर कहा, "डॉक्टर लता, आज आप एच.आई.वी./एड्स के बारे में हमारी लड़कियों को जागरूक करिये।"

अम्मू ने मिस बेला को धन्यवाद दिया और अपना भाषण शुरू किया,

"मिस बेला और प्यारी लड़कियों,

मैं मिस बेला की आभारी हूं कि इन्होंने मुझे आपके स्कूल में एच.आई.वी./एड्स के बारे में जानकारी देने के लिये आमंत्रित किया। अंगरेजी में एक्वायर्ड इम्यून डेफीशियंसी सिंड्रोम को संक्षेप में एड्स कहते है। पूरे संसार में आज, एड्स एक भयंकर बीमारी बनकर आई है। यह बीमारी एक वाइरस से शुरू होती है। इस वाइरस को अंग्रेजी में ह्यूमन इम्यून डेफीशियंसी वाइरस कहते हैं। इसको छोटे में एच.आई.वी. कहते हैं। अगर यह वाइरस किसी भी आदमी के शरीर में पहुंच जाता

है तो उस आदमी के शरीर की प्रतिरक्षीकरण शक्ति जिसे अंग्रेजी में इम्यूनिटी कहते हैं, कम होती जाती है और धीरे-धीरे रोग भयंकर रूप धारण कर लेता है। रोग से पीड़ित मुनष्य को एच.आई.वी. पोजिटिव कहा जाता है। जब तक कि रोगी के खून की जांच नहीं होती, तब तक उस रोगी को अपने आप कुछ नहीं महसूस होता और वह धीरे-धीरे दूसरी बीमारियों का शिकार होता जाता है। एच.आई.वी. बीमारी से एड्स बीमारी तक पहुंचने में रोग पीड़ित मनुष्य को तीन से आठ वर्ष लगते हैं। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि संसार में प्रतिदिन 16,000 व्यक्ति इस बीमारी का शिकार होते हैं। भारत में यह भयंकर बीमारी आग की तरह फैल रही है। इसीलिये आज बहुत जरूरी है, आप सबको इस रोग की पूरी जानकारी मिले। हमें भी जानना है कि किसी भी व्यक्ति को यह बीमारी तो नहीं है और यदि कोई व्यक्ति एच.आई.वी. बीमारी का शिकार बन चुका है तो उसका इलाज कैसे हो, कि उसकी बीमारी एड्स में परिवर्तित न हो। एड्स की बीमारी रोगी को सीधे मौत के मुंह में धकेल देती है।

मुझे प्रसन्नता है कि आपके स्कूल ने इस प्रोग्राम के बारे में सोचा और इस रोग के बारे में जानकारी दी। अगर किसी रोग पीड़ित व्यक्ति को एच.आई.वी. की छूत के बारे में जल्दी पता लग जाता है तो उसका इलाज हो सकता है और वह एड्स तक पहुंचने से बच सकता है। इसीलिये यह बहुत ही जरूरी है कि आप सबको इस भयंकर रोग के बारे में पूरी तरह से जानकारी हो और आप इससे अपने को बचा सकें।

अगर सतर्कता नहीं बरती गई तो कोई भी मनुष्य इस रोग का शिकार हो सकता है। लड़कियों को बहुत सतर्क रहने की आवश्यकता है। अनजाने में वह इस रोग का शिकार हो सकती है और जिंदगी भर रोग पीड़ित रह सकती है। यदि लड़कियां चाहती हैं कि वे स्वस्थ और प्रसन्न जीवन बितायें, उनको अपने व्यवहार पर कड़ी नजर रखनी पड़ेगी।

पिछले हफ्ते आपको बताया गया था। आज मैं फिर वही दोहरा रही हूं कि एच.आई.वी. की बीमारी केवल शरीर के तरल पदार्थों के आदान-प्रदान से ही संभव है। यह बीमारी खून लेने से भी हो सकती है, यदि किसी रोगी के शरीर में इस्तेमाल की गई इंजेक्शन की सुई से किसी स्वस्थ मनुष्य के शरीर में इंजेक्शन दिया गया, उससे भी हो सकती है।

स्त्री-पुरुष के मैथुन क्रिया में तरल पदार्थ का आदान-प्रदान होता है। इस क्रिया में पुरुष के लिंग का तरल वीर्य स्त्री की योनि में जाता है। इसी क्रिया से पुरुष का वीर्य स्त्री के गर्भाशय में पहुंचता है और स्त्री को गर्भ रह जाता है। नौ महीने पेट में रहने के बाद स्त्री के बच्चा पैदा होता है और वह मां बनती है। यदि स्त्री-पुरुष में से एक भी एच.आई.वी. का रोगी है तो इस मैथुन क्रिया से वह दूसरे स्वस्थ साथी को भी यह छूत दे देगा। समय बीतने पर वह साथी भी इस रोग का शिकार हो जायेगा। आज का लैक्चर मैं यहीं खत्म करती हूं। अगले बृहस्पतिवार को मैं फिर से आप लोगों से इसी बारे में बात करूंगी।"

सब लड़कियां अम्मू की बात चुपचाप बड़े ध्यान से सुन रहीं थीं। साथ में सब चकित भी थीं।

मिस बेला ने अम्मू को धन्यवाद दिया और उन्हें कार तक पहुंचाने गईं।

इस प्रोग्राम में लड़कियों को बड़ी दिलचस्पी हो गई। लड़कियां हॉल से बाहर बरामदे में आ गईं और वे आपस में फुसफुसाहट करने लगीं।

अगले दिन स्कूल में आते ही तीन-चार लड़कियां साथ खड़े होकर एच.आई.वी. व एड्स के बारे में चर्चा करती रहीं। उनके बीच गर्मजोशी से बातें भी होती रहीं। बहुत-सी लड़कियों ने मन में प्रश्न सोचकर रख लिये थे कि अगले बृहस्पतिवार को वे सब उन प्रश्नों को पूछेंगी। जो लड़कियां सत्र में नहीं आ पाईं थीं, वे सब भी जानकारी पाने के लिये ज्यादा उत्सुक थीं और सब अगले बृहस्पतिवार का इंतजार कर रहीं थीं।

9

एड्स के प्रोग्राम को लेकर स्कूल में बड़ी चर्चा थी। बृहस्पतिवार को समय से पहले लड़कियां हॉल में जमा होने लगीं और आगे की सीटों पर बैठने के लिये उनमें धक्का-मुक्की होने लगी। पर जल्दी ही सब कुछ ठीक हो गया।

मिस बेला अम्मू के इंतजार में बाहर खड़ी थीं। अम्मू की कार समय से आ पहुंची। अम्मू कार के बाहर निकली और मिस बेला के साथ हॉल में आ गईं। सारी लड़कियां खड़ी हो गईं। फिर सब अपनी-अपनी सीटों पर बैठ गईं। मिस बेला ने अम्मू का फिर से स्वागत करके उनसे बोलने को कहा। अम्मू बोलने लगीं,

"मिस बेला और मेरी प्यारी बेटियों,

मैं आपके स्कूल में एक बार फिर आकर बहुत खुश हूं। आज मैं एक खास विषय पर आपको कुछ बातें बताना चाहती हूं। पिछले बृहस्पतिवार को मैंने आपको बताया था कि एच.आई.वी. की बीमारी का वाइरस कैसे लग जाता है और यह भी बताया था कि यदि कोई एच.आई.वी. का शिकार हो जाये तो उसका इलाज कैसे किया जाये, जिससे कि वह एड्स अवस्था तक न पहुंच पाये।

अब आप सब बड़ी हो रही हैं और आप लड़कों से आकर्षित भी होने लगी हैं। हो सकता है कुछ लड़कियों के मित्र लड़के हों। जब किसी लड़की की किसी लड़के से मित्रता होती है, तो वे दोनों अकेले में बात करने को लालायित हो जाते हैं और आपस में नजदीकी संबंध भी करना चाहते हैं।

यदि आप अकेली हैं और एकांत में एक लड़के के साथ हैं, तो यह

संभव है कि वह लड़का आपसे सेक्स संबंध अथवा मैथुन क्रिया भी करना चाहे। यह सेक्स संबंध अथवा मैथुन संबंध किसी भी लड़की के लिये, एक बहुत ही गंभीर बात है।

इससे भी अधिक परेशानी की बात यह है कि अगर वह आपका युवा मित्र एच.आई.वी. या एड्स बीमारी से पीड़ित है तो इस संबंध से आपको भी यह बीमारी लग जायेगी और आप अनजाने में एच.आई.वी. का शिकार हो जायेंगी।

इस रोग का शिकार होने के बाद बहुत दिनों तक आपको पता भी नहीं चलेगा कि आपको यह बीमारी है।

लड़कियों! आप लोगों को इससे भी ज्यादा एक और खतरा हो सकता है, जिसके लिये आप लोगों को हर समय बड़ी ही सावधानी बरतनी पड़ेगी। अक्सर ऐसा होता है कि अकेली लड़की को पाकर कोई दुष्ट पुरुष उस लड़की से जबरदस्ती मैथुन करे। इस जबरदस्ती मैथुन करने को बलात्कार कहते हैं। यह दंडनीय अपराध है। इसके लिये लड़कियों को सतर्क रहना चाहिये।

लड़की को अकेले अंधेरे व एकांत में किसी पुरुष के साथ कभी नहीं जाना चाहिये। आप सब याद रखिये कि समूह में रहने से लड़की सदा अपने को सुरक्षित रख सकती है। अब आप लोग प्रश्न कर सकती हैं," यह कहकर अम्मू बैठ गईं।

सामने की सीट पर बैठी जॉय ने हाथ उठा दिया और खड़ी हो गई, "डॉ. साहब! क्या यह ठीक है कि पहले एक लड़के और लड़की में प्यार होता है और प्यार से दो शरीरों का नजदीकी रिश्ता मैथुन और मैथुन से एड्स होता है?"

अम्मू ने कहा, "प्यार करना एक बहुत ही संवेदनशील भावना है। प्यार, शिशु और मां के बीच में होता है, भाई और बहन के बीच होता है, दो मित्रों में होता है। आप अपने पालतू कुत्ते या किसी दूसरे जानवर को भी प्यार करती हैं, लेकिन जब एक लड़की और एक लड़का

एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं और उनकी स्नेह क्रिया दोनों को सेक्स अथवा मैथुन की ओर खींच ले जाती है। लेकिन मैथुन क्रिया से एच.आई.वी./एड्स केवल तभी हो सकता है, अगर मैथुन क्रिया करने वालों में से एक भी एच.आई.वी./एड्स का रोगी हो। वह रोगी अपने साथी को मैथुन करके इस रोग की छूत दे सकता है। कोई और प्रश्न?"

बहुत लड़कियों ने हाथ ऊंचे कर दिये।

अम्मू ने कहा, "पीछे की बेंच पर बैठी लड़कियां प्रश्न करें।" कई हाथ उठ गये। अम्मू ने टीना की तरफ उंगली से इशारा किया। टीना खड़ी हो गई।

"डॉ. साहब! अगर एक स्वस्थ मनुष्य किसी एच.आई.वी. अथवा एड्स के रोगी के रक्त को अथवा शरीर से निकले तरल पदार्थ पसीने आदि को छू ले तो क्या उससे भी उसे बीमारी हो सकती है?"

"केवल छूने से यह बीमारी बिल्कुल नहीं लग सकती। रोगी का पसीना लगने से इस बीमारी की छूत नहीं लगती। यह भी याद रखो कि एक-दूसरे को चूमने अथवा मच्छर के काटने से भी इस बीमारी की छूत नहीं लगती। हां अगर आपकी खाल पर कोई जख्म अथवा फोड़ा है या शरीर के किसी अंग की खाल फटी हुई है और वह रोगी के किसी जख्म को छू जाये, तब संभव है कि आपके शरीर में एच.आई.वी. का वाइरस आ जाये। अगर कभी आपके मन में कुछ भी शक या परेशानी लगे कि कहीं छूत तो नहीं लग गई तो मेरी सलाह है कि एक डॉक्टर के पास जाकर सलाह लीजिये और किसी अस्पताल में एच.आई.वी./एड्स जांच-सेंटर में जाकर अपने खून की जांच अवश्य करा लें। इससे आप चिंतारहित हो जायेंगी और आपका मन भी शांत हो जायेगा। किसी ऐसी स्थिति से गुजरने के तीन महीने के बाद ही अपने खून की जांच कराना ठीक है। आप सब मेरा टेलीफोन नंबर लिख लीजिये और आप किसी समय भी मुझे फोन करके कोई भी बात पूछ सकती हैं।"

अब पिद्दी-सी सुरा खड़ी हो गई और उसने पूछा, "डॉक्टर, यह कैसे पता चले कि एक दूल्हा या उसकी होने वाली दुल्हन इस बीमारी की शिकार तो नहीं है?"

सब लड़कियां खुसर-फुसर करके हंसने लगीं पर, अम्मू ने कहा, "तुम्हारा सवाल बहुत अच्छा है। किसी आदमी को इस रोग का पता सिर्फ अस्पताल में खून-जांच से ही लग सकता है। मलेशिया में जोहोर राज्य में शादी के पहले हर स्त्री-पुरुष के खून की जांच होती है। इस संदर्भ में वहां एक कानून बनाया गया है। उसके तहत यह नियम है कि 'बिना खून-जांच के निकाह नहीं।' जैसे ही शादी के लिये रजिस्ट्रेशन होता है, शादी करने वाले को एक फॉर्म दिया जाता है, और शादी करने वाले को इसे खुद ही भरना पड़ता है। इसमें शुरुआत होती है खून-जांच से। दोनों शादी करने वालों को जांच का परिणाम बताया जाता है। यह कानून 2001 से लागू किया गया है।"

"भारत में क्या होता है?" सुरा ने दूसरा प्रश्न किया।

"अभी तक केवल तीन उदाहरण मिले हैं, जिनमें शादी से पहले दोनों शादी करने वालों की खून की जांच की गई है। पंजाब का मनुके गांव, जो लुधियाने से पचपन किलोमीटर दूर है, वहां की पंचायत ने कुछ वर्ष पहले ऐसा ही निर्णय लिया है। आंध्र प्रदेश भी कुछ ऐसा ही बिल बनाने को सोच रहा था। फिर उन लोगों ने विचार स्थगित कर दिया। तमिलनाडु के नामाक्कल जिले में कुछ परिवारों ने मांग की है कि शादी से पहले लड़की और लड़के के पास एच.आई.वी. नेगेटिव का सर्टिफिकेट होना जरूरी है।"

"डॉक्टर साहब! अगर किसी को पता लगे कि उसको एच.आई.वी. का इंफेक्शन है तो वह क्या करे?" गुल ने पूछा।

"उसे फौरन डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिये और उसे बराबर एंट्रीरिट्रोविरल दवायें लेनी चाहिये।"

"लेकिन डॉक्टर, बहुत लोगों को तो यह भी नहीं पता होता है कि

उन्हें एच.आई.वी. का इंफेक्शन है और अगर इस तरह के व्यक्ति की शादी कर दी जाये, तब तो निश्चय ही बीमारी फैलेगी। ऐसे में क्या करना चाहिये?" मोना ने नया प्रश्न सामने खड़ा कर दिया।

"तुमने बिल्कुल पते की बात कही है। इसीलिये मलेशिया में शादी के पहले शादी करने वाले का खून-जांच करना शुरू किया गया है। अगर हम लोगों को इस भयानक बीमारी से बचना है तो हम लोगों को भी इस तरह का कानून बनाना पड़ेगा। मुझे तो इसमें कोई बुराई नहीं लगती और यदि किसी व्यक्ति को पता लग गया है कि वह इस बीमारी का शिकार है तो उस व्यक्ति को अपने साथी से मैथुन अथवा संभोग करने में सावधानी बरतनी चाहिये।"

"मैडम, 'मैथुन में सावधानी' करने का अर्थ क्या है?"

"उस व्यक्ति को मैथुन के समय कंडोम का इस्तेमाल करना चाहिये। कंडोम गर्भ-निरोधक एक रबड़ की थैली होती है। मैथुन के समय पुरुष अपने लिंग पर कंडोम को चढ़ाकर ही मैथुन करें। यह कंडोम उसके शरीर का तरल पदार्थ, वीर्य, स्त्री के शरीर में जाने से बचा लेगा।" अम्मू यह कहकर भावुक हो गई।

"सबको पता है कि जो पैदा हुआ है, वह एक-न-एक दिन अवश्य मरेगा। जीवन का अंत मृत्यु है। यह सत्य जानने पर भी कोई भी मरना नहीं चाहता। लंबी बीमारी और अकाल मृत्यु बहुत दुखदायी होती है। एच.आई.वी./एड्स के बारे में पूरी जानकारी होने से रोगी का ठीक समय पर ठीक से इलाज करवाकर उसे अकाल मृत्यु से बचाया जा सकता है।"

"लेकिन कैसे?" गुल ने प्रश्न किया।

"डॉक्टर की बताई हुई दवाइयां खायें। स्वास्थ्यवर्धक भोजन करें, रोज कसरत करें और ईश्वर को कभी न भूलें।"

जॉय ने खड़े होकर दूसरा प्रश्न किया, "डॉक्टर, एड्स रोग के लक्षण क्या होते हैं? हमें कैसे पता चले?"

"मैं फिर से दोहराती हूं। अगर एच.आई.वी. रोगी के शरीर का तरल पदार्थ किसी तरह भी स्वस्थ मनुष्य के शरीर में पहुंच जाये तो वह भी एच.आई.वी. का शिकार हो जायेगा। एच.आई.वी. की छूत लगने के बाद, समय बीतने पर वही रोग एड्स में परिवर्तित हो जायेगा। अंग्रेजी में इसी बीमारी को एक्वायर्ड इम्यून डेफीशियंसी वाइरस या एच.आई.वी. की बीमारी कहते हैं। छूत लगने से जब यह बीमारी, एड्स में परिवर्तित हो जाती है, तब उस रोगी के शरीर की रोध-क्षमता शक्ति जिसे अंग्रेजी में इम्यूनिटी कहते हैं, कम हो जाती है। एड्स कोई विशेष लक्षण अलग से नहीं दिखाता है बल्कि यह रोग, रोगी को उलझन बढ़ाने वाले भिन्न-भिन्न बीमारियों के लक्षण दिखाता है।"

गौरा खड़ी हो गई और उसने पूछा, "डॉक्टर, यह कैसे पता लगे कि व्यक्ति एड्स का रोगी है?"

"मुझे लगता है, हम लोगों को एक बार और मिलना पड़ेगा, जिससे आपको अपने प्रश्नों का उत्तर पाकर आपकी समस्याओं का समाधान हो जाये। चलिये, हम लोग अगले बृहस्पतिवार को फिर मिलते हैं।"

अम्मू ने अपनी घड़ी देखकर मिस बेला की तरफ देखा। मिस बेला बोलीं, "डॉक्टर लता, अगर आप हमारी लड़कियों को कुछ और समय दे सकें, इससे अच्छा क्या होगा। लड़कियां सचमुच एच.आई.वी./एड्स के बारे में जानकारी पाने के लिये बड़ी इच्छुक हैं।"

जैसे ही अम्मू और मिस बेला बाहर गईं, सारी लड़कियां बातें करने लगीं। गौरा, मोनिका को चिढ़ाकर बोली, "मोनिका, सचेत रहना तुम्हें अपने फ्रेंड्स से छूत लग सकती है," कहकर वह भाग गई।

पर एक बात बड़ी अच्छी हुई कि हम सबकी झिझक गायब हो गई। पहले सारी लड़कियां सेक्स या स्त्री-पुरुष की सेक्स संबंधी बातों से कतराती थीं और चुप्पी साधे रहती थीं या चोरी छिपे बातें करती थीं, लेकिन अब वह एच.आई.वी./एड्स तथा गर्भ व कंडोम, रबड़ की थैली तथा शादी के पहले सेक्स आदि की बातें खुलकर करने लगीं।

बृहस्पतिवार आ गया। इंटरवल के बाद लड़कियां हॉल के बाहर जमा हो गईं। इस सत्र में टीचरें भी आना चाहती थीं। मिस बेला ने मुझसे टीचरों के लिये कुछ और कुर्सियां रखने को कहा। बाहर मिस बेला अम्मू के आने की प्रतीक्षा कर रहीं थीं। चार और टीचरें भी आ गईं। अम्मू आ गईं, मिस बेला ने अम्मू से सबका परिचय करवाया।

सत्र शुरू होने से पहले हेडमिस्ट्रेस भी आ गईं। उन्होंने स्कूल में एच.आई.वी. तथा एड्स की जानकारी प्रोग्राम में भाग लेने के लिये अम्मू को विशेष धन्यवाद दिया और यह भी कहा, "डॉक्टर लता। आपके जानकारी प्रोग्राम से हमारे स्कूल में भारी बदलाव आया है। स्कूल की लड़कियों को यह एच.आई.वी. तथा एड्स की जानकारी केवल एक डॉक्टर ही दे सकती थी। हम आपके बड़े आभारी हैं कि इस प्रोग्राम में आपने इतनी अच्छी तरह से जानकारी दी है। आपकी वार्ता ने लड़कियों तथा हम सबको एच.आई.वी. व एड्स से आगाह कराया है। आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।"

अम्मू ने भी कहा, "मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपने अपने स्कूल में यह प्रोग्राम किया। भारत में यह बीमारी बुरी तरह से फैल रही है। इस समय यह बहुत जरूरी है कि हम अपने बच्चों को इस बीमारी से किसी तरह बचायें। हमारे बच्चों के पास अगर एच.आई.वी. तथा एड्स के बारे में जानकारी होगी तो वे लोग इसका शिकार नहीं हो सकते। इससे ज्यादा जरूरी है कि बच्चों की झिझक मिटे और वे निडर होकर प्रश्न करें, और उन्हें उनके प्रश्नों का सही उत्तर व जानकारी मिले। हम सबको मिलकर झिझक से दूर होना चाहिए।" मिस बेला ने

जोर से कहा, "अब, डॉ. लता एच.आई.वी. तथा एड्स के बारे में पावर प्वाइंट प्रस्तुत करेंगी। उनकी प्रस्तुति के बाद आप लोग उनसे प्रश्न पूछ सकती हैं। आप सब उनकी प्रस्तुति पूरे ध्यान से देखें व सुनें।"

अम्मू परदे के पास प्वाइंटर लेकर गईं और उन्होंने कहना शुरू कर दिया, "इस प्रस्तुति से आप लोग एच.आई.वी. के बारे में जो कुछ भी जानना चाहती हैं, वह सब पता लगेगा। आप लोग ध्यान से देखिये और सुनिये। आपको जहां कहीं भी समझ में न आये, आप प्रश्न कीजिये। इस प्रस्तुति के बाद मैं आप सबको जानकारी के लिये एक पुस्तिका भी दूंगी।"

उनके कहने के साथ-ही-साथ परदे पर साफ चित्र दिखाई देने लगा।

"अंग्रेजी में एक्वायर्ड इम्यून डेफीशियंसी सिंड्रोम को छोटे में एड्स कहते हैं। इस बीमारी का वाइरस होता है।

अंग्रेजी में इस वाइरस का नाम है, ह्यूमन इम्यून डेफीशियंसी वाइरस। जिसे संक्षेप में एच.आई.वी. कहते हैं। खून में एच.आई.वी. का वाइरस आ जाने के बाद, रोगी को एड्स की बीमारी तक पहुंचने में कई वर्ष लग जाते हैं।"

अम्मू ने प्वाइंटर 'कई वर्ष' शब्द पर रखकर कहा, "रोग लगने के बाद सबसे दुखदायी समस्या यह होती है कि रोगी को बहुत दिनों तक इस रोग का पता ही नहीं चल पाता। शुरू में इस रोग के कोई विशेष लक्षण नहीं दिखाई देते हैं, पर यह बीमारी धीरे-धीरे शरीर में फैलती जाती है और रोगी के शरीर की रोध क्षमता, जिसे अंग्रेजी में इम्यूनिटी कहते हैं, उसे खत्म करती जाती है। रोध क्षमता कम होने से एच.आई.वी. का रोगी अनेक बीमारियों का शिकार होता जाता है।"

इसके बाद, परदे पर दूसरा चित्र आ गया। उसके नीचे लिखा था,

एच.आई.वी. का वाइरस स्वस्थ मनुष्य के शरीर में निम्न प्रकार से पहुंचता है

– एच.आई.वी. के रोगी के साथ मैथुन या संभोग करने से
– एच.आई.वी. के रोगी का खून स्वस्थ मनुष्य को दिये जाने से
– एच.आई.वी. के रोगी के शरीर में दिये गये इंजेक्शन की सुई को बिना उबाले किसी स्वस्थ मनुष्य के शरीर में इंजेक्शन दिये जाने से।
– एच.आई.वी. से पीड़ित मां अपना तरल दूध पिलाकर बच्चे को भी यह छूत दे देती है।

"आप सब इसको ध्यान से पढ़िये और अगर कोई सवाल पूछना चाहती हैं तो पूछिये।"

सब लड़कियां देर तक परदे पर लिखा हुआ पढ़ती रहीं। अम्मू ने फिर तीसरी स्लाइड बदली। परदे पर इस बार लाल रंग से लिखा हुआ था,

ध्यान दें, एच.आई.वी./एड्स की बीमारी निम्न कारणों से नहीं लगती

– छूने से
– पसीने से
– मच्छर के काटे जाने से
– एक साथ काम करने से
– एक साथ खाना खाने से व एक-दूसरे के कपड़े पहनने से
– एक ही टॉयलेट का इस्तेमाल करने से
– एक-दूसरे को चूमकर प्यार करने से

जॉय ने हाथ उठाकर पूछा।

"मैडम, आपके कहने का मतलब है कि स्वस्थ लड़की एच.आई.वी./एड्स के मरीज के साथ बिना डर के घूम-फिर सकती है? उसके साथ रहकर उसको छूत नहीं लगेगी?"

"बिल्कुल ठीक, आप सबको पहले ही बताया गया है कि इसकी छूत केवल शरीर के तरल पदार्थ के आदान-प्रदान से ही लग सकती है।

हां, यदि आपके शरीर पर कोई खुला जख्म है या कहीं पर आपकी त्वचा फटी हुई है और शरीर का यह भाग एच.आई.वी. रोगी के शरीर के जख्म के तरल पदार्थ को ले ले, तब भी छूत लग सकती है। इसके लिये कुछ पूर्वोपाय करने की जरूरत है। रोगी को अपना खुला घाव हमेशा पट्टी बांधकर, ढंककर रखना चाहिये, जिससे वह किसी को छूत न दे सके। स्वस्थ मनुष्य को भी रोगी के साथ समय बिताकर अपने हाथों को हमेशा साबुन से धोना चाहिये। यह पूर्वोपाय करने से आप समझ लें कि आप सुरक्षित हैं।"

जॉय ने फिर प्रश्न किया, "मैडम, एच.आई.वी. की छूत लगने के कितने दिनों के बाद रोगी को एड्स होता है?"

"अच्छा प्रश्न है। छूत लगने के बाद पहले तीन से चार साल तक तो रोगी को कुछ पता ही नहीं चलता। चार पांच साल बीतने पर, रोगी के शरीर में रोग के कुछ लक्षण उभरने लगते हैं। इन लक्षणों में रोगी को खांसी, जुकाम, कफ या बुखार हो जाता है। यही लक्षण अगर किसी मनुष्य के शरीर में ज्यादा दिन तक रहें तो उसको गंभीरता से लेना चाहिये। मनुष्य में एच.आई.वी. की छूत केवल खून-जांच से ही पता लगती है। यदि किसी को इनमें से कोई भी बीमारी अधिक समय तक रहे तो खून की जांच अवश्य करवानी चाहिये।"

अब परदे पर एक लेखन फिर आ गया। उसमें लिखा था,

एच.आई.वी. के लक्षण

– बार-बार हल्का बुखार आ जाना

– बिना कारण शरीर का वजन कम होना

– एक माह से ज्यादा दस्त आना

– गले की नसों में सूजन होना

– खाल पर चर्म रोग दिखाई देना

– बराबर गले में खराश या कफ रहना

– सिर दर्द बना रहना

– सांस लेने में परेशानी होना

– बार-बार निमोनिया हो जाना

– टी.बी. बीमारी का होना

यह दिखाने के बाद अम्मू फिर से कहने लगीं, "अगर किसी मनुष्य को इनमें से दो या तीन रोगों के लक्षण एक साथ हों तो उसे डॉक्टर की सलाह अवश्य लेनी चाहिये और रोग का पता लगते ही रोगी को डॉक्टर की बताई दवाइयों का सेवन नियम से करना चाहिये। यह भी बहुत जरूरी है कि एच.आई.वी. से पीड़ित मनुष्य पौष्टिक खाना खाये। नियम से शारीरिक कसरत करे। इससे रोगी का स्वास्थ्य ठीक रहेगा। अगर एच.आई.वी. का रोगी इन नियमों का बराबर पालन करेगा तो उसका स्वास्थ्य ठीक होने लगेगा और उसके शरीर में छूत से लड़ने की शक्ति भी बढ़ जायेगी।"

इतने में गुल खड़ी हो गई और उसने अम्मू से प्रश्न किया, "एच.आई.वी. से पीड़ित रोगी को आपकी क्या सलाह है?"

गुल का प्रश्न सुनकर मैं हिल गई। लड़कियां उसकी तरफ देखने लगीं कि गुल ने ऐसा सवाल क्यों किया? अम्मू को गुल की बीमारी का पता था। वह बोलीं, "यह मैंने अपनी प्रस्तुति में पहले भी बताया है कि यदि किसी को शक है कि उसे एच.आई.वी. की छूत लग गई है, तो वह फौरन डॉक्टर से सलाह करके अपने खून की जांच करवाये। जांच के बाद यदि उसे छूत लगने का पता लगता है, तो वह डॉक्टर की सलाह लेकर उसकी बताई दवा खाये। साथ में बराबर स्वस्थ खाना खाये व कसरत करे। सबसे जरूरी बात यह है कि रोगी अपने जीवन के प्रति सकारात्मक विचार रखे और इस रोग से लड़ने को तैयार हो जाये। रोगी को नकारात्मक विचारों से दूर रहने की बराबर कोशिश करनी चाहिये, जिससे वह उदासी में न चला जाये। अक्सर रोगी के मन में डर बैठ जाता है कि कहीं एच.आई.वी. छूत से वह एड्स का शिकार न हो जाये। याद रखिये कि केवल लड़ने

वाले की ही लड़ाई में जीत होती है। मुंह छिपाकर रोने से कुछ नहीं मिलता।"

तब तक अगली स्लाइड परदे पर आ गई उस पर लिखा था।

एच.आई.वी./एड्स के बारे में पूरी जानकारी करें

– लोगों को बतायें कि इस बीमारी से कैसे निपट सकते हैं?

– परिवार व मित्रों को भी बतायें कि एच.आई.वी. से पीड़ित रोगी का बहिष्कार न करें।

– आप सबको समझना चाहिये कि मित्रता, स्नेह, प्रेम व समझदारी, रोगी को सकारात्मक विचारों को सोचने में सहायता करेगी और रोगी को रोग से लड़ने की शक्ति देगी।

अम्मू ने अपनी घड़ी देखी, "अरे एक घंटा हो गया है।" उन्होंने अपना लैपटॉप कंप्यूटर बंद कर दिया। तभी गौरी ने हाथ उठाकर पूछा, "मैडम, आपने कहा था कि किसी प्रोटेक्शन के बिना मैथुन नहीं करना चाहिये और आपने यह भी कहा कि केवल शादी के बाद ही लड़की को पुरुष से शारीरिक संबंध करना चाहिये। क्या यह समझा जाये कि शादी होने के बाद भी पति-पत्नी बिना संरक्षण के शारीरिक संबंध, मैथुन अथवा सेक्स न करें?"

"तुमने अच्छा प्रश्न किया। पुरुष के साथ मैथुन करने से ही स्त्री को गर्भ रह जाता है। अच्छा है कि स्त्री-पुरुष विवाह के बाद मैथुन करें। यदि उन्हें बच्चे की चाह नहीं है और मैथुन करना चाहते है तो गर्भ-निरोध के लिये पुरुष कंडोम का इस्तेमाल करे।

यदि एच.आई.वी. का रोगी शादी किये बिना किसी स्वस्थ स्त्री अथवा स्वस्थ पुरुष के साथ मैथुन करता है, तो स्वस्थ स्त्री अथवा स्वस्थ पुरुष को एच.आई.वी. की छूत अवश्य लग जायेगी। स्वस्थ स्त्री को इस छूत से बचाने के लिये रोगी पुरुष को हमेशा कंडोम का प्रयोग करना चाहिये। इससे पुरुष रोगी के शरीर का तरल वीर्य स्वस्थ स्त्री के शरीर में नहीं पहुंचेगा।

स्वस्थ पुरुष यदि मैथुन से पहले कंडोम की थैली अपने लिंग पर चढ़ा ले, तो वह एच.आई.वी. से पीड़ित स्त्री से मैथुन करके भी इस बीमारी से अपने को बचा सकता है।"

अम्मू ने अपना भाषण खत्म किया। सभा समाप्त हो गई। हेडमिस्ट्रेस खड़ी हो गईं। उन्होंने अम्मू से हाथ मिलाया और कहा, "डॉक्टर लता, हम आपके आभारी हैं कि आपने एड्स के बारे में इतनी अच्छी तरह से सबको जानकारी दी। आपके पावर प्रस्तुति से हम सबको विस्तार से सब कुछ पता चला। मुझे आशा है कि आपकी प्रस्तुति से हमारी लड़कियों को, अपने आपको एच.आई.वी. से बचाने के लिये अवश्य मदद मिलेगी। इतना ही नहीं, ये लोग दूसरे लोगों को भी इस छूत से बचाने में सहायता कर सकती हैं। यह काम केवल डॉक्टर ही कर सकता था। एक बार फिर आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।"

हेडमिस्ट्रेस, टीचरों और सब लड़कियों ने खूब तालियां बजाईं।

मिस बेला ने आगे बढ़कर कहा, "डॉक्टर लता का छपे हुए भाषण का प्रपत्र मेज पर रखा हैं। आप सब एक-एक उठा सकती हैं।"

अम्मू ने चटपट अपनी अटैची से प्रपत्र निकालकर मेज पर रख दिये।

तभी एक लड़की उनके पास पहुंची और उसने पूछा, "मैडम, क्या हम किसी भी समय आपसे टेलीफोन पर प्रश्न कर सकते हैं?"

"हां। अपनी समस्या के बारे में तुम लोग किसी भी समय मुझसे बात कर सकती हो। तुम्हारा स्वागत है।"

हेडमिस्ट्रेस और मिस बेला अम्मू को कार तक पहुंचाने गईं। मेरे कान मिस बेला की तरफ थे। वह धीरे-धीरे अम्मू से मेरी तारीफ कर रही थीं, "आपकी बिटिया गजब की है। इस प्रोग्राम को सफल बनाने के लिये इसी ने सारा इंतजाम किया।" मिस बेला की बात सुनकर मुझे बड़ा अच्छा लगा। याद आया, मैंने कभी कहीं पढ़ा था, "किसी को

अपनी बड़ाई के दो शब्द सुनने को मिलें तो उसके सोच में बड़ा अंतर पड़ जाता है। बड़ाई के शब्द दो व्यक्तियों के बीच मैत्री का पुल बना देते हैं, जबकि निंदा करने से दो व्यक्तियों के बीच दीवार खड़ी हो जाती है।

तभी मैंने देखा गुल बड़ी उदास खड़ी थी। मैंने उससे पूछा, "अरे तुमको क्या हो गया है?"

"कुछ भी तो नहीं।"

हम दोनों एक पेड़ के नीचे बैठ गये। गुल ने अपना सिर मेरे कंधे पर रख दिया। मेरी भी आंखे भर आईं। बिना बोले ही हम एक-दूसरे की परेशानी और उदासी का कारण समझ गये।

गुल और मैं पेड़ के नीचे देर तक बैठे रहे और यह भी भूल गये कि जाने के लिये बसें खड़ी हैं। ड्राईवर बार-बार भोंपू बजा रहे थे। भोंपू सुनकर हम दोनों जल्दी से भागे। मैंने गुल की तरफ हाथ हिलाया और अपनी बस में चढ़ गई। बस का ड्राईवर गुस्सैल था। मुझको देखते ही बोला, "सोनाजी! आप कितनी देर तक चाहती हैं कि हम आपका इंतजार करें?" मैंने मुंह फेर लिया जैसे कि मैंने सुना ही न हो। एक धक्के के साथ बस चल दी। बस सड़कों पर चली, गलियों में भी जा रही थी और जगह-जगह रुककर लड़कियों को उनके घर के पास उतार रही थी। जब बस मेरे घर के पास रुकी, मैं दो सीढ़ियां साथ उतरी और गेट खोलकर अंदर गई। अम्मू मेरा इंतजार कर रहीं थीं। मैंने हाथ हिलाया और दौड़कर अपना बैग मेज पर रख दिया। मैंने चौके में अम्मू के लिये चटपट चाय बनाई और अपने लिये गिलास में दूध लेकर अम्मू के पास आ गई। हम दोनों बहुत देर तक बातें करते रहे। अम्मू बड़ी प्रसन्न थी कि स्कूल में उनकी पावर प्रस्तुति सफल रही और सब लोगों को अच्छा लगा। उनकी उत्सुकता और भी जानने के लिये बढ़ी। मैं भी बहुत उत्साहित थी।

"अम्मू, जब हम लोग बस से स्कूल जा रहे थे, रास्ते में हमने एच.आई.वी. और एड्स के बहुत सारे इश्तिहार देखे। हम लोग टी.वी. पर भी देखते हैं और रेडियो पर भी सुनते हैं, अखबारों में भी खबरें भरी रहती हैं। लेकिन ये सब बातें और भटकाने वाली लगती हैं। सेक्स आदि के बारे में हमें कोई जानकारी तो देता नहीं है और न कोई उसकी बात करना चाहता है, कितनी अजीब-सी बात है? अम्मू! यह

सबसे अच्छा हुआ कि आपने सबको इसकी पूरी जानकारी दी।"

"सचमुच लोग स्त्री-पुरुष के नजदीकी संबंध, सेक्स की बात को टाल देते हैं और उसके बारे में बिल्कुल बात ही नहीं करते। इस तरह से बिना बताये बेचारे बच्चों को इस खतरनाक बीमारी एच.आई.वी. और एड्स के बारे में कैसे पता लगे? यह तो तभी संभव है, जब सबको इस बेवकूफी की झिझक से बाहर निकाला जाये।"

"अम्मू आपके लेक्चर के बाद लड़कियां खुलकर बातें कर रही थीं।"

"देखो सोना, हमारे बचपन में भी बच्चों के सामने सेक्स या स्त्री-पुरुष के नजदीकी संबंध के बारे में कोई भी बात नहीं करता था और हम लोगों को थोड़ी बहुत जानकारी, इधर-उधर से मिलती थी। कुछ समझ में ही नहीं आता था। लेकिन अब स्थिति बदल गई है। अब ऐसा समय आ गया है कि इस एच.आई.वी./एड्स बीमारी फैलने के डर से हमलोग अपने बच्चों से सब कुछ नहीं छिपा सकते। हमें उन्हें बताना ही ठीक है।"

बातें वहीं खत्म हो गईं। हम दोनों ही थके थे। जल्दी से खाना खाकर सो गये।

दो दिन के बाद इतवार आया। मैं सुबह-ही-सुबह उठ गई।

अम्मू ने पूछा, "अरे भई, आज इतनी जल्दी कैसे तैयार हो गई?"

"अम्मू गुल के घर जाऊंगी। कल वह बहुत उदास थी। आज उससे जरूर मिलना है।"

"नाश्ता किया?"

"हां अम्मू!" मैंने स्काउट की तरह अम्मू को सलाम करके कहा, "आप जब सो रही थीं, मैंने जल्दी से उठकर योगासन किये। सौ बार कपालभाती और अनुलोम विलोम प्राणायाम भी किये। दूध भी पी लिया, टोस्ट भी खा लिये। और हां अम्मू! जो आपने गोलियां दी थीं। वह भी खा लीं। अब जा रही हूं, टा टा।"

"कब लौटोगी?"

"जल्दी ही लौटूंगी।"

मैंने अपनी साइकिल की घंटी बजाई, 'ट्रिंग ट्रिंग ट्रिंग' और फाटक से बाहर आ गई। बड़ी सुहावनी सुबह थी। चम्पा के फूलों की मीठी महक ने मन मोह लिया और मैं अपना प्रिय गाना गुनगुनाने लगी।

"सुबह, सुहावनी देखो हर पल।
रिझा गई यह मेरा मन॥"

जब मैं गुल के घर पहुंची, देखा कि गुल अपने बाग में तितलियों के पीछे भाग रही है। मैंने साइकिल की घंटी बजाई 'ट्रिंग ट्रिंग ट्रिंग'।

गुल मेरी तरफ मुड़ी, "अरे सोना! देखो तो, वह पीली तितली तो बिल्कुल हत्थे नहीं आती। फट से उड़ जाती है।"

"अरे उसे छोड़ो गुल। चलो पार्क में चलते हैं।"

तब तक उसके पापा की आवाज आई, "सोना बेटी, अंदर तो आओ।" मैंने साइकिल बाहर खड़ी की और अंदर चली गई। गुल के भाई गोगा ने जैसे ही मुझे देखा, वह गुल से मचलकर बोला, "दीदी, मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा।"

"क्या? मेरे साथ? मैं अपने साथ बिल्कुल नहीं ले जाऊंगी।"

"गुल? भैया को क्यों नहीं ले चलोगी?" मैंने पूछा।

"सोना! इस गबरू गोगा को तुम नहीं समझोगी। बस सारे टाइम पीछे लगा रहेगा, 'मेरे साथ छुप्पा-छुपाई खेलो, चोर-चोर खेलो।' हमें नहीं छोड़ेगा। हम लोगों को बातें भी नहीं करने देगा।"

तभी गुल की मम्मी चौके में से आ गई और गोगा को समझाने लगीं, "बेटा, दीदी को जाने दो, उसकी सहेली आई है। मैं तुम्हें आइसक्रीम खिलाने ले चलूंगी।"

पर गोगा ने एक न सुनी। फटाफट अपने जूते पहनकर हम लोगों के साथ जाने को तैयार हो गया। गुल की तरफ देखकर जोर से बोला, "मैं तो सोना दीदी के साथ जा रहा हूं।"

मैंने जैसे ही अपनी साइकिल पकड़ी, वह कूदकर पीछे बैठ गया।

मैंने साइकिल चला दी और वहीं मैदान में एक चक्कर लगाकर उसे लौटा लाई। उसके बाद गुल और मैं अपनी-अपनी साइकिल पर पार्क में गये। वहां हमने साइकिलें खड़ी कीं और हम दोनों एक महकते हुए सफेद फूलों के पेड़ के नीचे बेंच पर बैठकर गपशप करने बैठ गये। सुब्रह की ठंडी ताजी हवा में मजा आ रहा था।

"कितनी सुंदर सुबह है न गुल?"

"और तुम्हारी जैसी सहेली के साथ और भी," गुल ने जोड़ दिया।

गुल एकदम से चुप हो गई। थोड़ी देर बाद एक कान पर हाथ रखकर बोली, "सोना, देखो कोई बांसुरी बजा रहा है। उस तरफ से आवाज आ रही है।"

"हां हां! भैरव राग है सुबह का। चलो उधर चलते हैं, बांसुरी सुनेंगे।"

हम दोनों अपनी-अपनी साइकिल पर बैठकर जिधर से बांसुरी की आवाज आ रही थी उधर ही पार्क की दूसरी तरफ चल दिये। वहां एक बिजली के खंभे के पास साइकिल खड़ी करके दबे पांव पेड़ के नीचे पहुंचे। ऊपर देखा, एक लड़का पेड़ की डाल पर बैठा बड़े मगन होकर बांसुरी बजा रहा है। उसे पता भी नहीं चला कि नीचे हम दोनों सुन रहे हैं। गुल तो घास पर आंख बंद करके बैठ गई और बांसुरी सुनने लगी। मैं भी उसके पास बैठ गई। बांसुरी की धुन ने जैसे हम पर जादू कर दिया हो। एकाएक बांसुरी बंद हो गई और बांसुरी बजाने वाला धम्म् से डाल पर से नीचे कूदकर ठीक हमारे सामने आकर खड़ा हो गया। उसे देखकर हम दोनों बड़े सकपकाये। फौरन खड़े हो गये और अपनी साइकिलों की तरफ लपके।

"अरे भई, आप लोग भागी क्यों जा रही हैं? आपको हमारी बांसुरी पसंद नहीं आई?"

हम दोनों रुक गये। समझ में नहीं आया कि क्या बोलें। ऐसे मौकों पर गुल का दिमाग काम कर जाता है, "आप कितनी सुंदर बांसुरी बजाते हैं, सुनकर बड़ा अच्छा लगा।"

गुल की बात से उस लड़के के चेहरे पर चमक आ गई, "आप लोग कहां रहती हैं?"

"हमारा घर यहां से बहुत दूर नहीं है। हम लोग पार्क में आये थे, तभी आपकी बांसुरी सुनाई दी। आपने बड़ी अच्छी धुन बजाई। हम लोगों को बड़ी अच्छी लगी। सोना कहती है कि आप राग भैरव बजा रहे थे। सचमुच राग भैरव था?" गुल ने पूछा।

"हां राग भैरव ही था। क्या आप लोग भी गाना गाती हैं या सीखती हैं?"

"मैं तो कुछ भी नहीं करती। हां, यह मेरी सहेली सोना सितार सीखती थी।"

"चलिये, हम लोगों के एक से शौक हैं," उसने मेरी ही तरफ देखा और पूछा, "कौन से स्कूल में जाती हो?"

"सिटी बालिका स्कूल में, नवीं क्लास में," और मैंने गुल का हाथ पकड़कर कहा, "चलो गुल चलें, बहुत देर हो गई है।"

"अरे भई, मुझे भी तो अपने बारे में बताने दो। मेरा नाम आदि है और मैं दसवीं क्लास में हूं। इस शहर में अभी-अभी आया हूं। ब्वॉयज हाई स्कूल में जाता हूं।"

'आदि' शब्द सुनते ही मुझे बचपन का आदि याद आ गया। वही आदि जो मेरे घर के पास रहता था, मुझसे रहा नहीं गया,

"क्या कभी आप इस शहर में पहले भी रहे हैं?"

"हां हां! बचपन में तो मैं यहीं था और इसी पार्क में रोज घूमने आता था। यहां तो कुछ भी नहीं बदला। यह उतना ही सुंदर पार्क है जैसे पहले था। इतने पेड़ हैं, खुशबूदार फूलों की भी बहार है।"

मन में उछाल हुई। मैंने पूछा, "तुम पीले पुते हुए मकान में रहते थे न, जिसमें बड़ा-सा बाग था और एक टूटी दीवार के दूसरी तरफ एक बंगला था।"

"हां भई, उसी पीले मकान में लेकिन क्या तुम सोना हो, वही

लड़की जो हमेशा टूटी दीवार फांदकर हमारे बंगले में आ जाती थी?"

मुझे मन-ही-मन अजीब-सा लगा पर मैंने अपने को संभाल लिया।

"हां मैं वही सोना हूं। यह हमारी सहेली है गुल।"

"बाप रे, मैं तो कभी सोच भी नहीं सकता था कि मुझे बचपन की दोस्त मिलेगी।"

जब आदि बचपन की बातें करने लगा तो गुल अनमनी होने लगी, "सोना! मुझे देर हो रही है।" उसने अपनी साइकिल पकड़ी और जाने को तैयार हो गई। मैंने भी अपनी साइकिल उठाई और हम सब बतियाते हुए चलने लगे।

"यह भी खूब रहा।" आदि बोला।

"आदि! बताओ न! पिछले दिनों मतलब पिछले सालों में तुमने क्या किया?"

"पापा को दक्षिण अफ्रीका में नौकरी मिल गई थी और बस मैं नैनीताल के बोर्डिंग स्कूल में भेज दिया गया था।"

दक्षिण अफ्रीका का नाम सुनते ही गुल ने पूछा, "यह वही देश है न जहां एच.आई.वी./एड्स बीमारी बहुत ज्यादा है।"

गुल की बात सुनकर आदि अचरज में पड़ गया, "तुम्हें तो बड़ी जानकारी है।"

मैंने गुल को चिकोटी काटी और उसके मुंह से 'उई' निकल गई।

"क्या हुआ?" आदि ने पूछा।

"कुछ नहीं," मैंने कहा।

आदि बोलने लगा, "फिर पापा-मम्मी ने मुझे भी दक्षिण अफ्रीका में बुला लिया। वहीं एक भारतीय बांसुरी-वादक थे। उन्हीं से मैंने बांसुरी बजाना सीखा।"

गुल बेचैन हुई जा रही थी, उसने धीरे से मुझे कोहनी मारी। मैंने आदि से कहा, "गुल घर जाना चाहती है। मुझे भी देर हो रही है। फिर मिलते हैं।"

आदि ने अपना कलम निकाला और एक कागज पर मेरे फोन का नंबर लिख लिया।

"सोना! फिर मिलेंगे।" कहकर आदि तो चला गया और हम दोनों अपनी-अपनी साइकिलों पर सवार हो गये।

एकाएक गुल बकने लगी, "सोना, एच.आई.वी./एड्स शब्द सुनकर ऐसा लगता है कि जैसे किसी ने तीर मार दिया हो। सोना! तुम किसी से भी न कहना कि हम दोनों एच.आई.वी. की छूत से पीड़ित हैं।"

सुनकर मेरे गले में जैसे कुछ अटक-सा गया हो। "मैं भी कभी यह बात किसी को नहीं बताऊंगी।"

"सोना! मैं जिंदा रहना चाहती हूं। मुझे घर चाहिये। मैं शादी करना चाहती हूं, मुझे बच्चे चाहिये।"

मैंने अपनी साइकिल रोक दी। गुल भी रुक गई। उसके गले में हाथ डालकर मैं बोली, "गुल! इस दुनिया में जो भी पैदा हुआ है, एक-न-एक दिन तो उसे मरना ही है। हम और तुम भी मरेंगे। तुमने अम्मू का स्कूल में लेक्चर सुना था न? हां, एच.आई.वी. की बीमारी खराब तो है पर दवा आदि खाने से हम लोग जीवित रह सकते हैं, जितने भी दिन हम लोगों के पास हैं। क्यों न हम दोनों मजे उड़ायें।" मैं गुल का मूड बदलना चाहती थी।

हम दोनों काफी देर तक चुप रहे, फिर गुल बोलने लगी,

"सोना! आदि बड़ा हैंडसम है।"

"सो तो है। क्या तुम उससे फिर से मिलना चाहती हो?"

"यह मतलब तो नहीं था," और गुल ने अपनी साइकिल तेज कर दी। जब वह अपने घर के पास पहुंच गई, मैंने हाथ हिलाकर कहा, "बाय" और मैंने साइकिल अपने घर की तरफ जाने वाली सड़क पर मोड़ दी।

12

दिन काफी चढ़ गया था। मैं गेट खोलकर अंदर गई। "अम्मू सॉरी! मुझे देर हो गई। गुल और मैं पार्क में थे। वहां बड़ी सुंदर बांसुरी बजने की आवाज सुनाई दी। हम दोनों उस तरफ गये। पता है कौन बांसुरी बजा रहा था? वह आदि था। आपको याद है न! हमारे घर के पास जो घर था, बहुत दिन पहले उसमें आदि रहता था?"

"आदि? वही छोटा लड़का जो पीले मकान में रहता था?"

"हां अम्मू, वही बांसुरी बजा रहा था।"

"वह यहां क्या कर रहा है?"

"वह ब्वॉयज हाई स्कूल में दसवीं क्लास में है। उसके पापा, मम्मी अफ्रीका में थे, अब भारत लौट आये हैं। अम्मू आदि बड़ा हैंडसम है।"

अम्मू एक शब्द भी नहीं बोलीं। ऐसी बनीं जैसे उन्होंने कुछ सुना ही न हो और दूसरे कमरे में चली गईं। मैंने अपनी हथेली पर लिखा आदि का टेलीफोन नंबर देखा और सोचा कि उसको फोन कर लूं, तभी टेलीफोन की घंटी बजी। मैंने साइकिल वहीं टिकाकर दौड़कर टेलीफोन का रिसीवर उठा लिया।

"सोना...," दूसरी तरफ से गुल की आवाज आई। गुल फफककर रो पड़ी।

"गुल! क्या हुआ तुमको?"

"सोना, मैं बड़ी होकर शादी करना चाहती हूं। मुझे अपना घर चाहिये। मुझे बच्चे चाहिये," कहकर उसने टेलीफोन रख दिया।

मन बड़ा खराब हो गया। तभी फिर से टेलीफोन की घंटी बजी।

मैंने सोचा हो न हो गुल का फोन ही होगा। मैंने लपककर टेलीफोन उठा लिया। इस बार फोन आदि का था।

"सोना! कितना अच्छा हुआ कि इतने सालों के बाद हम लोग फिर से मिले, तुम तो बड़ी सुंदर लगने लगी हो।"

मैंने अपना ओंठ काट लिया और उससे पूछा, "आदि, बताओ तो अपनी पढ़ाई के साथ-साथ आजकल तुम क्या कर रहे हो? हां, तुम बांसुरी तो बजाते ही हो।"

आदि को यह बिल्कुल अच्छा नहीं लगा और वह बोला, "मम्मी मुझे बुला रही है। तुमसे बाद में बात करूंगा।"

मैंने गुल को फिर से फोन किया। अबकी उसकी मम्मी ने फोन उठाया और बोली, "सोना! गुल चारपाई पर लेटी खूब रो रही है। क्या पार्क में कोई बात हो गई? वह परेशान-सी लग रही है।"

"आंटी! आप परेशान न हों, मैं अभी आ रही हूं।" मैंने अम्मू को गुल की बात बताई और कहा, "गुल के पास मैं अभी जाती हूं।"

मैंने दो कूदने वाली रस्सियां लीं, साइकिल उठाई और जल्दी-जल्दी गुल के पास पहुंच गई। गुल अभी भी अपने पलंग पर लेटी सुबक रही थी। मैंने उसका हाथ पकड़ा और खींचकर उसे बाहर ले आई। एक रस्सी उसको थमा दी और दूसरी मैंने ले ली। उसका हाथ पकड़कर बाग में चली आई।

मैंने कहा, "चलो, हम लोग रस्सी कूदते हैं गुल। पांच मिनटों में जो भी ज्यादा बार रस्सी कूदेगा वही जीतेगा और हां, हारने वाला पांच बार उट्ठक-बैठक करेगा।"

मैंने घड़ी में अलार्म लगाया और हम रस्सी कूदने लगे और साथ-साथ गिनते भी जाते थे। मैंने जानकर धीरे कूदना शुरू किया जिससे कि गुल जीत जाये। गुल जीत गई। मैंने फौरन अपनी रस्सी एक तरफ फेंकी और चटपट पांच बार, कान पकड़कर उट्ठक-बैठक लगा डाली। गुल ठहाका मार कर हंसी।

हम सीढ़ियों पर बैठकर देर तक बातें करते रहे। हम दोनों ने यह भी कहा कि स्कूल की पढ़ाई के बाद क्या करेंगे। मैंने कहा, "गुल मैं तो डॉक्टरी पढ़ूंगी और डॉक्टर बनूंगी।"

"मैं तो टीचर बनना चाहती हूं सोना। देखो!" गुल ने लंबी सांस खींची।

हम दोनों चुप रहे। देर हो रही थी। "अम्मू जरूर इंतजार कर रही होंगी।" मैंने गुल से छुट्टी ली, उसकी मम्मी से मिलकर साइकिल पर बैठ गई। जैसे ही साइकिल चलाई तो अपनी ही बनाई कविता गुनगुनाने लगी,

"हम गायेंगे हम खेलेंगे
और हंसते हंसते जी लेंगे।
हम कूदेंगे हम खेलेंगे
हम रोना सदा भुला देंगे।"

जब घर पहुंची तो अम्मू बाग में बैठी चिड़ियों को देख रही थीं। मैंने आवाज देकर कहा, "अम्मू मैंने अभी-अभी कविता बनाई है," और मैंने गा-गाकर चारों लाइनें सुना डालीं। अम्मू कुर्सी पर से उठीं और मेरा माथा चूम लिया।

13

शाम को आदि मेरे घर आया। अम्मू उससे मिलकर बड़ी खुश हुई। थोड़ी देर के बाद फोन की घंटी बजी। अस्पताल से अम्मू के लिये फोन आया था। अम्मू मरीज देखने चली गई।

मैं और आदि बाग में चले गये।

"आदि अपने बारे में बताओ न! आगे क्या करोगे?"

"बताते जरा अजीब-सा लगता है सोना!"

"ऐसी भी क्या बात है भई?"

आदि कुछ देर चुप रहा फिर बोला, "मैं अपने शहर में एच.आई.वी./एड्स अवेयरनेस मार्च करवाने की सोच रहा हूं।"

"क्या? फिर से कहो?"

"सचमुच मैं एच.आई.वी./एड्स जागरूकता जुलूस निकलवाने की सोच रहा हूं। असल में जब हम दक्षिण अफ्रीका में थे, तभी यह विचार आया था। तुम्हें पता है, अफ्रीका में संसार भर में सबसे ज्यादा एड्स से पीड़ित लोग हैं? रोज ही वहां जाने कितने लोग इस बीमारी से मरते हैं और कितनों को इसकी छूत लगती है। वहां के बहुत सारे राज्यों में एड्स से संबंधित प्रोग्राम होते हैं। एड्स के प्रति जागरूक होने के लिये इस भयंकर बीमारी की जानकारी देनी जरूरी है। सोना, मैंने अखबार में पढ़ा है कि अपने भारत में भी एच.आई.वी./एड्स की समस्या आ खड़ी हुई है। जहां देखो वहां दीवारों पर इश्तिहार लगे हुए हैं। टी.वी. पर भी दिखाया जा रहा है, लेकिन सोना लोग अभी भी खुलकर बच्चों से बात क्यों नहीं करते? इसकी जानकारी सबको दी जाये, जिससे लोग सावधान हो जायें। सचमुच इसकी बड़ी ही जरूरत है।"

आदि बड़ों जैसी बात कर रहा था। मैं चुपचाप सुनती रही। क्या कहती? किसी तरह अपने को संभालकर मैंने कहा, "हाल ही में हमारे स्कूल में एच.आई.वी./एड्स जानकारी का प्रोग्राम किया गया था।"

"खूब रहा। सोचो तो जरा! लड़कियों के स्कूल में ऐसे प्रोग्राम हो रहे हैं और एक हमारा स्कूल है कि इसके बारे में कोई सोच ही नहीं रहा है। सच पूछो तो हर स्कूल में ऐसे प्रोग्राम होने चाहिये। सोना! चलो हम लोग मिलकर कुछ करते हैं। बोलो! फिर कब मिल रहे हैं?"

"आदि! मैं तुमको टेलीफोन करूंगी। तुम्हें पता है, मैं स्कूल की हेडगर्ल हूं। बहुत सारी बातें सोचनी पड़ती हैं। अम्मू से भी सलाह लूंगी।"

"अच्छा, तो आप अपने स्कूल की प्रधानमंत्री हैं?" कहकर आदि जोर से हंसा और जाने के लिये खड़ा हो गया।

आदि के जाने के बाद, टेलीफोन की घंटी बजी। मैंने जल्दी से फोन उठाया, "हलो सोना, मैं गुल बोल रही हूं।" गुल की आवाज जोश से भरी थी और वह बोले जा रही थी, "सुनो सोना, स्वामी आनंदजी, वही हिमालय में जो रहते हैं न, शहर में आये हुए हैं। वह सुबह-सुबह प्रवचन करते हैं। मैं उनको सुनना चाहती हूं और हां, उनसे तुम सवाल भी पूछ सकती हो। चलोगी मेरे साथ?"

"हां! जरूर, हम दोनों चलेंगे।"

"अच्छा तो हम दोनों कल सुबह उनका प्रवचन सुनने चलते हैं।"

"गुल, अम्मू से पूंछ लूं और मैं अभी तुम्हें फोन करती हूं।"

अम्मू थोड़ी देर पहले ही लौटी थीं, मैं उनके पास लपककर पहुंच गई।

"अम्मू! आपको हिमालय वाले स्वामी आनंदजी के बारे में कुछ पता है?"

"हां हां, वह हिमालय में रहते हैं और साल में एक बार नीचे आते हैं। उनका प्रवचन बहुत ही अच्छा होता है। मैं उनसे एक बार मिली भी हूं।"

"अम्मू! अभी-अभी गुल का फोन आया था। मुझसे पूछ रही थी। 'तुम चलोगी?' अम्मू। मैं भी गुल के साथ प्रवचन सुनने जाऊंगी।"

"देखती हूं कि यह क्या वही स्वामीजी हैं?" अम्मू ने अपनी एक सहेली को फोन लगा दिया। सहेली से बात करके अम्मू बोलीं, "सोना! यह वही स्वामीजी हैं, जिनसे मैं कुछ साल पहले मिली थी। तुम जरूर जाओ और उनको सुनो। तुम्हें अच्छा लगेगा।"

"आप भी चलियेगा?"

"नहीं गुड़िया, कल बहुत काम आ गया है।"

मैंने फौरन गुल को फोन पर कह दिया कि उसके साथ अगले दिन जरूर चलूंगी। उससे मैंने यह भी पूछा, "यह तो बताओ गुल कि वहां क्यों जा रही हो?"

"सोना! उनसे मैं कुछ सवाल पूछूंगी। अगर तुम्हारा मन चाहे तो तुम भी पूछ लेना।"

"ठीक है। क्या तुमने सवाल सोच रखे हैं?"

"हां हां। मैंने तो लिखकर रखे हैं कि मैं क्या पूछूंगी। सोना! अपने सवाल तुम भी क्यों नहीं लिख लेती।"

"ठीक है।"

अम्मू खाने की मेज पर पहले से ही बैठी थी। मैंने जल्दी से हाथ धोये और मैं भी मेज पर बैठ गई। अम्मू बातें करने के मूड में थी और बस अपनी नानी के बारे में लगी बताने, "सोना, हमारी नानीजी गजब की थी। वह समाज सेवा करती थीं और उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में भी भाग लिया था। एक बार वह गांधीजी के आश्रम में पहुंच गई और उनके साथ डांडी मार्च में भी गई। वह हर रोज सूत कातती थीं। तुम्हें याद है हमने तुम्हें खादी का एक रूमाल दिखाया था न? उसका सूत हमारी नानीजी का काता हुआ था।"

मैं अम्मू की बात ठीक से नहीं सुन रही थी, मेरे दिमाग में तो अगले दिन की स्वामीजी के साथ क्या होगा, वहीं बातें घूम रही थीं।

जब हम लोग खाना खा चुके, अम्मू अपनी मेज पर अपनी फाइलें देखने बैठ गईं।

मैंने गुल को फिर फोन लगाया, "गुल, कल तुम स्वामीजी से क्या सवाल पूछोगी?"

"हम तो भई अभी सोच ही रहे हैं। तुम क्या सवाल करोगी?"

"हमने तो अभी सोचा ही नहीं है।"

"कोई बात नहीं, सोच जरूर लेना। कल सुबह पांच बजे तैयार रहना। हम लोगों को देर नहीं होनी चाहिये।"

"बस कल ठीक पांच बजे तुम्हारे घर मिलूंगी समझी? बाय।"

मन उत्साह से भर गया कि बस स्वामीजी से कैसे भेंट होगी। मैं क्या सवाल पूछूंगी? रात को चारपाई पर लेटकर मैं यह भी सोचने लगी कि गुल क्या सवाल पूछेगी? और सोचते-सोचते जाने कब नींद आ गई। सुबह चार बजे घड़ी का अलार्म सुनाई दिया, मैं हड़बड़ा कर उठ गई। हाथ-मुंह धोकर जल्दी से नहाकर स्कूल वाले कपड़े पहने और हेडगर्ल का बैज लगाकर तैयार हो गई। अम्मू अभी भी लेटी थीं। उन्होंने शोर सुना तो जोर से कहा, "देखो सोना, जाने से पहले पांच तुलसी की पत्तियां, आंवले का मुरब्बा, बादाम और भूरी बोतल में एक चम्मच एलोवियरा-जैली और दूध जरूर पीकर जाना। बाहर से दरवाजे में ताला लगाकर जाना," कहकर अम्मू फिर से करवट बदलकर सो गईं।

मैं नहा-धोकर तैयार हो गई। अम्मू की बतलाई दवा खाकर दूध भी पी लिया। मैंने अपनी साइकिल बाहर निकाली। दरवाजे में ताला लगाया और गुल के घर चल दी। सुबह का झुटपुटा था। पौ फट रही थी। पूर्व दिशा में आकाश धीरे-धीरे प्रकाशमय हो रहा था और ठंडी-ठंडी बयार में हरसिंगार के फूलों की खुशबू चारों तरफ फैली थी। मैंने साइकिल रोककर जमीन पर गिरे कुछ सफेद फूल बटोरे और रूमाल में लपेटकर साइकिल की डोलची में रख लिये। मनपसंद गाना

गुनगुनाती हुई गुल के घर पहुंच गई। गुल गेट पर खड़ी बेसब्री से इंतजार कर रही थी।

"देखो साढ़े पांच बजने वाला है। सोना तुमने देर कर दी।"

"स्वामीजी तो छह बजे बाहर आते हैं," मैंने कुछ फूल अपनी डोलची में से निकालकर गुल को दे दिये।

"मैं तो यह फूल स्वामीजी को दूंगी।" गुल बुदबुदाई। स्वामीजी के आश्रम के मैदान में हम दोनों पहुंच गये। दूर से पीपल के पेड़ के चारों तरफ एक चबूतरा दिखाई दिया। उस चबूतरे पर एक छोटी-सी चटाई बिछी थी। वह स्वामीजी के लिये थी। उसी चबूतरे के सामने मैदान पर दर्शन करने वाले और भक्तों के लिये दरियां बिछी थीं। कुछ लोग बैठे भी थे। गुल और मैं सबसे आगे, बिल्कुल सामने पीपल के पेड़ के पास बैठ गये और स्वामीजी के आने की बेसब्री से राह देखने लगे। इतने में गुल ने मुझसे पूछा, "स्वामीजी से तुम क्या सवाल पूछोगी?"

"पता नहीं क्या पूछूंगी।"

"मैंने सुना है कि स्वामीजी एक आदमी को सिर्फ दो सवालों का ही जवाब देते हैं।"

"दो सवाल मैं पूछूंगी और दो तुम पूछोगी और इस तरह से चार सवाल हो जायेंगे। है न?"

मैंने अपनी घड़ी देखी। ठीक छह बजा था। स्वामीजी आये, उनकी काली दाढ़ी थी, लंबे बाल थे, वह गेरुआ कपड़े और खड़ाऊ पहनकर चबूतरे की सीढ़ियों के पास आ गये। गुल मेरे कान में बोली, "सोना, यही स्वामीजी लगते हैं, इनकी आंखे तो देखो।"

"चुप रहो।"

हम सब हाथ जोड़कर खड़े हो गये। स्वामीजी चबूतरे की सीढ़ियों पर चढ़ने लगे। चबूतरे पर चढ़कर हाथ जोड़कर उन्होंने सबको नमस्ते किया और छोटी चटाई पर बैठ गये। उन्होंने आंखें बंद की और 'ओं' से शुरू करके सस्वर एक मंत्र पढ़ा। उसके बाद एक स्त्री ने भजन

गाया। उस स्त्री की आवाज बड़ी मीठी थी। भजन के बाद स्वामीजी ने गीता व्याख्या से अपना भाषण शुरू किया। वह भाषण छोटा था, पर स्वामीजी ने गीतासार इतनी सरल भाषा में बताया कि कोई अनपढ़ भी समझ सकता था। उन्होंने शांतिपाठ से शुरू किया और 'ओं शांतिः, शांतिः, शांतिः' कहकर भाषण समाप्त किया। भाषण के बाद उसी महिला ने एक और भजन गाया। स्वामीजी के साथ का अनुभव बहुत अमूल्य और बड़ा सुखमय था। मुझे लगा जैसे किसी दूसरी दुनिया में पहुंच गई हूं। जैसे मेरी सारी परेशानियां दूर हो गईं और बोझ हल्का-सा हो गया। मैंने गुल की तरफ देखा। वह अभी भी आंखें बंद करे इस तरह से बैठी थी, जैसे उस पर किसी ने जादू कर दिया हो।

गुल और मैं स्वामीजी के बिल्कुल सामने बैठे हुए थे। स्वामीजी ने हम लोगों की तरफ देखा फिर हाथ हिलाकर हम दोनों को अपने पास बुलाया। गुल और मैं खड़े हो गये और सीढ़ियां चढ़कर स्वामीजी के पास बैठ गये। इसके बाद स्वामीजी का एक चेला हम लोगों के पास आया और बोला, "अगर आप लोग कोई प्रश्न करना चाहती हैं तो स्वामीजी से पूछिये। एक-एक को दो मिनट दिये जा रहे हैं।"

गुल और मैंने एक-दूसरे को देखा। गुल कुछ घबड़ाई-सी लगी, इसीलिये मैंने ही सवाल पूछा, "स्वामीजी! मेरा नाम सोना है। मैं एच.आई.वी./एड्स के मरीजों की सहायता करना चाहती हूं। कैसे कर सकती हूं?"

स्वामीजी ने मेरी तरफ देखा। आंख बंद करके एक क्षण को मौन साधा फिर गुल की तरफ देखकर पूछा,

"बेटी, तुम्हारा क्या प्रश्न है?"

"स्वामीजी मैं एच.आई.वी./एड्स से पीड़ित हूं। बतलाइये मैं क्या करूं?"

"अपना हाथ दिखाओ।"

गुल ने अपना दाहिना हाथ स्वामीजी के सामने बढ़ा दिया।

स्वामीजी ने गुल की कलाई पकड़ी और अपनी आंखे बंद कर ली। आंखें खोलकर मुझसे भी हाथ बढ़ाने को कहा। मैंने भी अपना दाहिना हाथ बढ़ा दिया। उन्होंने मेरी कलाई पकड़ी। शायद वह समझ गये थे कि हम दोनों ही इस बीमारी की शिकार हैं। स्वामीजी ने लंबी सांस खींची और अपने चेले को इशारे से बुलाया। जैसे ही चेला आया, स्वामीजी ने उससे कहा, "इन बेटियों के लिये दो तुलसी और दो एलोवियरा के पौधे ले आओ।" फिर स्वामीजी ने हमसे कहा, "पांच तुलसी की पत्ती और एक-एक चम्मच एलोवियरा की पत्ती का रस, सुबह-सुबह निन्ने मुंह चबाकर खा लो। इससे तुम दोनों के शरीर की रोग क्षमता बढ़ जायेगी और तुम दोनों स्वस्थ जीवन बिता सकोगी।" उन्होंने यह भी कहा, "बेटियों! जो गरीब है, जरूरतमंद है उनकी सहायता जरूर करो। ईश्वर तुम दोनों को चिरायु करे।"

तभी स्वामीजी का चेला दो-दो पौधे, एक गुल के लिये एक मेरे लिये ले आया। जैसे ही मैंने पौधों को देखा मैं उन्हें तुरंत पहचान गई। मेरे बाग में ये दोनों पेड़ बहुत सारे लगे थे। एक क्यारी में जंगल जैसा था। अम्मू मुझे रोज तुलसी की पांच पत्तियां और एक चम्मच एलोवियरा की जैली नाश्ते से पहले सुबह-सुबह रोज खिलाती थी।

स्वामीजी ने हम दोनों को पौधे दिये। गुल झुकी, उसने स्वामीजी के पैर छू लिये। मैंने भी पैर छू लिये। स्वामीजी ने हम दोनों के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया।

हाथ में पौधे लेकर गुल और मैं सीढ़ियों से नीचे उतरे और अपनी साइकिलों के पास आये। गुल उत्साह से भरी थी, "सोना! स्वामीजी तो गजब के हैं। महान हैं। अब मैं भी इन पौधों को अपने बाग में लगाऊंगी। मैं भी एच.आई.वी. से लडूंगी। मुझे विश्वास है कि मैं जरूर ठीक हो जाऊंगी। एक बार ठीक हो गई तो बस शादी करूंगी, मेरा घर होगा और फिर मेरे बच्चे भी होंगे।"

गुल रास्ते में धारा-प्रवाह बोले जा रही थी। आखिर में बोली,

"सोना! मैं तो यहां रोज सुबह आना चाहती हूं। मेरे साथ तुम भी क्यों नहीं आती?"

"क्या? हम लोग स्कूल जाना छोड़ दें?"

गुल ने मेरी बात अनसुनी कर दी, वह अपनी ही धुन में थी। "सुबह तुलसी की पत्तियां और एलोवियरा की जैली खाकर, मुझे मालूम है मैं इस बीमारी से जरूर मुक्ति पा जाऊंगी। मैं कहती हूं सोना, यह जरूर काम करेगी।"

मैं चुपचाप उसकी बातें सुनती रही। जैसे ही गुल ने साइकिल अपने घर की तरफ मोड़ी, मैंने अपनी साइकिल तेजी से बढ़ाई और घर लौट आई। अम्मू बाहर के बरामदे में कुर्सी पर बैठी अखबार पढ़ रही थीं। मैं दूर से ही चिल्लाई, "अम्मू, वहां दूसरी ही दुनिया है, बहुत ही मजा आया। स्वामीजी तो गजब के हैं। वहां चारों तरफ शांति छाई हुई थी। बस मन करता था वहीं बैठे रहें।" मैंने अपनी साइकिल की डोलची से दोनों पौधे निकाले और अम्मू के पास ले गई। "अम्मू अब मुझे तुलसी की पत्तियों और एलोवियरा की जैली का राज समझ में आया।"

अम्मू ने मेरे हाथों से दोनों पौधे ले लिये और चमेली की झाड़ी के नीचे क्यारी में रख दिये, "इनको शाम को जमीन में लगायेंगे, सोना! जल्दी से नाश्ता कर लो। स्कूल की बस आती ही होगी।"

हम दोनों जब मेज पर नाश्ता कर रहे थे, अम्मू ने एक कहानी सुनाई, "सोना, बहुत साल पहले मैं एक सम्मेलन में मणिपुर गई थी। वहीं एक डॉक्टर से मुलाकात हुई। आखिरी दिन, वह डॉक्टर और मैं एक साथ हवाई-अड्डे जा रहे थे। वहां पहुंचकर पता लगा कि हमारा हवाई जहाज तीन घंटे बाद आयेगा। मेरे साथ वाली डॉक्टर बोलीं, "यहां की नई जेल पास में ही है, घूम कर आते है।" मैं राजी हो गई और हम दोनों जेल देखने गये। वह जेल दूसरी जेलों से बिल्कुल अलग थी। उस जेल का तो नजारा ही देखने वाला था। चारों तरफ बड़ी सफाई थी, वातावरण साफ-सुथरा और बड़ा भला था।"

"लेकिन अम्मू जेल में ऐसा भी क्या अनोखा था?"

मेरी डॉक्टर मित्र जेल के सुपरिटेंडेंट को अच्छी तरह से जानती थीं। मुझे यह तो पता था कि मणिपुर में नशीली गोली खाने वालों की बड़ी तादाद है। यह नशीली गोलियों को खाने वाले अक्सर नशीले इंजेक्शन भी लेते रहते हैं। इंजेक्शन लेने वाली एक ही सुई अनेक शरीर में इस्तेमाल करने से एच.आई.वी./एड्स की छूत लग जाती है। वहीं जेल में मैंने देखा की सब जगह तुलसी और एलोवियरा के पौधे लगे हुए हैं। मैंने जेल के सुपरिटेंडेंट से पूछ ही लिया। उसने बताया कि जेल में रहने वाले सारे कैदियों को, जो एच.आई.वी./ एड्स से पीड़ित हैं और जो नहीं भी पीड़ित हैं, उन्हें भी रोज सुबह यह पत्तियां और जैली खाने को दी जाती हैं। इससे शरीर की रोधक्षमता बढ़ जाती है।"

"खूब! भई वाह!"

"असल में यही स्वामीजी एक बार जेल गये थे और उन्होंने सुपरिटेंडेंट को बताया था। तभी से यह पत्तियां और एलोवियरा की जैली जेल के हर आदमी को देना शुरू कर दिया गया। इनसे उन जेल में रहने वाले लोगों के शरीर की रोधक्षमता पहले से बहुत अच्छी हो गई। अरे, तुम्हें स्कूल जाना है। फटाफट उठो।"

मैं जल्दी से बस पकड़ने बाहर भागी। बाहर जाते ही बस आ गई। मैं चटपट उस पर चढ़ गई और स्कूल पहुंची। स्कूल में गुल मिली। वह स्वामीजी की बातें और उनकी बड़ाई करते थक नहीं रही थी। बस लड़कियों ने गुल को घेर लिया। सबकी सब गुल की बातों से बड़ी प्रभावित थीं और गुल ने सबसे कहा, "मैं तुम सबको भी पौधे दूंगी। बस एक बार मेरे पौधे बड़े हो जायें।"

कई सप्ताह के बाद, गुल स्कूल नहीं आई। काफी समय से उसका स्वास्थ्य खराब था। उसकी पाचन शक्ति बहुत कम थी। मुझे यह भी मालूम था कि उसके माता-पिता पहले तो उस पर जान देते थे, लेकिन जबसे उनके अपना बच्चा हो गया, तबसे उनका सारा प्यार उस बच्चे पर ही केंद्रित हो गया था। गुल के प्रति उनके व्यवहार में और अधिक बदलाव तब आया, जब उनको पता चला कि गुल एच.आई.वी./एड्स की बीमारी की शिकार है। तबसे वे गुल से दुराव रखने लगे और इसीलिये गुल मन-ही-मन बड़ी दुखी रहने लगी थी। जब मैं स्कूल के बाद अपने घर पहुंची तो मैंने उसको टेलीफोन किया। उसकी मम्मी ने फोन उठाया, "अरे सोना, गुल को तेज बुखार चढ़ा है और दस्त भी आ रहे हैं। उसे बड़ी कमजोरी भी है। कुछ उससे कहना चाहती हो?"

उसकी मम्मी की बात सुनकर मुझे बड़ी परेशानी लगी। मैंने जल्दी से एक गिलास दूध पिया। अपनी नौकरानी से कहा "अम्मू से कह देना कि मैं गुल के घर जा रही हूं।" मैंने अपनी साइकिल उठाई और गुल के घर पहुंची। उसके घर के बाहर बाग में उसका भाई अपने दोस्तों के साथ फुटबॉल खेल रहा था। मुझे देखते ही वह जोर से चिल्लाया, "सोना दीदी! मम्मी, सोना दीदी आई हैं।"

उसकी आवाज सुनकर गुल की मम्मी बाहर आ गई। वह बड़ी थकी हुई लग रही थीं।

"अच्छा हुआ सोना तुम आ गई। गुल तुमको याद कर रही थी।"

उनके साथ मैं गुल के कमरे में गई। गुल का भाई भी हम लोगों के

पीछे-पीछे आ गया। गुल ने जैसे ही अपने भाई को देखा, वह उस पर चिल्लाने लगी।

"मैंने कहा था न कि मेरे कमरे में तुम कतई, कतई नहीं आओगे। मेरी गंदी छूत तुम्हें भी लग जायेगी।"

उसकी आवाज सुनते ही उसका भाई डर गया और कमरे के बाहर भाग गया। उसकी मम्मी भी हम दोनों को अकेला छोड़कर चली गईं। उनके जाते ही गुल रोने लगी। मैं उसकी चारपाई पर बैठ गई, मैंने उसका हाथ पकड़ लिया। उसको बुखार चढ़ा था। मेरे आंसू की बूंदें उसके चेहरे पर गिर गईं। तभी उसकी मां फिर से कमरे में आ गईं। मैंने उनसे पूछा, "आंटी! क्या डॉक्टर ने गुल को देखा है?"

"अभी तो नहीं।"

"आंटी, आपके पास थर्मामीटर है?"

गुल की मां ने इधर-उधर ढूंढ़ा, उनको थर्मामीटर नहीं मिला। मैंने गुल का माथा छुआ। माथा जल रहा था। मैंने कहा, "मैं अम्मू को अभी बुलाती हूं। वह गुल को देखने आ जायेंगी।"

गुल की मम्मी यह कहकर कमरे के बाहर चली गईं, "सोना! अपनी मां को तंग मत करो। मैं डॉक्टर को अभी बुलाती हूं।"

कुछ देर के बाद गुल को देखने डॉक्टर आये। वह कुछ दवाइयां लिखकर चले गये। मैं नुस्खा लेकर साइकिल पर, पास के बाजार से दवाइयां ले आई। मुझे लगा कि मैं गुल को लेकर अपने घर चली जाऊं। लेकिन यह तो संभव नहीं था।

कुछ दिन के बाद गुल का बुखार कम हो गया, दस्त भी आने बंद हो गये, पर उसे हल्का बुखार रहने लगा। दस दिन के बाद उसकी हालत फिर बिगड़ गई। वह अपने आप खड़ी भी नहीं हो पाती थी। उसकी मम्मी ने उसकी देखभाल के लिये रात-दिन की एक नर्स भी रख ली।

मैं गुल को रोज देखने जाती थी। मिस बेला और क्लास की

लड़कियां भी उसको देखने गईं। एक महीना ऐसे ही निकल गया। अम्मू भी कई बार गुल को देखने गईं। एक दिन अम्मू ने रात में मुझसे कहा, "सोना, गुल की तबीयत पहले से ज्यादा खराब है...यह बीमारी..." अम्मू आगे नहीं बोली।

"अम्मू! आपने उसकी मम्मी को बताया?"

"हां हां! मैंने उनसे कहा था कि गुल को अस्पताल में भर्ती करवा दें, पर खैर, मैं अभी उनको फिर से फोन करती हूं।" अम्मू ने फौरन फोन लगाया। "मैं डॉक्टर लता बोल रही हूं। आप गुल को आज ही अस्पताल में भरती करवा दीजिये। मैं वहां पर कमरे का इंतजाम करवा दूंगी।"

मैं सुन नहीं पाई कि गुल की मम्मी ने क्या कहा, पर मैंने अम्मू की बात सुनी, "यह अच्छा है।"

अम्मू जल्दी से तैयार होकर गुल के घर चली गईं। मैं भी अम्मू के साथ जाना चाहती थी, पर उन्होंने मुझे घर में ही रुकने को कहा। अम्मू ने बाद में बताया कि जब वह वहां पहुंची तो तभी वहां एंबुलैंस पहुंची थी। अम्मू भी गुल की मम्मी और पापा के साथ गुल को लेकर अस्पताल गईं और गुल को तत्काल-सेवा-कक्ष (आई.सी.यू.) में भरती करवा दिया। अगले दिन स्कूल के बाद मैं अस्पताल गई पर मुझे गुल से मिलने नहीं दिया गया। मैंने नर्स से बात की। उसने बताया, "जब वह वार्ड में भेजी जायेगी, तभी तुम उससे मिल सकती हो।" मैं मन मारकर रह गई। पर अम्मू गुल को देखने जाती थीं और रोज मुझे उसके बारे में बतलाती थीं। एक दिन अम्मू ने कहा, "आज गुल को आई.सी.यू. से छुट्टी मिल जायेगी और वह कमरे में चली जायेगी।" मेरे मन में उछालें भरने लगीं। स्कूल से आते ही मैंने साइकिल उठाई और अस्पताल गई। साइकिल रखकर उसके कमरे में पहुंची। उसकी चारपाई के बराबर में एक खाली चारपाई पड़ी थी। उस चारपाई के ऊपर एक खिड़की थी। सूरज की किरणें छिटककर चारपाई पर पड़ रही थी। खिड़की से ठंडी

बयार आ रही थी। गुल बेहद कमजोर लग रही थी। जैसे ही गुल ने मुझे देखा कि वह मुस्कराई और धीमी आवाज में बोली, "सोना, इस कमरे में मेरे साथ गुनी दीदी भी हैं। उनसे मिलकर तुमको बड़ा अच्छा लगेगा।"

कुछ देर बाद, गुसलखाने का दरवाजा खुला, नीली सलवार कमीज पहने एक महिला बाहर आ गई। उनका चेहरा पीला था, पर वह बहुत सुंदर थी। वह मुस्कराई और मुझसे पूछा।

"तुम गुल की सहेली सोना हो न?"

"हां दीदी।"

"गुल तुम्हारी बहुत बातें करती हैं," कहते-कहते वह बड़ी थकी हुई-सी लगीं। चारपाई पर लेटकर उन्होंने आंखें मींच लीं और करवट बदल ली।

गुल तो हमेशा की तरह बातें करने के मूड में थी, "सोना, गुनी दीदी कहानी सुनाने में माहिर हैं, और एक नर्सरी स्कूल में पढ़ाती हैं।"

तभी गुनी दीदी को खांसी का दौरा पड़ा। वह उठकर बैठ गई। मैंने घंटी बजाई और नर्स को बुलाया। गुनी दीदी की हालत और बिगड़ गई। उनका मुंह लाल हो गया और उन्होंने उल्टी कर दी। उसके बाद एक डॉक्टर भी आ गईं। गुनी दीदी फौरन तत्काल-सेवा-कक्ष में ले जाईं गईं। गुल उनको देख रही थी। उसकी आंखें नम थीं। मुझे भी गुनी दीदी के लिये बड़ा खराब लग रहा था। उनके जाते ही गुल ने बोलना शुरू कर दिया,

"सोना! कल ही तो गुनी दीदी 'तोते' की कहानी सुना रही थीं। वह कह रही थी कि बच्चे उस कहानी पर दीवाने हैं, उनको भी वह बहुत भाती है।"

"सुनाओ न मुझे भी," और गुल कहानी सुनाने लगी।

"एक दिन एक तोती एक आम के पेड़ के ऊपर से उड़ रही थी, उसे सीटी सुनाई दी। वह उड़कर नीचे आई। उसने आम का पेड़ देखा।

उसे भूख लगी थी। उसने एक आम खाया, फिर रात में वह वहीं आम के पेड़ पर रुक गई। सुबह-सुबह उसे एक शेर के दहाड़ने की आवाज सुनाई दी। उसने नीचे देखा, नीचे की डाल पर एक तोता अपने कोटर से बाहर झांक रहा था। तोती ने तोते से पूछा, ''श्रीमान् आपने क्या शेर की दहाड़ सुनी?'' तोता जोर से हंसा, 'हीहीहीहीही' और वह अपने कोटर में घुस गया। अगले दिन सुबह तोती ने कुत्ते के भौंकने की आवाज सुनी, 'भौं भौं भौं भौं।' तोती ने नीचे देखा, वही तोता खड़ा था। तोती ने उससे पूछा, ''श्रीमान्, क्या आपने कुत्ते की भौं भौं भौं सुनी?'' तोता खिलखिलाकर हंसा, 'हीहीही, हाहाहा,' और वह फिर अपने कोटर में घुस गया। तोती भी उसके पीछे-पीछे चली गई। तोते ने पहले सीटी बजाई और सीटी पर एक धुन बजाई। फिर वह शेर की तरह दहाड़ा, उसके बाद वह कुत्ते की तरह भौंका। बाद में वह खिलखिलाकर हंसा, "ही ही ही, हा हा हा, हे हे हे।"

तोती समझ गई और उसने कहा, "तो सारी आवाजें निकालने वाले आप ही महाशयजी थे।" तोते ने सिर हिलाकर 'हां' कर दी। बस तोते ने तोती को सीटी बजानी सिखाई, शेर की तरह दहाड़ना सिखाया और कुत्ते की तरह भौंकना सिखाया। उसके बाद तोता और तोती साथ-साथ खूब हंसे, ही ही ही, हा हा हा, हे हे हे और वह दोनों साथ रहने लगे।

"बड़ी प्यारी कहानी है," मैंने कहा।

तभी गुल को जैसे कुछ याद आया, सोना, कल गुनी दीदी मुझसे कह रही थी, "गुल, हम सबका मन चाहता है कि हम सबसे अलग कुछ नया काम करें और अगर हम सबसे अलग कोई भी नया काम करते हैं तो मन बड़ा प्रसन्न होता है न? और लगता है कि हमारे जीवन का भी कोई अर्थ है। गुल, मेरा मन है कि तुम इसी कहानी को और आगे बढ़ाओ।"

"तुमने क्या कहा?"

"मैंने तो सिर्फ कुछ कवितायें लिखी हैं, लेकिन मैं कोशिश करूंगी।" कहते-कहते गुल के चेहरे का रंग फीका पड़ने लगा और उसने आंखें बंद कर ली। थोड़ी देर के बाद उसने आंखें खोलीं और मेरा हाथ पकड़ लिया। ऐसा लगा जैसे वह कुछ कहना चाहती थी पर बोल नहीं पा रही थी। मैंने नर्स को बुलाया, उसने मुझसे कहा, "गुल को आराम करने दो।" मैं कमरे के बाहर चली आई। जाने क्यों मेरा मन घबड़ाने लगा। मैं कमरे के बाहर ही खड़ी रही। थोड़ी देर बाद मैंने कमरे में झांककर देखा। गुल सो रही थी। मैं घर लौट आई।

रात में जब मैं चारपाई पर बिस्तर पर लेटी तो मन में एक के बाद एक विचार आने लगे। इतना ही नहीं, खिलखिल तोते की कहानी में नये-नये मोड़ भी जोड़ने लगी। अगले दिन मैं गुल को देखने गई। उधर गुल ने भी तोते की कहानी में जाने क्या-क्या जोड़ डाला था। चलते-चलते गुल ने मुझसे कहा, "सोना! एक बार मैंने कहा था न कि मैं बड़ी होकर टीचर (अध्यापिका) बनना चाहती हूं," और वह चुप हो गई। मैंने उसका हाथ पकड़कर कहा,

"गुल! यह तो बड़ा अच्छा है कि तुम टीचर बनना पर मैं तो डॉक्टर बनूंगी और हम दोनों एक ही शहर में रहेंगे और रोज एक-दूसरे से मिलेंगे। है न?"

"कितना अच्छा होगा, बस मुझे ठीक हो जाने दो सोना!" अस्पताल की चारपाई पर लेटी-लेटी गुल क्या-क्या मंसूबे बांधे जा रही थी, भविष्य के सपने देखे जा रही थी और रोज मुझे अपने सपने सुनाती थी। पर गुल बहुत ही कमजोर हो गई थी और अब तो उसे उठने-बैठने में भी मुश्किल होने लगी थी।

एक दिन गुल को देखने के बाद घर जाते-जाते मैं नर्स से मिली और मैंने उससे गुनी दीदी के बारे में पूछा। उसने बताया कि गुनी दीदी की उसी रात मृत्यु हो गई। उसने यह भी कहा, 'गुल को न बताना।

उसे धक्का लगेगा और यह उसके लिये ठीक नहीं है।' यह सुनकर मैं पूरी तरह हिल-सी गई।

कई दिन बाद, डॉक्टर गुल को देखने आईं, उस समय मैं भी गुल के कमरे में थी। कमरे में घुसते ही डॉक्टर ने कहा, "गुल, आज तो तुम ठीक लग रही हो।" डॉक्टर की बात सुनकर गुल मुस्कराई। डॉक्टर झुकी और गुल को नजदीक से देखा। तभी उन्होंने गुल के तकिये के पास एक डायरी पड़ी देखी, वह बोलीं, "अरे! तुम डायरी लिखती हो। डायरी में क्या लिखती हो?"

"डॉक्टर! कविता लिखती हूं।" गुल ने झेंपकर कहा।

"यह तो बड़ा अच्छा है। सुनो! एक दिन तुम मुझे भी अपनी कवितायें सुनाना। सुनाओगी न?"

गुल ने मुस्करा दिया। डॉक्टर चली गईं। मैं भी उनके साथ हो ली। बाहर जाकर मैंने उनसे पूछा, "डॉक्टर! गुल अस्पताल में और कितने दिन रहेगी?"

"गुल बहुत बीमार है। वह बहादुर लड़की है।"

"डॉक्टर आप क्या सोचती हैं?"

"किसी भी समय उसे कुछ भी हो सकता है," कहकर डॉक्टर अपने कमरे में चली गईं। डॉक्टर के शब्दों को सुनकर ऐसा लगा जैसे मेरी सोचने समझने की शक्ति चली गई हो। मैंने अपने को संभाला और गुल के कमरे लौटकर आ गई।

"सोना! मेरे और पास आओ प्लीज," गुल मिन्नत करते हुए बोली। मैं उसके पास बैठ गई और झुककर उसका माथा सहलाने लगी। सहलाते समय मेरे आंसू उसके माथे पर गिर गये।

"मुझे मालूम है, मैं बहुत सख्त बीमार हूं," गुल बोली।

"नहीं तो! तुम पहले से तो अच्छी हो। बस जल्दी से घर जाने की छुट्टी मिल जायेगी। ईश्वर महान है। ईश्वर दयालु है और वह हम सबकी हर समय खबर रखते हैं," कहते-कहते मेरा गला रुंध गया।

मुझे बचपन की बातें याद आ गई जिन पर हम दोनों लोट-लोट कर हंसते थे। मैंने वह बातें गुल को सुनाई। उसने भी अपने भाई की प्यार से भरी बातें सुनाई। गुल को उसकी बहुत याद आती थी।

"मालूम है सोना! वह बिल्कुल बंदर है। एक के बाद एक छह-छह लड्डू उड़ा जाता है।"

"उसके पेट में दर्द नहीं होता?"

"हां हां, खूब होता है पेट में दर्द। सोना! मुझे भैया बहुत अच्छा लगता है।" वह चुप हो गई। उसने आंखें बंद कर लीं। उसकी आंखों के कोने से आंसू बहने लगे।

मुझे मालूम था कि उसके भाई को उसकी मम्मी ने खास मना किया था कि वह अस्पताल में गुल को देखने न जाये। बात बदलकर मैं स्कूल की सहेलियों की बातें करने लगी। अस्पताल में आने वालों का समय खत्म हो गया था। अस्पताल का घंटा बजा। मैंने गुल से हाथ मिलाया और कमरे के बाहर चली गई।

उस रात मैंने सपने में गुल को देखा। वह खिलखिलाकर जोर से हंसे जा रही थी और हर वाक्य बोलने के पीछे मेरा नाम लिये जा रही थी। फिर उसने अपनी पसंद का वह चुटकुला भी सुनाया।

"सोना! सुनो न। एक चींटी ने साईकिल चलानी सीख ली। एक दिन वह जैसे ही अपनी साइकिल पर बैठी, एक हाथी आ गया। उसने कहा, "मुझे भी पीछे बिठाकर घुमा दो।" चींटी ने फट से कहा, "हां हां, बैठ जाओ, बैठ जाओ।" हाथी चींटी की साइकिल के पीछे की सीट पर बैठ गया और चींटी तेजी से साइकिल चलाने लगी। इतने में सामने से उसे एक ट्रक आता दिखाई दिया। चींटी ने अपनी साइकिल किनारे मोड़ी। बस साइकिल सड़क पर गिर पड़ी। चींटी और हाथी भी गिर पड़े। हाथी को चोट आ गई, लेकिन चींटी को चोट नहीं आई। सोना बताओ तो चींटी को चोट क्यों नहीं आई?"

"मुझे नहीं मालूम! मैं नहीं बता सकती।"

"क्योंकि चींटी अपने सिर पर हैलमेट पहने थी," और गुल खिल-खिलाकर हंसी।

एकाएक मेरी नींद खुल गई। अभी सुबह नहीं हुई थी जाने क्यों बड़ी घबड़ाहट-सी हुई। उसी समय टेलीफोन की घंटी सुनाई दी। मैंने दौड़कर टेलीफोन उठाया, "हलो।"

"हलो! मैं गुल का पापा बोल रहा हूं, सोना, मेरी गुल खत्म हो गई," और वह आगे नहीं बोल पाये। उनके सिसकने की आवाज सुनाई दी। मैंने टेलीफोन रख दिया। दौड़कर अम्मू के पास लेट गई और उनसे चिपटकर रोने लगी।

"क्या हुआ सोना?"

"गुल नहीं रही।"

अम्मू ने मेरे आंसू पोंछे। अम्मू ने उस दिन अस्पताल से छुट्टी ले ली और हम दोनों गुल के अंत्येष्टि में गये।

अंत्येष्टि के बाद, गुल की मम्मी मुझे एक तरफ ले गई और बोलीं, "गुल तुम्हारे लिये अपनी डायरी छोड़ गई है।"

मैं एक शब्द भी न बोल सकी। हम सब अपने-अपने घर चले गये। शाम को एक आदमी एक पैकट लाया उस पर मेरा नाम लिखा था। मैंने पैकेट खोला, उसमें गुल की डायरी थी और उसके साथ एक पेन था, जो एक बार मैंने उसको दिया था। मैं वहीं सीढ़ी पर बैठ गई। डायरी का पहला पन्ना पलटा। उस पर लिखा था।

सच्चा दोस्त वही होता है

– जो बिना मांगे तुम्हें स्नेह देता रहता है।

– जो तुम्हें पूरी तरह से समझता है।

– जो तुम्हारी सफलता पर सचमुच खुश होता है।

– जब तुम परेशानी या मुसीबत में हो तो तुम्हारे साथ होता है।

– जो तुम्हें कभी नहीं छोड़ता।

—जो सदा अपना स्वभाविक अच्छापन गुस्सा होने पर भी रखता है।

—वह सदा ईर्ष्या से परे होता है।

—वह सदा तुम्हारा रक्षक होता है।

—वह सदा तुम्हारा शुभचिंतक होता है।

यह डायरी मेरी सबसे प्यारी सहेली सोना को सस्नेह भेंट।

पढ़ते-पढ़ते मेरी आंखें आंसू से भर गई। आगे पढ़ा नहीं गया। मैंने आंसू पोंछे और अगला पन्ना पलटा। उस पर एक कविता लिखी थी—

उस मां को जिसने मुझे जन्म दिया

जन्म दिया था तुमने
प्यार किया था तुमने
स्तन से दूध पिलाया तुमने
तुमको पता कहां था
दूध पिलाने में, अंजाने में
जहर दिया था मुझको तुमने
मां! मलिन करो न मन अपना
आती हूं मैं तेरे पास
सीने से मुझे लगा लेना॥

अगले पन्ने पर एक और कविता थी,

चाह

चाह है, मेरी हो शादी
चाह है, इक घर हो मेरा
पति हो एक चाहने वाला
घिरी रहूं मैं बच्चों से
पर पर पर,

आया भूकंप जीवन में
उसने ध्वंस किये सपने
दबी पड़ी हूं उसके नीचे।

मैंने अगला पन्ना पलटा। वहां एक और कविता लिखी थी।

मेरा जीवन एक निराशा

करता है प्यार मुझे छोटा भैया
मैं भी उस पर मरती हूं
पर उसे मना है मुझसे बात करनी
और और और
उससे बात न करूं मैं भी
क्योंकि मुझे है यह बीमारी
नाम है इसका एच.आई.वी.
भगवन् मुझे बस बुद्धि दे दो।

उसके अगले पन्ने पर मेरे नाम एक पत्र था।

"सोना, मेरी सहेली,

मैं एक लंबी यात्रा पर एक अंजानी दुनिया में जा रही हूं। तुमसे शायद कभी न मिल पाऊं।

प्यार-गुल"

गुल ने धोखा दिया। मेरी सहेली चुपचाप चली गई। मैं चलते समय उससे विदा भी नहीं ले पाई। मैंने डायरी बंद कर दी। मेज पर सिर रखकर सिसकियां लेने लगी। तभी किसी ने मेरे सिर पर हाथ रख दिया। और मैं उस स्पर्श को पहचान गई। वह अम्मू थीं, मेरी अम्मू, मेरी रक्षक। मैंने उनकी तरफ लाचारी से देखा। वह मेरी कुर्सी के हत्थे पर बैठ गई और गुल की डायरी उठाकर पढ़ने लगी। पढ़कर मुझे प्यार करके बोलीं,

"सोना, मेरी बिटिया, मेरी जान, मन मत छोटा करो। मैं तो तुम्हारे साथ हूं। सदा तुम्हारे साथ रहूंगी। उठो! जल्दी से नहा लो।"

अम्मू के शब्दों ने मुझे बल दे दिया। मैं खड़ी हो गई। गुसलखाने में गई और ठंडे पानी से सिर धोकर नहाई। उससे मुझे शक्ति मिली और कुछ तबीयत ठीक भी लगी।

फिर अम्मू के साथ खाना खाया और वह मुझे टहलाने ले गई।

अगले दिन अम्मू ने सुबह-ही-सुबह जगा दिया और नाश्ते के बाद कार पर मुझे स्कूल छोड़ आईं। स्कूल में पहुंचते ही मिस बेला मिल गईं।

"मैडम नमस्ते।"

"सोना! आज सुबह की प्रार्थना गुल की आत्मा की शांति के लिये है।"

"जी, मैडम।"

सुबह की प्रार्थना में सब लड़कियां हॉल में जमा हो गईं। प्रार्थना शुरू हुई। सब लड़कियों ने एक साथ प्रार्थना की।

पितु-मातु सहायक स्वामी सखा
तुम ही एक नाथ हमारे हो
तुम-सा कोई दूजा और नहीं
तुम ही हमरे रखवाले हो

हेडमिस्ट्रेस का भाषण हुआ।

"गुल हमारे स्कूल की नवीं कक्षा की छात्र थी। वह अब हम लोगों के बीच नहीं रही। वह बड़ी खुशमिजाज थी और सबसे उसकी मित्रता थी। सारी टीचरें उसकी बड़ाई करती हैं। बड़े दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि वह एच.आई.वी. रोग की शिकार थी। पिछले कुछ हफ्तों से बहुत बीमार चल रही थी। अस्पताल में डॉक्टरों ने उसे बचाने की बड़ी कोशिश की, पर उसे बचा नहीं सके। आओ हम सब मिलकर उसकी आत्मा की शांति के लिये ईश्वर से प्रार्थना करें। हम सब मिलकर यह भी प्रार्थना करें कि भविष्य में हमारे स्कूल की कोई भी लड़की इस भयंकर बीमारी का शिकार न हो। अब हम सब गुल

की याद में दो मिनट मौन रखेंगे और प्रार्थना करेंगे कि ईश्वर उसकी आत्मा को शांति दे।"

प्रार्थना के बाद सभा हुई। उसमें मिस बेला ने सब लड़कियों को संबोधित करके कहा, "14 नवंबर को बाल-दिवस पर एच.आई.वी./एड्स के प्रति आप सबको जागरूक कराने के लिये स्कूल की तरफ से हमने 'एच.आई.वी./एड्स जागरूकता मार्च' जुलूस का प्रबंध किया है। इस जुलूस के लिये हर कक्षा की लड़कियां एक-एक झंडा बनायेंगी। हर झंडे पर एक संदेश होगा। इसके बारे में अधिक जानकारी के लिये, क्लास की मॉनीटरें हेडगर्ल सोना से इंटरवल में संपर्क करें।"

इंटरवल का घंटा बजते ही सारी कक्षा की मॉनीटरों ने मुझे घेर लिया। मैं एक कुर्सी पर खड़ी हो गई। मैंने ताली बजाकर सबको चुप कराया और कहा, "आप सबको झंडे बनाने हैं। हर झंडे के लिये एक संदेश भी बनाना है। सबसे पहले आप लोग संदेश लिखेंगी। उसके बाद मिस बेला संदेश चुनेंगी। वही संदेश क्लास के झंडे पर लिखा जायेगा।"

सब लड़कियों ने एक जुट होकर काम किया। पहले संदेश बनाये गये।

मैंने मिस बेला को संदेश चुनने में सहायता की। यह सारे संदेश, अम्मू के लेक्चर जो उन्होंने कंप्यूटर प्रेजेंटेशन में किये थे, उन्हीं में से लिये गये थे। संदेशों के साथ बाल-दिवस के मार्च के दो दिन पहले ही सारे झंडे तैयार हो गये। दो दिन बड़े गर्मजोशी से निकल गये। तैयारियां पूरी थीं। मिस बेला और मैं तीसरे पहर बड़ी देर से घर लौटे। इतवार की सुबह, 14 नवंबर को, स्कूल की लड़कियों के साथ मैं भी इंडिया गेट पहुंची। वहां दूसरे स्कूलों के भी लड़के-लड़कियां जमा थे और सब लाइन बनाकर खड़े थे। आदि, अपने स्कूल का झंडा लेकर सबसे आगे खड़ा हुआ था। जैसे ही उसने मुझे देखा, वह दौड़कर मेरे पास आया और उत्साह से बोला, "सोना, कितना अच्छा हुआ हम लोगों ने आखिर यह प्रोग्राम कर ही डाला।"

"हां भई, बड़ी भारी बात है," मैं अपने स्कूल का झंडा लिये थी।

प्रबंधकर्ता, नेता ऊंचे स्थान पर खड़े होकर भाषण देने लगे। उन्होंने कहा, "मित्रों, प्यारे लड़के और लड़कियों! आज हम लोग यहां 'एच.आई.वी./ एड्स जागरूकता जुलूस' निकालने के लिये जमा हुए हैं। हम सब साथ मिलकर इस भयंकर दानव से लड़ेंगे। अपने-अपने झंडे उठाइये और मार्च शुरू करिये।"

भाषण के साथ उन्होंने सीटी बजाई। हमने अपने-अपने झंडे ऊंचे करके मार्च शुरू कर दिया। हम गलियों में और बड़ी-बड़ी सड़कों पर दो घंटे तक नारे लगाते हुए घूमे। हम लोगों का नारा था,

एच.आई.वी./एड्स को हम
रोकेंगे भई रोकेंगे।

सड़कों के दोनों तरफ भीड़ जमा थी। सब हम लोगों को सुन व देख रहे थे। जुलूस सफल हुआ।

जुलूस के बाद आदि मेरे पास आया और उसने कहा "सोना! हमको यह काम आगे बढ़ाना है। इस एच.आई.वी./एड्स से लड़ाई लड़नी है।"

"हां जरूर, चलो अगले दो दिनों में हम फिर मिलते हैं।"

आदि ने मुझसे हाथ मिलाया और हम फिर अपने-अपने स्कूल के लड़के-लड़कियों के साथ हो लिये। जुलूस के बाद सब अपने-अपने घर चले गये। जब मैं घर पहुंची तो अम्मू मेरा इंतजार कर रही थीं। मैंने उन्हें सब कुछ विस्तार से बताया। वह भी बड़ी प्रसन्न हुईं कि हमलोगों के प्रचार कार्य का शुभारंभ हुआ। उन्होंने मुझे गले लगा लिया और मेरा मन खुशी से भर उठा।

□□

आज, संसार में एच.आई.वी./एड्स सबसे भयंकर बीमारी है। एच.आई.वी. का वाइरस यदि किसी स्वस्थ मनुष्य के शरीर में पहुंच जाता है तो वह उसके शरीर की रोग-निरोधक क्षमता को नष्ट करके एड्स की बीमारी तक पहुंचा देता है और एड्स रोग मनुष्य को मृत्यु के मुंह में डाल देता है। इस रोग से पीड़ित 10 मनुष्यों में से 9 को यह भी नहीं पता है कि वे इस जानलेवा रोग का शिकार हो चुके हैं। भारत में आज एच.आई.वी. से पीड़ित 53 लाख रोगी हैं। इस रोग से पीड़ित रोगियों का दक्षिणी अफ्रीका के बाद दूसरा नंबर भारत का है। **मैं हूं सोना** किशोर वर्ग के बालिकाओं व बालकों के लिये, एच.आई.वी./एड्स जागरूकता हेतु एक उपन्यास है।

मनोरमा जफ़ा सुप्रसिद्ध लेखिका व बाल साहित्य विशेषज्ञ हैं। इन्होंने तीन दशक से बाल साहित्य लेखन कार्यशाला का संचालन कर भारतीय बाल साहित्य को नई दिशा दी है। वे हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में लिखती हैं। उनकी अनेक बाल पुस्तकों का विदेशी भाषाओं में भी अनुवाद हुआ है और पुरस्कृत भी हुई हैं। जफ़ाजी ने 1998 में दिल्ली में हुई इंटरनेशनल बोर्ड ऑन बुक्स फॉर यंग पीपल (ईबी) की 26वीं कांग्रेस की अध्यक्षता की, सन् 2000 में ईबी-असाही रीडिंग प्रमोशन एवार्ड की अध्यक्षता की और 1999-2000 में यूनेस्को प्राइज फॉर बुक्स ऑन टॉलरेंस की ज्यूरी की सदस्य रहीं। सन् 1981 से भारत के एसोसियेशन ऑफ राइटर्स एंड इलस्ट्रेटर्स फॉर चिल्ड्रेन (एविक) की सेक्रेटरी जनरल हैं और 1995 से खास किताब फाउंडेशन की प्रेसिडेंट हैं।

रु. 25.00 ISBN 978-81-237-5215-0

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया